E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com

website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

11 YEARS ANNIVERSARY

वर्ष -11 अंक -159 | प्रयागराज, मंगलवार 09 सितम्बर, 2025 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

रूस ने कैंसर ट्रीटमेंट के लिए नई वैक्सीन बनाई, प्री-क्लिनिकल ट्रायल्स में सौ फीसदी इफेक्टिव; हर मरीज के लिए पर्सनलाइज्ड डोज बनेगा

नयी दिल्ली। रूस ने कैंसर के इलाज में एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। देश की नई mRNA बेस्ड वैक्सीन 'एंटरोमिक्स' ने प्री-क्लिनिकल ट्रायल्स में 100फीसदी प्रभावशीलता और सुरक्षा दिखाई है। रूस के नेशनल मेडिकल रिसर्च रेडियोलॉजी सेंटर और रूसी एकेडमी ऑफ साइंस के एंगेलहार्ट इंस्टीट्यूट ऑफ मॉलिक्यूलर बायोलॉजी ने मिलकर इस वैक्सीन को विकसित किया है। इस वैक्सीन के क्लिनिकल ट्रायल्स की शुरुआत 48 वॉलंटियर्स के साथ की गई थी। इन ट्रायल्स की घोषणा सेंट पीटर्सबर्ग इंटरनेशनल इकोनॉमिक फोरम में 18 से 21 जून को की गई थी। वैक्सीन कैंसर को रोकने में सक्षम यह वैक्सीन न केवल कैंसर से लड़ने में सक्षम है, बल्कि भविष्य में कैंसर को रोकने की दिशा में भी एक बड़ा कदम हो सकती है। फेडरल मेडिकल एंड बायोलॉजिकल एजेंसी ने घोषणा की है कि यह वैक्सीन अब क्लिनिकल उपयोग के लिए तैयार है। एफएमबीए की प्रमुख वेरोनिका स्क्वॉर्त्सोवा के अनुसार, एंटरोमिक्स एक mRNA आधारित वैक्सीन है, जो हर मरीज के लिए उनकी व्यक्तिगत आरएनए के आधार पर खास रूप से तैयार की जाएगी। यह वैक्सीन शरीर के इम्यून सिस्टम को सुधारती है ताकि वह कैंसर कोशिकाओं को पहचान कर उन्हें खत्म कर सके। यह वैक्सीन ट्यूमर को छोटा करने और उनकी वृद्धि को रोकने में बेहद प्रभावी साबित हुई है। खास बात यह है कि इसे बार-बार इस्तेमाल करने पर भी कोई गंभीर साइड इफैक्ट नहीं देखे गए, जो इसे कीमोथेरेपी और रेडिएशन जैसे इलाजों से अलग बनाता है। पहली पर्सनलाइज्ड कैंसर वैक्सीन बन सकती है- एंटरोमिक्स का पहला संस्करण कोलोरेक्टल कैंसर (आंतों का कैंसर) के इलाज के लिए तैयार किया गया है। इसके अलावा, वैज्ञानिक ग्लियोब्लास्टोमा (मस्तिष्क का कैंसर) और मेलेनोमा (त्वचा का कैंसर) के लिए वैक्सीन के अन्य संस्करणों पर काम कर रहे हैं। अब जब क्लिनिकल ट्रायल्स सफलतापूर्वक पूरे हो चुके हैं, वैक्सीन को रेगुलेटरी मंजूरी का इंतजार है। अगर यह मंजूरी मिलती है, तो एंटरोमिक्स दुनिया की पहली पर्सनलाइज्ड mRNA कैंसर वैक्सीन बन सकती है। यह वैक्सीन न केवल रूस बल्कि पूरी दुनिया में हजारों लोगों की जान बचा सकती है और कैंसर के इलाज में एक नया युग शुरू कर सकती है।

पुतिन, जिनपिंग- ट्रंप के टैरिफ के खिलाफ ब्रिक्स की बड़ी बैठक, पीएम मोदी ने किया किनारा

नयी दिल्ली। बीजिंगः डोनाल्ड ट्रंप की टैरिफ के खिलाफ ब्रिक्स देशों की बहुत बड़ी बैठक हुई। चीन ने पुष्टि करते हुए कहा है कि राष्ट्रपति शी जिनपिंग आज होने वाली ब्रिक्स नेताओं की वर्चुअल बैठक में शामिल होंगे। जबकि रूस भी पहले ही पुष्टि कर चुका है कि राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन भी इस बैठक में शामिल होंगे। जबकि भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ब्रिक्स देशों की इस बैठक में शामिल नहीं हो रहे हैं। डोनाल्ड ट्रंप, अमेरिकी डॉलर के लिए ब्रिक्स को सबसे बड़ा खतरा मानते हैं, जबकि ब्रिक्स के कई सदस्य देश लगातार डॉलर के विकल्प में एक वैकल्पक करेंसी लाने की मांग करते रहे हैं, जबकि भारत ने आधिकारिक तौर पर इस मांग का कभी समर्थन नहीं किया है। ब्रिक्स देश के नेताओं की आज होने वाली बैठक का आयोजन ब्राजील ने किया है, जो इस साल ब्रिक्स की अध्यक्षता संभाल रहा है। ट्रंप ने ब्राजील पर भी 50 प्रतिशत का टैरिफ लगा रखा है, जो आज से लागू हो रहा है। इससे ब्राजील की अर्थव्यवस्था पर भारत की तरह की गहरा असर पड़ने की आशंका है। ब्राजील के राष्ट्रपति लूला दा सिल्वा ने अमेरिका के आगे घुटने टेकने से इनकार कर दिया है और उन्होंने ब्रिक्स देशों की बैठक बुलाई है। पिछले दिनों राष्ट्रपति लूला ने प्रधानमंत्री मोदी से बात भी की थी। चीन के विदेश मंत्रालय ने बयान जारी कर कहा है कि राष्ट्रपति शी इस मौके पर 'महत्वपूर्ण भाषण' देंगे। जबकि रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की शिरकत की पुष्टि पहले ही क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेस्कोव कर चुके हैं। इस बैठक में ब्रिक्स के मौजूदा और नए सदस्य देशों के बीच आर्थिक सहयोग बढ़ाने और व्यापार में डॉलर पर निर्भरता घटाने जैसे अहम मुद्दों पर विचार होगा। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस बैठक में शामिल नहीं होंगे। उनकी जगह भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर शामिल होंगे। यह फैसला ऐसे समय में आया है जब अमेरिका और भारत के रिश्ते लगातार बिगड़ते जा रहे हैं।हालांकि एक्सपर्ट्स का मानना है कि भारत अभी भी अमेरिका से संबंध पूरी तरह खराब नहीं करना चाहता है और भारत का ये फैसला एक समझदारी भरा कदम है। जहां एक ओर चीन और रूस अमेरिकी दबाव के खिलाफ मजबूती से खड़े हैं, वहीं भारत की रणनीति अभी भी संतुलन बनाए रखने की है। ट्रंप प्रशासन लगातार ब्रिक्स को एंटी अमेरिका बताते हुए ब्रिक्स देशों पर और ज्यादा टैरिफ लगाने की चेतावनी दे रहा है। दूसरी तरफ ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के मुताबिक, लूला ने यह समिट सिर्फ ट्रंप के टैरिफ पर चर्चा के लिए नहीं, बल्कि बहुपक्षवाद (मल्टीलैटेरेलिज्म) के समर्थन में बड़े उभरते देशों के नेताओं को एक मंच पर लाने के मकसद से बुलाई है।ब्रिक्स में भारत के अलावा चीन, रूस, दक्षिण अफ्रीका और ब्राजील मूल सदस्य हैं, जबकि अब ब्रिक्स में कई नये देशों को शामिल कर लिया गया है। ब्रिक्स, पिछले कुछ समय से एशिया और मध्य पूर्व के नए सदस्य देशों को जोड़कर अपनी ताकत बढ़ाने में लगा है। यह विस्तार को अमेरिका अपने वर्चस्व के लिए खतरा मानता है, क्योंकि ब्रिक्स देश वैकल्पिक भुगतान प्रणालियों और स्थानीय मुद्राओं में व्यापार को बढ़ावा देने की कोशिश कर रहे हैं। जबकि डोनाल्ड ट्रंप के टैरिफ ने ब्रिक्स देशों को अमेरिका के खिलाफ और ज्यादा मजबूत किया है और चीन इसका इस्तेमाल अपनी ताकत और वर्चस्व बनाने के लिए कर रहा है। इसीलिए एक्सपर्ट्स का मानना है कि प्रधानमंत्री मोदी ने खुद ब्रिक्स की इस बैठक में शामिल नहीं होकर समझदार डिप्लोमेसी दिखाई है, जिससे डोनाल्ड ट्रंप को संदेश भी मिले और चीन को अतिरिक्त बढ़त भी ना मिले।

एक्स ने लिखा-1965 की जंग पाक की स्ट्रैटजिक हार थी,पाकिस्तानी पीएम बोले थे- 60 साल पहले हमारी सेना ने दुश्मन का हमला नाकाम किया

इस्लामाबाद। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स के कम्युनिटी पोस्ट ने पाकिस्तानी पीएम शहबाज शरीफ के 1965 भारत-पाक जंग से जुड़े दावों की पोल खोल दी। शहबाज ने एक्स पर लिखा-'6 सितंबर हमारे देश के लिए वीरता और एकता का प्रतीक है। साठ साल पहले 1965 में हमारी सेना ने, जनता के साथ, दुश्मन के हमले को नाकाम किया और साबित किया कि पाकिस्तान एक मजबूत राष्ट्र है, जो अपनी रक्षा करने में पूरी तरह सक्षम है। 1965 की वह अटूट भावना आज भी जीवित है।' इस पर एक्स ने जवाब देते हुए लिखा- भारत और पाकिस्तान के बीच हुई 1965 का जंग पाकिस्तान के लिए एक स्ट्रैटजिक और पॉलिटिकल हार थी। पाकिस्तान की कश्मीर में विद्रोह भड़काने की रणनीति को भारत ने विफल किया और पाक को अपनी रणनीति बदलने पर मजबूर होना पड़ा था।पाकिस्तानी पीएम ने ऑपरेशन सिंदूर के खिलाफ हाल संघर्ष का जिक्र करते हुए कहा कि हमारी सेना और जनता एक मजबूत दीवार की तरह एकजुट होकर बाहरी हमलों के खिलाफ खड़े हुए हैं, हमने हर बार दुश्मन के घमंड को कुचला है। शहबाज भारत पर उकसाने का आरोप लगाते हुए लिखा- पाकिस्तान शांति को बढ़ावा देता है। फिर भी, हमें भारत की लगातार उकसावे और बदलते क्षेत्रीय माहौल की हकीकत से अनजान नहीं रहना चाहिए। हम अपनी रक्षा क्षमताओं को मजबूत और आधुनिक बनाना जारी रखेंगे। हमें पता है आतंकवाद और विदेशी गुर्गों से कैसे निपटना है। उन्होंने भारत ऑपरेटेड जम्मू और कश्मीर को लेकर कहा कि वहां के लोग लंबे समय से आतंकवाद को सहन कर रहे हैं। उनकी आजादी की लड़ाई को बलपूर्वक दबाया नहीं जा सकता।

20 साल सत्ता, 11 साल केंद्र साझेदार, बिहार पिछड़ा क्यों? तेजस्वी बोले- एनडीए सरकार जवाब दे, नहीं तो युवा चुनाव में करारा जवाब देगा

पटना। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने एनडीए सरकार पर बड़ा हमला बोला है। उन्होंने एक्स पर पोस्ट कर लिखा कि, बिहार के 8 करोड़ युवा 20 सालों से सत्ता में बैठे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और 11 वर्षों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से जवाब मांग रहे हैं। तेजस्वी ने कहा कि, लंबे शासन के बावजूद बिहार बेरोजगारी, पलायन और गरीबी का मुख्य केंद्र बना हुआ है। तेजस्वी ने लिखा कि, तकनीक, उदारीकरण और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के दौर में भी बिहार की प्रति व्यक्ति आय कई अफ्रीकी देशों से कम है। यह केवल उनका आरोप नहीं, बल्कि साल दर साल नीति आयोग की रिपोर्ट भी यही हकीकत सामने रखती है। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि, दो दशक तक सरकार चलाने के बाद भी आज बिहार विकास और रोजगार से वंचित क्यों है, इसका जवाब एनडीए को देना ही होगा। नेता प्रतिपक्ष ने बिहार के करोड़ युवा की ओर से वर्षों के मुख्यमंत्री से बड़े सवाल पूछे हैं। इनमें मुख्य रूप से यह शामिल हैं कि- बिहार में केला, मखाना, गन्ना, लीची और आलू जैसी फसलों की भरपूर पैदावार होने के बावजूद खाद्य प्रसंस्करण उद्योग क्यों नहीं लगाए गए? आईटी कंपनियां और आईटी पार्क बिहार में क्यों नहीं आए? मछली उत्पादन संबंधित तमाम संसाधन होने के बावजूद मछुआरों की आमदनी और उत्पादन क्यों नहीं बढ़ी?डेयरी उद्योग को बढ़ावा क्यों नहीं मिला? इंडस्ट्री स्पेसिफिक क्लस्टर या उद्योग-विशिष्ट क्लस्टर क्यों नहीं लगाए जा सकते? हथकरघा, बुनकर और लघु उद्योग को प्रोत्साहन क्यों नहीं दिया गया? बिहार को पर्यटन केंद्र के रूप में क्यों नहीं विकसित किया गया? बिहार में अप्रत्याशित दर से पलायन क्यों बढ़ रहा है? इतने साल में बिहार से कितना पलायन हुआ? नियुक्ति और भर्ती प्रक्रिया पारदर्शी व नियमित क्यों नहीं की गई? कितनी चीनी मिल, जूट मिल और पेपर मिल बंद हुईं और उससे रोजगार और राजस्व की कितनी हानि हुई? शिक्षा और स्वास्थ्य पर खर्च होने वाला हजारों करोड़ रुपये बिहार से बाहर क्यों गया? बिहार के मानव संसाधन का कुल कितने प्रतिशत बिहार में और कितने प्रतिशत दूसरे प्रदेशों में कार्यरत है? तेजस्वी ने कहा कि, नीतीश कुमार और नरेंद्र मोदी युवाओं के इन सवालों से बच नहीं सकते। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर सरकार जवाब देने से कतराती है, तो इस बार चुनाव में युवा ही करारा जवाब देंगे

एक्स का दावा-भारत जरूरत के लिए रूसी तेल खरीदता है,अमेरिका भी रूस से यूरेनियम लेता है और भारत पर प्रतिबंध लगाता है, यह डबल स्टैंडर्ड

वॉशिंगटन डीसी। मस्क के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स के फैक्ट चेक फीचर ने ट्रम्प के सलाहकार पीटर नवारो के भारत के रूसी तेल खरीद से जुड़े दावों को गलत बताया है। एक्स ने एक नोट में लिखा- 'भारत रूस से तेल अपनी ऊर्जा सुरक्षा के लिए खरीदता है, न कि सिर्फ मुनाफे के लिए। यह खरीद अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों का उल्लंघन नहीं करती। अमेरिका खुद रूस से यूरेनियम और दूसरी चीजें खरीदता है, भारत पर प्रतिबंध अमेरिकी प्रशासन का दोहरा रवैया दिखाता है।' दरअसल, पीटर नवारो ने भारत पर रूस से तेल खरीदकर मुनाफा कमाने और यूक्रेन युद्ध को बढ़ावा देने का गंभीर आरोप लगाया था। पीटर नवारो ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, 'भारत के ऊंचे टैरिफ अमेरिकी नौकरियों को नुकसान पहुंचाते हैं। भारत रूस से तेल सिर्फ मुनाफे के लिए खरीदता है, जिससे रूस की युद्ध मशीन को मदद मिलती है। इससे यूक्रेन और रूस के लोग मर रहे हैं और अमेरिकी करदाताओं का पैसा बर्बाद हो रहा है। भारत सच को स्वीकार नहीं कर सकता।' नवारो के इस पोस्ट की एक्स के फैक्ट चेक फीचर ने तुरंत जांच की । इसके बाद एक्स ने एक कम्युनिटी नोट में मीडिया रिपोर्टों का हवाला देते हुए नवारो के दावों को गलत बताया। नवारो एक्स की इस जांच से भड़क गए। उन्होंने मस्क पर निशाना साधते हुए लिखा, 'मस्क पोस्ट में प्रचार को बढ़ावा दे रहे हैं। यह नोट पूरी तरह बकवास है। भारत रूस से तेल सिर्फ मुनाफे के लिए खरीदता है।' उन्होंने कहा- रूस के यूक्रेन पर हमले से पहले भारत ऐसा नहीं करता था। भारत की सरकारी मशीनरी झूठ फैला रही है। भारत यूक्रेन में लोगों की मौत रोके और अमेरिकी नौकरियां छीनना बंद करें। एक्स ने नवारो की इस पोस्ट की भी जांच की और लिखा, 'भारत का रूस से तेल खरीदना उसका खुद का फैसला है और यह अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन नहीं करता।' इससे पहले नवारो ने यूक्रेन जंग को 'मोदी वॉर' बताया था। नवारो ने 27 अगस्त को ब्लूमबर्ग टीवी को दिए इंटरव्यू में भारत पर जंग को बढ़ावा देने और दोहरा खेल खेलने का आरोप लगाया था। नवारो ने कहा था कि भारत रूस से सस्ता तेल खरीदकर उसे रिफाइन करता है और ऊंची कीमत पर बेचता है। इससे रूस को जंग के लिए पैसा मिलता है और वो यूक्रेन पर हमला करता है। नवारो ने चेतावनी देते हुए कहा था कि रूस और चीन के साथ भारत के बढ़ते संबंध दुनिया के लिए खतरा बन सकते हैं। उन्होंने कहा- भारत तुम तानाशाहों के साथ मिल रहे हो। चीन ने अक्साई चिन और तुम्हारे कई इलाके पर कब्जा कर लिया। और रूस? जाने भी दो। ये आपके दोस्त नहीं हैं। नवारो ने कहा था, 'भारतीय नेता हमारी आंखों में आंखें डालकर कहते हैं कि हम रूसी तेल खरीदना बंद नहीं करेंगे। अब इसका क्या मतलब है?' उन्होंने रूस पर भारत को बेचे गए तेल के बदले मिलने वाले पैसों से युद्ध मशीनरी को चलाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा- रूस, यूक्रेन पर हमले कर वहां के लोगों को मारता है। फिर यूक्रेन हमारे और यूरोप के पास आकर कहता है कि हमें और पैसा दो। इस तरह अमेरिकी टैक्सपेयर्स को नुकसान होता है। नवारो ने अमेरिकी सामानों पर लगने वाले भारतीय टैरिफ की भी आलोचना की। उन्होंने कहा था- 'भारत की नीतियों से अमेरिका में सभी को नुकसान हो रहा है। अमेरिकी जनता, कारोबार, कामगार सब हार रहे हैं, क्योंकि भारत ने बहुत ऊंचे टैरिफ लगा रखे हैं। इसकी वजह से अमेरिका में नौकरियां जा रही हैं, कारखाने बंद हो रहे हैं, लोगों की आमदनी और बढ़ी हुई मजदूरी भी खत्म हो रही है। अमेरिकी टैक्सपेयर्स को भी घाटा उठाना पड़ रहा है, क्योंकि उनका पैसा आखिरकार मोदी की जंग में इस्तेमाल हो रहा है।' नवारो ने 2 सितंबर को भारतीय ब्राह्मणों पर रूसी तेल खरीद कर मुनाफाखोरी का आरोप लगाया था। उन्होंने कहा था कि भारत के ब्राह्मण रूसी तेल से मुनाफा कमा रहे हैं, जिसकी कीमत पूरा भारत चुका रहा।

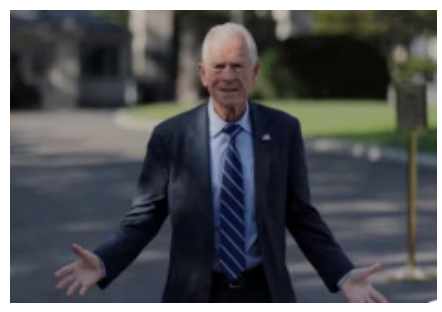

यूपी के युवक ने चुराए लालकिले से सोने के कलश,पुजारी बनकर कलश लेकर भागा; दिल्ली पुलिस ने हापुड़ से पकड़ा

नयी दिल्ली। दिल्ली के लाल किला परिसर से डेढ़ करोड़ रुपए के दो स्वर्ण कलश चुराने वाला आरोपी यूपी के हापुड़ से गिरफ्तार हुआ है। रविवार रात 2 बजे दिल्ली पुलिस की टीम ने आरोपी के घर पर दबिश दी और उसे पकड़कर दिल्ली ले गई। आरोपी की पहचान असौड़ा गांव निवासी भूषण वर्मा के रूप में हुई है। दिल्ली पुलिस के मुताबिक, भूषण कलश चुराने का एक्सपर्ट है। सालभर पहले उसने दिल्ली के लाल मंदिर और फिर अशोक विहार के मंदिर से कलश चुराया था। उस पर 5 मुकदमे दर्ज हैं। भूषण जाति से सुनार है और गाड़ी चलाने का काम करता है। उसके घर से एक कलश जैसी वस्तु की रिकवरी हुई है। परिवार में भूषण के अलावा उसकी पत्नी, दो बेटियां और एक बेटा है। पुलिस के मुताबिक, भूषण ने पूछताछ में कई अहम बातें बताई हैं। जल्द ही मामले का खुलासा कर दिया जाएगा। 3 सितंबर को भूषण वर्मा जैन समारोह में जैन मुनि के भेष में घुसा था। स्वर्ण कलश वाले बैग लेकर फरार हो गया। इसका सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया था।

नगर निगम की कूड़ागाड़ी से बैंककर्मी की मौत,पत्नी-बेटी को स्कूल छोड़कर लौट रहे थे

प्रयागराज। करेली थाना क्षेत्र के 60 फीट रोड निवासी 38 वर्षीय अबरार अहमद की नरूल्ला रोड पर दर्दनाक मौत हो गई। हादसे के बाद मृतक के घर में कोहराम मच गया है।जानकारी के अनुसार, अबरार अहमद मूल रूप से शाहजहांपुर में बैंककर्मी थे। कुछ माह पहले उनका तबादला प्रयागराज हुआ था। वे अपने परिवार के साथ करेली इलाके में रह रहे थे। सोमवार सुबह करीब 6:30 बजे अबरार अपनी पत्नी और दो वर्षीय बेटी को बाइक से छोड़कर घर लौट रहे थे। उनकी पत्नी प्रतापगढ़ के एक स्कूल में अध्यापिका हैं। इसी दौरान पीछे से आ रही नगर निगम की कूड़ा गाड़ी ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि अबरार सड़क पर गिर गए और गाड़ी का पहिया सीधे उनके सिर पर चढ़ गया। सिर बुरी तरह क्षतिग्रस्त होने के कारण उन्होंने मौके पर ही दम तोड़ दिया।

प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि हादसा तेज रफ्तार और लापरवाही से गाड़ी चलाने की वजह से हुआ। हादसे के बाद आसपास अफरा-तफरी का माहौल बन गया। लोगों ने नगर निगम के चालक को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह गाड़ी छोड़कर मौके से फरार हो गया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

फिर सैलाब बनकर लौटी बाढ़,दो महीने में 5वीं बार-लोगो का जीना मुहाल

प्रयागराज। एक बार फिर बाढ़ की चपेट में आ गया है। बीते दो महीनों में यह पांचवीं बार है जब गंगा और यमुना नदियों के जलस्तर में तेजी से बढ़ोतरी हुई है, जिससे शहर के निचले इलाकों में तबाही मच गई है। लगातार हो रही बारिश और नदियों के उफान से आधा शहर फिर से संकट में है। पिछले 10 दिनों के भीतर एक बार फिर पानी ने लोगों को अपने घर छोड़ने पर मजबूर कर दिया है। लोग थक चुके हैं बार-बार घर का सामान समेटना, बच्चों और बुजुर्गों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाना अब एक बड़ी चुनौती बन चुका है। कई लोगों को लगातार राहत शिविरों की शरण लेनी पड़ रही है।गंगा और यमुना दोनों नदियों का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। निचले इलाकों में पानी घुसने लगा है। छोटा बघाड़ा, राजापुर, गोविंदपुर, कैलाशपुरी, तेलियरगंज, और बेली गांव जैसे इलाकों में हजारों घर जलमग्न हो चुके हैं। नागवासुकी मंदिर के पास के रिहायशी क्षेत्रों में भी पानी घुस चुका है, जिससे लोग अपने घरों में कैद हो गए हैं।प्रयागराज में बार-बार आने वाली बाढ़ से सबसे ज्यादा परेशानी यहां पढ़ाई के लिए किराये पर रहने वाले छात्रों को हो रही है। छोटा बघाड़ा, सलोरी, गोविंदपुर और राजापुर जैसे इलाकों में रह रहे छात्र बार-बार कमरा खाली करने, घर लौटने और फिर वापस आने की समस्या से जूझ रहे हैं, जिससे उनकी पढ़ाई और परीक्षा की तैयारी बुरी तरह प्रभावित हो रही है।

सो रहे बेटे को पिता ने कुल्हाड़ी से काट डाला,पत्नी को जगाकर कहा- हमने मार दिया,जमीन बेचने से मना कर रहा था बेटा

प्रयागराज। पिता ने अपने बड़े बेटे की हत्या कर दी। 55 साल के पिता ने सोते समय कुल्हाड़ी से बेटे की गर्दन काट दी। पिता ने एक जमीन बेच दी थी और बड़ा बेटा उसका विरोध कर रहा था। हत्या के कुछ घंटे पहले रात में ही दोनों के बीच झगड़ा भी हुआ था। बहन ने बताया- ' भाई को काटने के बाद पापा ने मम्मी को जगाकर कहा- हमने मार दिया, अब हमारा काम हो गया। तब मम्मी उठकर गईं देखा, तो भईया मरे पड़े थे। फिर उनके चीखने पर हम उठे और आस-पड़ोस के लोग आ गए।' परिवारवालों ने आरोपी को दबोच लिया। पुलिस बुलाकर हवाले कर दिया। घटना रविवार देर रात गंगापार इलाके के अहीबीपुर की है। पुलिस ने कुल्हाड़ी को भी कब्जे में ले लिया है। बताया जा रहा है कि आरोपी पिता शराब के नशे में था।प्रयागराज के गंगापार के सोरांव थाना क्षेत्र में अहीबीपुर गांव है। यहां के निवासी लालजी यादव के पांच बच्चे हैं। सबसे बड़ी बेटी कंचन है। कंचन की शादी हो चुकी है। दूसरे नंबर पर विनोद (25) था। विनोद अविवाहित था। इसके बाद दिनेश (23), मुनेश (20) और सबसे छोटी बेटी आंचल (18) है। लालजी यादव, खेती-किसानी के साथ ही दूध का कारोबार भी करता है। वह रोज शराब पीता है।कुछ दिनों पहले ही लालजी ने अपनी डेढ़ बिस्वा जमीन बेच दी थी। बड़ा बेटा विनोद इसके खिलाफ था।

रविवार की रात लालजी शराब के नशे में घर पहुंचा तो बड़े बेटे विनोद ने जमीन बेचे जाने का विरोध किया। दोनों के बीच कहासुनी हुई। गुस्साए लालजी लाठी लेकर विनोद को मारने के लिए दौड़े। घर में काफी देर तक हंगामा चलता रहा। घरवालों ने किसी तरह बीच-बचाव किया, पिता को समझाया तो वह शांत हुए। छोटी बहन अर्चना ने बताया- मेरे पापा नशे में थे और भाई भी थोड़ा पिए थे।

हम और मम्मी ने पापा-भाई को खाना खिलाया। घर के सभी लोग खाना खा लिए तो मम्मी-पापा सब लोग अंदर लेट गए और भईया बाहर चारपाई पर सो गए।

हाईकोर्ट के नए न्यायमूर्तियों ने ली शपथ,अमिताभ राय और राजीव लोचन ने ली शपथ

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट में नव?नियुक्त न्यायमूर्ति अमिताभ राय और न्यायमूर्ति राजीव लोचन शुक्ल ने सोमवार को शपथ ली। शपथ समारोह मुख्य न्यायाधीश के न्याय कक्ष में हुआ। समारोह में सभी न्यायमूर्तिगण, न्यायिक अधिकारी,परिवारीजन व अधिवक्ता मौजूद रहे। समारोह का सर्किट टीवी के जरिए मार्बल हाल में सजीव प्रसारण किया गया। शपथ लेने के बाद 160 जजों वाले इलाहाबाद हाईकोर्ट में चीफ जस्टिस के अलावा न्यायाधीशों की कुल संख्या 86 हो गई। अधिवक्ता अमिताभ राय व अधिवक्ता राजीव लोचन शुक्ल के नामों की सिफारिश गत 25 मार्च सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने की थी।

युवा पीढ़ी ही राष्ट्र की धरोहर, भारतीय संस्कृति से जुड़कर पाएंगे सच्ची शक्तिःडॉ. श्रीप्रकाश मिश्र

युवाओं की चेतना ही भारत के भविष्य की सबसे बड़ी पूंजी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। मातृभूमि सेवा मिशन, धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र (हरियाणा) के संस्थापक एवं करोड़ों युवाओं के प्रेरणा स्रोत डॉ. श्रीप्रकाश मिश्र ने कहा कि राष्ट्र की सच्ची शक्ति उसकी युवा पीढ़ी में निहित है। उन्होंने आह्वान किया कि युवा केवल आधुनिकता और रोजगार तक सीमित न रहें, बल्कि राष्ट्रधर्म और संस्कृति की मुख्य धारा से जुड़कर सेवा, त्याग और लोककल्याण के मार्ग पर अग्रसर हों। डॉ. मिश्र ने कहा कि 'युवा ही राष्ट्र के कर्णधार हैं। आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि वे अपने भीतर की ऊर्जा को पहचानें और उसे राष्ट्रहित में समर्पित करें। भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्यों से जुड़े बिना उनका व्यक्तित्व अधूरा है। यही मूल्य उन्हें स्थायी पहचान और आंतरिक शक्ति प्रदान करते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि युवा समाजहित की धारा में प्रवाहित हों, तो भारत दुनिया के लिए एक आदर्श बन सकता है। मातृभूमि सेवा मिशन की साधना और यात्राएं इसी चेतना को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प हैं।

पितृ पक्ष पर विशेष-श्राद्ध की वस्तुएं पितरों को कैसे मिलती हैं? पढ़ें और समझें

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। भादों माह पूर्णिमा के शुक्ल पक्ष में पितृ पक्ष शुरु हो रहा है। सनातन धर्म में इन दिनों पितरों को प्रसन्न करने के लिए तर्पण और श्राद्ध किया जाता है। पवित्रता से ही वे प्रसन्न होते हैं और वर देते हैं। जैसे मनुष्यों का आहार अन्न है, पशुओं का आहार तृण है, वैसे ही पितरों का आहार अन्न का सार-तत्व (गंध और रस) है। अतः वे अन्न व जल का सारतत्व ही ग्रहण करते हैं। शेष जो स्थूल वस्तु है, वह यहीं रह जाती है। नाम व गोत्र के उच्चारण के साथ जो अन्न-जल आदि पितरों को दिया जाता है, विश्वेदेव एवं अग्निष्वात (दिव्य पितर) हव्य-कव्य को पितरों तक पहुंचा देते हैं। यदि पितर देवयोनि को प्राप्त हुए हैं तो यहां दिया गया अन्न उन्हें 'अमृत' होकर प्राप्त होता है। यदि गन्धर्व बन गए हैं तो वह अन्न उन्हें भोगों के रूप में प्राप्त होता है। यदि पशुयोनि में हैं तो वह अन्न तृण के रूप में प्राप्त होता है। नागयोनि में वायुरूप से, यक्षयोनि में पानरूप से, राक्षसयोनि में आमिषरूप में, दानवयोनि में मांसरूप में, प्रेतयोनि में रुधिररूप में और मनुष्य बन जाने पर भोगने योग्य तृप्तिकारक पदार्थों के रूप में प्राप्त होता हैं। जिस प्रकार बछड़ा झुण्ड में अपनी मां को ढूंढ़ ही लेता है, उसी प्रकार नाम, गोत्र, हृदय की भक्ति एवं देश-काल आदि के सहारे दिए गए पदार्थों को मन्त्र पितरों के पास पहुंचा देते हैं। जीव चाहें सैकड़ों योनियों को भी पार क्यों न कर गया हो, तृप्ति तो उसके पास पहुंच ही जाती है। श्राद्ध में आमन्त्रित ब्राह्मण पितरों के प्रतिनिधिरूप होते हैं। एक बार पुष्कर में श्रीरामजी अपने पिता दशरथजी का श्राद्ध कर रहे थे। रामजी जब ब्राह्मणों को भोजन कराने लगे तो सीताजी वृक्ष की ओट में खड़ी हो गयीं। ब्राह्मण-भोजन के बाद रामजी ने जब सीताजी से इसका कारण पूछा तो वे बोलीं- 'मैंने जो आश्चर्य देखा, उसे आपको बताती हूँ। आपने जब नाम-गोत्र का उच्चारणकर अपने पिता-दादा आदि का आवाहन किया तो वे यहां ब्राह्मणों के शरीर में छायारूप में सटकर उपस्थित थे। ब्राह्मणों के शरीर में मुझे अपने श्वसुर आदि पितृगण दिखाई दिए फिर भला मैं मर्यादा का उल्लंघनकर वहां कैसे खड़ी रहती; इसलिए मैं ओट में हो गई।' तुलसी से पिण्डार्चन किए जाने पर पितरगण प्रलयपर्यन्त तृप्त रहते हैं। तुलसी की गंध से प्रसन्न होकर गरुड़ पर आरुढ़ होकर विष्णुलोक चले जाते हैं। श्राद्ध से बढ़कर और कोई कल्याणकारी कार्य नहीं है और वंशवृद्धि के लिए तो पितरों की आराधना ही एकमात्र उपाय है- आयुः पुत्रान् यशः स्वर्ग कीर्तिं पुष्टिं बलं श्रियम्। पशुन् सौख्यं धनं धान्यं प्राप्नुयात् पितृपूजनात्।। (यमस्मृति, श्राद्धप्रकाश) यमराजजी का कहना है कि-श्राद्ध-कर्म से मनुष्य की आयु बढ़ती है।पितरगण मनुष्य को पुत्र प्रदान कर वंश का विस्तार करते हैं।परिवार में धन-धान्य का अंबार लगा देते हैं। श्राद्ध-कर्म मनुष्य के शरीर में बल-पौरुष की वृद्धि करता है और यश व पुष्टि प्रदान करता है। पितरगण स्वास्थ्य, बल, श्रेय, धन-धान्य आदि सभी सुख, स्वर्ग व मोक्ष प्रदान करते हैं। श्रद्धापूर्वक श्राद्ध करने वाले के परिवार में कोई क्लेश नहीं रहता वरन् वह समस्त जगत को तृप्त कर देता है। शास्त्रों में श्राद्ध न करने से होने वाली हानियों का जो वर्णन किया गया है, उन्हें जानकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। शास्त्रों में मृत व्यक्ति के दाहकर्म के पहले ही पिण्ड-पानी के रूप में खाने-पीने की व्यवस्था कर दी गयी है। यह तो मृत व्यक्ति की इस महायात्रा में रास्ते के भोजन-पानी की बात हुई। परलोक पहुंचने पर भी उसके लिए वहां न अन्न होता है और न पानी। यदि सगे-सम्बन्धी भी अन्न-जल न दें तो भूख-प्यास से उसे वहां बहुत ही भयंकर दुःख होता है। आश्विनमास के पितृपक्ष में पितरों को यह आशा रहती है कि हमारे पुत्र-पौत्रादि हमें अन्न-जल से संतुष्ट करेंगे; यही आशा लेकर वे पितृलोक से पृथ्वीलोकपर आते हैं लेकिन जो लोग-पितर हैं ही कहां?-यह मानकर उचित तिथि पर जल व शाक से भी श्राद्ध नहीं करते हैं, उनके पितर दुःखी व निराश होकर शाप देकर अपने लोक वापिस लौट जाते हैं और बाध्य होकर श्राद्ध न करने वाले अपने सगे-सम्बधियों का रक्त चूसने लगते हैं। फिर इस अभिशप्त परिवार को जीवन भर कष्ट-ही-कष्ट झेलना पड़ता है और मरने के बाद नरक में जाना पड़ता है। मार्कण्डेयपुराण में बताया गया है कि जिस कुल में श्राद्ध नहीं होता है, उसमें दीर्घायु, नीरोग व वीर संतान जन्म नहीं लेती है और परिवार में कभी मंगल नहीं होता है। ब्रह्मपुराण में बताया गया है कि धन के अभाव में श्रद्धापूर्वक केवल शाक से भी श्राद्ध किया जा सकता है। यदि इतना भी न हो तो अपनी दोनों भुजाओं को उठाकर कह देना चाहिए कि मेरे पास श्राद्ध के लिए न धन है और न ही कोई वस्तु। अतः मैं अपने पितरों को प्रणाम करता हूँ; वे मेरी भक्ति से ही तृप्त हों। पितृपक्ष पितरों के लिए पर्व का समय है, अतः प्रत्येक गृहस्थ को अपनी शक्ति व सामर्थ्य के अनुसार पितरों के निमित्त श्राद्ध व तर्पण अवश्य करना चाहिए।

क्ष्श्रद्धयाऽदीयतेऽत्यत्तत्श्राद्धम्।' 'श्राद्ध' का अर्थ है श्रद्धा से जो कुछ दिया जाए। पितरों के लिए श्रद्धापूर्वक किए गए पदार्थ-दान (हविष्यान्न, तिल, कुश, जल के दान) का नाम ही श्राद्ध है। श्राद्धकर्म पितृऋण चुकाने का सरल व सहज मार्ग है। पितृपक्ष में श्राद्ध करने से पितरगण वर्षभर प्रसन्न रहते हैं। श्राद्ध-कर्म से व्यक्ति केवल अपने सगे-सम्बन्धियों को ही नहीं, बल्कि ब्रह्मा से लेकर तृणपर्यन्त सभी प्राणियों व जगत को तृप्त करता है। पितरों की पूजा को साक्षात् विष्णुपूजा ही माना गया है। प्रायः कुछ लोग यह शंका करते हैं कि श्राद्ध में समर्पित की गईं वस्तुएं पितरों को कैसे मिलती है? कर्मों की भिन्नता के कारण मरने के बाद गतियां भी भिन्न-भिन्न होती हैं-कोई देवता, कोई पितर, कोई प्रेत, कोई हाथी, कोई चींटी, कोई वृक्ष और कोई तृण बन जाता है। तब मन में यह शंका होती है कि छोटे से पिण्ड से अलग-अलग योनियों में पितरों को तृप्ति कैसे मिलती है? इस शंका का स्कन्दपुराण में बहुत सुन्दर समाधान मिलता है। एक बार राजा करन्धम ने महायोगी महाकाल से पूछा- 'मनुष्यों द्वारा पितरों के लिए जो तर्पण या पिण्डदान किया जाता है तो वह जल, पिण्ड आदि तो यहीं रह जाता है फिर पितरों के पास वे वस्तुएं कैसे पहुंचती हैं और कैसे पितरों को तृप्ति होती है?' भगवान महाकाल ने बताया कि-विश्वनियन्ता ने ऐसी व्यवस्था कर रखी है कि श्राद्ध की सामग्री उनके अनुरुप होकर पितरों के पास पहुंचती है। इस व्यवस्था के अधिपति हैं अग्निष्वात आदि। पितरों और देवताओं की योनि ऐसी है कि वे दूर से कही हुई बातें सुन लेते हैं, दूर की पूजा ग्रहण कर लेते हैं और दूर से कही गयी स्तुतियों से ही प्रसन्न हो जाते हैं। वे भूत, भविष्य व वर्तमान सब जानते हैं और सभी जगह पहुंच सकते हैं। पांच तन्मात्राएं, मन, बुद्धि, अहंकार और प्रकृति-इन नौ तत्वों से उनका शरीर बना होता है और इसके भीतर दसवें तत्व के रूप में साक्षात् भगवान पुरुषोत्तम उसमें निवास करते हैं। इसलिए देवता और पितर गन्ध व रसतत्व से तृप्त होते हैं। शब्दतत्व से रहते हैं और स्पर्शतत्व को ग्रहण करते हैं।

जनपद में दोनों पालियों में पीईटी-2025 की परीक्षा सकुशल सम्पन्न,पंजीकृत 19776 के सापेक्ष 16090 अभ्यर्थी उपस्थित रहें व 3686 अभ्यर्थी अनुपस्थित रहें।

दोनों दिन की चारों पालियों में कुल पंजीकृत 39552 के सापेक्ष 32050 अभ्यर्थी उपस्थित रहें व 7502 अभ्यर्थी अनुपस्थित रहें।

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ ने बताया कि 30प्र0 अधीनस्थ सेवा चयन आयोग द्वारा आयोजित प्रारंभिक अर्हता परीक्षा (पीईटी)-2025 हेतु जनपद में बनाए गए 23 परीक्षा केंद्रों पर दोनों पालियों में परीक्षा सकुशल सम्पन्न हुई। उन्होंने बताया कि यूपी पेट 2025 की प्रथम पाली में पंजीकृत-9888 के सापेक्ष 7989 अभ्यर्थी उपस्थित रहें तथा 1899 अभ्यर्थी अनुपस्थित रहें। द्वितीय पाली में पंजीकृत 9888 के सापेक्ष 8101 अभ्यर्थी उपस्थित रहे व 1787 अभ्यर्थी अनुपस्थित रहें, इस प्रकार आज की आयोजित दोनों पालियों की परीक्षा में पंजीकृत 19776 के सापेक्ष 16090 अभ्यर्थी उपस्थित रहें व 3686 अभ्यर्थी अनुपस्थित रहें। दोनों दिन की चारों पालियों में कुल पंजीकृत 39552 के सापेक्ष 32050 अभ्यर्थी उपस्थित रहें व 7502 अभ्यर्थी अनुपस्थित रहें। उन्होंने बताया कि परीक्षा को सकुशल सम्पन्न कराए जाने हेतु कलेक्ट्रेट में कंट्रोल रूम स्थापित किया गया था, कंट्रोल रूम से जनपद के सभी परीक्षा केंद्रों की सीसीटीवी कैमरे द्वारा निगरानी की जा रही थी। कंट्रोल रूम में शिफ्टवार कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई थी तथा उनका पर्यवेक्षण करने के लिए वरिष्ठ अधिकारियों की भी ड्यूटी लगाई गई थी। उन्होंने बताया कि पेट के एग्जाम के दूसरे दिन भी समस्त संबंधित अधिकारी केंद्रों का निरीक्षण कर रहे थे। परीक्षा देने आने वाले अभ्यर्थियों को ट्रैफ़िक, बस , ईरिक्शा आदि की समस्या से ना गुजरना पड़े, इसके लिए व्यापक व्यवस्था की गई थी। जनपद में दोनों दिन की चारों पालियों की परीक्षा सकुशल सम्पन्न हुई। अपर जिलाधिकारी ने आयोजित परीक्षा के दौरान बनाए गए विभिन्न परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा भी लिया। निरीक्षण के समय जिला विद्यालय निरीक्षक संजीव कुमार सिंह, सीओ सिटी अमित सिंह सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहें।

रायबरेली की जिलाधिकारी हर्षिता माथुर ने दिखाई दरियादिली, गरीब युवक को इलाज के लिए एम्स में कराया भर्ती।

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। बीते सोमवार को रायबरेली की जिलाधिकारी हर्षिता माथुर ने एक गरीब परिवार की मदद करके अपनी संवेदनशीलता और दरियादिली का परिचय दिया है। डीह थाना क्षेत्र के निगोही गांव का रहने वाला 19 वर्षीय योगेश, एक गंभीर बीमारी से जूझ रहा था। उसका परिवार इतना गरीब है कि इलाज के लिए उन्होंने अपनी ज़मीन तक बेच दी थी, लेकिन फिर भी पैसों की कमी के कारण इलाज नहीं हो पा रहा था। योगेश की माँ, सुमन, अपने बेटे की हालत देखकर बहुत परेशान थी और उसकी जिंदगी बचाने के लिए हर दरवाजा खटखटा रही थी।योगेश के पिता, शिवप्रकाश, एक सिलाई का काम करने वाले व्यक्ति हैं, लेकिन पिछले चार महीनों से उनका काम भी बंद है। परिवार में दो बेटे हैं - 22 वर्षीय राहुल और 19 वर्षीय योगेश। योगेश की बीमारी ने परिवार की आर्थिक स्थिति पूरी तरह से खराब कर दी थी, और वे बेटे को बचाने की उम्मीद छोड़ चुके थे। ?जैसे ही जिलाधिकारी हर्षिता माथुर को योगेश और उसके परिवार की दयनीय स्थिति के बारे में जानकारी मिली, उन्होंने तुरंत कार्रवाई की। उन्होंने बिना समय गंवाए योगेश को रायबरेली के जिला अस्पताल से अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में भर्ती कराया।

उनकी त्वरित पहल से योगेश का इलाज तुरंत शुरू हो सका। ?यह घटना दर्शाती है कि समाज में अभी भी ऐसे लोग मौजूद हैं जो दूसरों के दर्द को समझते हैं और उनकी मदद के लिए आगे आते हैं।

जिलाधिकारी हर्षिता माथुर का यह कदम न केवल एक गरीब युवक की जान बचाने में सहायक हुआ है, बल्कि इसने यह भी साबित किया है कि अगर प्रशासनिक अधिकारी संवेदनशीलता के साथ काम करें तो बहुत से लोगों की जिंदगी बचाई जा सकती है। योगेश के परिवार और गांव के लोग, विशेषकर भगवान दीन यादव, ने जिलाधिकारी का आभार व्यक्त किया है। उनकी यह पहल समाज के लिए एक प्रेरणा है।

डीएम ने राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ ईवीएम/वीवीपैट वेयर हाउस का किया निरीक्षण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। मुख्य निर्वाचन अधिकारी उ0प्र0 लखनऊ के निर्देशानुसार जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी हर्षिता माथुर व पुलिस अधीक्षक डॉ0 यशवीर सिंह ने कलेक्ट्रेट स्थित ईवीएम/वीवीपैट वेयर हाउस का आन्तरिक त्रैमासिक निरीक्षण राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में किया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने वेयर हाउस की साफ-सफाई की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित कराने के संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने ईवीएम/वीवीपैट वेयर हाउस की सुरक्षा, लाग बुक, सीसीटीवी कैमरा आदि के बारे में जानकारी ली गई। इस मौके पर अपर जिलाधिकारी प्रशासन सिद्धार्थ सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी व राजनैतिक दलों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

डीएम-एसपी ने तहसील सदर में सम्पूर्ण समाधान दिवस में फरियादियों की सुनी समस्याएं,शिकायतों का समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण से निस्तारण कराए अधिकारीःडीएम

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी हर्षिता माथुर की अध्यक्षता में तहसील सदर में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। जिलाधिकारी ने कहा कि जन सामान्य की शिकायतों का स्थानीय स्तर पर समाधान किया जाना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है जिसके क्रम में तहसील व थानों में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया जाता है। इसमें स्थानीय नागरिक उपस्थित होकर अपनी समस्याओं का समाधान करा सकते हैं। जिलाधिकारी ने कहा कि सभी अधिकारी जनता की इन शिकायतों का निस्तारण त्वरित एवं समयबद्ध तरीके से एक सप्ताह में कराना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि शिकायतों के निस्तारण में यदि कोई समस्या है तो उसका कारण स्पष्ट करते हुए अवगत कराना सुनिश्चित किया जाये। जिलाधिकारी ने बताया कि तहसील सदर में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में राजस्व विभाग 68, पुलिस 09, विकास 04 एवं अन्य 16 कुल 97 प्रकरण प्राप्त हुए, जिसमें से 11 प्रकरणों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। शेष प्रकरणों को निस्तारण हेतु संबंधित विभागों को इस निर्देश के साथ उपलब्ध करा दिये गये कि उनका निस्तारण एक सप्ताह में कराना सुनिश्चित कराए। पुलिस अधीक्षक डॉ0 यशवीर सिंह ने भी पुलिस से संबंधित मामलों को सुना और संबंधित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस मौके पर संबंधित अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

नैनी पुलिस द्वारा देह व्यापार से सम्बन्धित 04अभियुक्त व 02अभियुक्ता गिरफ्तार, जामा तलाशी में रू06,640 व 06 मोबाइल बरामद

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। शनिवार को थाना नैनी पुलिस टीम द्वारा मुखबिर की सूचना पर अनैतिक देह व्यापार करने वाले अभियुक्तगण 1. अशोक कुमार शुक्ला पुत्र राजबहादुर शुक्ला नि0 ग्राम पचौखर थाना पहाडी जनपद चित्रकूट 2. आमिर पुत्र सगीर नि0 सौदत्त थाना परीक्षितगढ जनपद मे?ठ 3. इंगलेश कुमार पुत्र विजयशंकर पाण्डेय नि0 ग्राम व पोस्ट अयोध्या थाना कोराव जनपद प्रयागराज 4. संतोष कुमार पुत्र स्व0 पंचईराम निवासी ग्राम कठौली मेजा रोड थाना मेजा जनपद प्रयागराज 5. कंचन देवी पत्नी राहुल कुमार नि0 महेन्द्रपुर थाना महेन्द्रपुर जनपद बेगुसराय बिहार 6. शोभारानी मण्डल उर्फ सपना पत्नी मनोज मण्डल नि0 रानाघाट थाना रानाघाट जनपद नदिया प्रांत पश्चिम बंगाल को ए0डी0ए कॉलोनी थाना क्षेत्र नैनी से गिरफ्तार किया गया तथा कब्जे से 6,640/- रू0 नगद व जामा तलाशी से 06 मोबाइल फोन (अभियुक्तगण की स्वयं की) बरामद किया गया । उक्त गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 455/2025 धारा 3/4/5/7/8 अनैतिक व्यापार (निवारण) अधि0 पंजीकृत किया गया । नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है।

ग्राम देदानी में परंपरागत दंगल का भव्य आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। सोमवार को रायबरेली के देदानी गांव में सौ वर्ष पुराने परंपरागत दंगल का भव्य आयोजन किया गया। प्रदेश के अलग-अलग जिलों से पहुंचे पहलवानों ने अखाड़े में अपने दांव-पेच दिखाए। इस दौरान गोरखपुर के पहलवान रमेश ने शानदार प्रदर्शन कर 5100 रुपये की इनामी कुश्ती अपने नाम की। ग्रामीणों की भारी भीड़ इस ऐतिहासिक दंगल की गवाह बनी। दांव-पेच देखते ही दर्शकों में उत्साह की लहर दौड़ गई। आयोजकों का कहना था कि यह दंगल न केवल खेल की परंपरा को जीवित रखता है बल्कि नई पीढ़ी को भी ग्रामीण खेलों से जोड़ता है। आयोजन में समाजसेवी अमित द्विवेदी का विशेष योगदान रहा। उन्होंने कहा कि 100 वर्षों से जारी इस परंपरा को आगे बढ़ाना सबकी जिम्मेदारी है। खेलों से गांवों में नई ऊर्जा और भाईचारा पैदा होता है।

ओला ई-बाइक सर्विस सेंटर, नैनी की लापरवाही से महिला प्रोफेसर को हो रही भारी परेशानी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। नैनी निजी मेडिकल कॉलेज में कार्यरत शिक्षिका शिवानी सिंह सेंगर पिछले एक सप्ताह से ओला की इलेक्ट्रिक बाइक को ठीक कराने के लिए नैनी स्थित ओला ई-बाइक सर्विस सेंटर के चक्कर काट रही हैं, लेकिन अब तक उनकी बाइक ठीक नहीं हो पाई है। सर्विस सेंटर द्वारा न तो कोई स्पष्ट जवाब दिया जा रहा है और न ही कोई संतोषजनक सेवा दी जा रही है। शिवानी सिंह सेंगर का कहना है कि यह बाइक उनके लिए सिर्फ एक साधन नहीं, बल्कि उनके रोज़ाना के कॉलेज आना-जाना और विद्यार्थियों की पढ़ाई से जुड़ा एक अहम हिस्सा है। बाइक खराब होने के कारण उन्हें हर दिन कॉलेज जाने के लिए टैम्पो का सहारा लेना पड़ रहा है, जिससे समय की बर्बादी हो रही है और इससे विद्यार्थियों की पढ़ाई पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने बताया कि सर्विस सेंटर बार-बार यह कहकर टालता रहा कि 'कल तक बन जाएगी', लेकिन एक हफ्ता बीत जाने के बाद भी कोई सुधार नहीं हुआ है। ना तो कोई टेक्निकल जानकारी दी जा रही है, ना ही बाइक की स्थिति के बारे में कोई अपडेट। यह स्थिति न सिर्फ एक ग्राहक के साथ अन्याय है, बल्कि यह पूरे सिस्टम की लापरवाही को दर्शाती है। यह मामला दर्शाता है कि कैसे एक नामी कंपनी के सर्विस सेंटर पर भरोसा करना आम जनता के लिए भारी पड़ सकता है। शिवानी सिंह ने ओला कंपनी से अपील की है कि वे इस मामले को गंभीरता से लें और जल्द से जल्द उनकी बाइक की मरम्मत करवाएं, ताकि उनकी दिनचर्या सामान्य हो सके और विद्यार्थियों की पढ़ाई प्रभावित न हो।

प्रयागराज के विद्युत विभाग के अधीक्षण अभियंता श्री भरत कुमार ने किया नैनी इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग सेंटर का दौरा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। प्रयागराज के विद्युत विभाग के अधीक्षण अभियंता श्री भरत कुमार ने आज नैनी स्थित इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग सेंटर का भ्रमण किया। इस अवसर पर उन्होंने संस्थान में संचालित इलेक्ट्रीशियन एवं इलेक्ट्रिक मैकेनिक प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों की जानकारी ली। श्री भरत कुमार ने केंद्र के कोर्स कोऑर्डिनेटर श्री कौसर से पाठ्यक्रम की रूपरेखा, प्रशिक्षण की गुणवत्ता, तथा उद्योगों से जुड़ाव के विषय में चर्चा की। इसके बाद उन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों से संवाद किया और उनकी प्रगति एवं अनुभवों के बारे में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने विद्यार्थियों और प्रशिक्षण स्टाफ की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे संस्थान युवाओं को तकनीकी रूप से सक्षम बनाकर उन्हें आत्मनिर्भर बना रहे हैं, जो देश के विकास में अहम भूमिका निभाते हैं। इस अवसर पर श्री भरत कुमार ने प्रशिक्षण केंद्र द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की और भविष्य में विभागीय सहयोग का आश्वासन भी दिया।

पिता की हत्या करने वाला अभियुक्त गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। थाना सेक्टर-113 नोएडा पुलिस द्वारा मु0अ0सं0 388/25 की हत्या मृतक के पुत्र उदय उम्र 19 वर्ष द्वारा संपत्ति के विवाद को लेकर घर में ही पडी ईट से मारकर अक्सर संपत्ति को लेकर विवाद होता रहता था तथा मेरे पिता जी मुझे खर्चे व शराब पीने के लिए पैसे भी

धारा 103(1) बीएनएस से संबंधित अभियुक्त उदय पुत्र गौतम को गिरफ्तार किया गया है। घटना का संक्षिप्त विवरण- दिनांक 07.09.2025 को वादी मुकदमा द्वारा तहरीर देकर सूचना दी गई कि वादी के भाई गौतम उम्र-43 वर्ष कर दी गयी है, जिसके संबंध में थाना सेक्टर-113 नोएडा पर मु0अ0सं0 388/25 धारा 103(1) बीएनएस पंजीकृत किया गया। पूछताछ का विवरण- अभियुक्त द्वारा पूछताछ के दौरान बताया गया कि मेरे पिताजी गौतम व मेरे बीच नहीं देते थे तथा मेरे नाम मकान व संपत्ति आदि नही कर रहे थे। दिनांक 06.09.2025 की शाम को भी हमारा झगडा हुआ था जिसके कारण मैने अपने पिता जी को चारपाई पर लेटे हुये ही कमरे में पडी हुयी ईंट से मारकर उनकी हत्या कर दी।

'जेवर विधायक धीरेन्द्र सिंह ने किया ग्रेटर नोएडा के साइट 4 स्थित रामलीला मंचन का भूमि पूजन'

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। जेवर विधान सभा के ग्रेटर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर, उन्हें नमन किया तथा उपस्थित कमेटी विधायक धीरेन्द्र सिंह ने आगे कहा कि 'भारतीय संस्कृति और परंपरा

नोएडा के सेंट्रल पार्क, साइट- 4 में आगामी 23 सितम्बर से 03 अक्टूबर 2025 तक भव्य रामलीला मंचन का आयोजन किया जाना है। इस मौके पर आज दिनांक 07 सितम्बर 2025 को जेवर विधायक धीरेन्द्र सिंह ने भूमि पूजन कर आयोजन की शुरुआत की। इस मौके पर जेवर विधायक धीरेन्द्र सिंह ने पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम और अन्य लोगों को भगवान राम के आदर्शों और उनके बताए मार्ग पर चलने का आह्वान किया। जेवर विधायक धीरेन्द्र सिंह ने कहा कि 'भगवान श्रीराम का जीवन हमें सत्य, त्याग, कर्तव्यनिष्ठा और आदर्शों के पालन का संदेश देता है। आज के समय में समाज को भगवान श्रीराम के इन आदर्शों को आत्मसात करने की आवश्यकता है।' जेवर की अमूल्य धरोहर रामलीला केवल एक धार्मिक आयोजन ही नहीं, बल्कि आदर्श जीवन मूल्यों का सामाजिक मंचन है।' इस मौके पर रामलीला मंचन कमेटी के मनोज गर्ग , सरदार मंजीत सिंह, हरेंद्र भाटी, राहुल नंबरदार, आलोक सिंह, कुलदीप शर्मा, राजकुमार भाटी, अजित दौला, ओम रायजादा आदि लोग प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

जबलपुर के तर्ज पर जयसिंहनगर मे खाद्यान घोटाला होने की शंका, एनआईसी हैदराबाद से जांच कराये जाने की मांग

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) मध्य प्रदेश/ब्योहारी। जबलपुर के तर्ज पर जयसिंहनगर ब्लाक ठीक उसी प्रकार जयसिंहनगर अंतर्गत संचालित आदिम जाती सेवा सहकारी समितियों की कई दुकानों स्टॉक घटाया गया है उसके संबंध मे जानकारी इकट्ठा कर बताने के लिये कहा गया किन्तु

अंतर्गत संचालित आदिम जाती सेवा सहकारी समितियों मे भी खाद्यान घोटाला होने की शंका लोगों द्वारा जतायी जा रही है जिसके लिये समाजसेवियो एवं जानकारों द्वारा एनआईसी हैदराबाद से जांच कराये - जाने की मांग की जा रही है। जयसिंहनगर अंतर्गत संचालित आदिम जाती सेवा सहकारी - समितियों के कई दुकानों के - पीओएस मशीन से जिला अपूर्ति अधिकारी के मिली भगत से खाद्यान - घोटाला किये जाने की चर्चा है। एक समिति के विक्रेता द्वारा नाम न छापने - की शर्त पर बताया गया कि जिस - तरह से जबलपुर मे खाद्यान घोटाला उजागर हुआ है से खाद्यान का स्टॉक पीओएस मशीन से घटाया गया है। उक्त खाद्यान के स्टॉक को किसके आदेशानुसार घटाया गया है और क्या दुकानों का स्टॉक एडजेस्टमेंट खाद्य संचालनालय से की गयी है यदि इसकी निष्पक्ष जांच एनआईसी हैदराबाद से करायी गयी तो करोड़ो का घोटाला सामने आ सकता है। वंही स्टॉक कम किये जाने की चर्चा फोन से जयसिंहनगर अंतर्गत संचालित एक आदिम जाति सेवा सहकारी समिति के लैम्पस प्रबंधक से की गयी तब उनके द्वारा भी स्टॉक कम किये जाने की बात स्वीकार की गयी है मगर किस दुकान से कितना खाद्यान का जब सहायक खाद्य अपूर्ति अधिकारी जयसिंहनगर से फोन मे चर्चा की गयी तब उनके द्वारा किसी भी दुकान से स्टॉक कम नहीं किये जाने एव जांच प्रतिवेदन बना कर उच्चाधिकारियो को दिये जाने की बात कही जा रही है। उक्त संबंध मे जानकारी हेतु जब जिला खाद्य अपूर्ति अधिकारी को फोन लगाया गया पर उनके द्वारा फोन नहीं उठाया गया। खाद्यान का स्टॉक पीओएस मशीन से घटाकर खाद्यान घोटाला किये जाने का जो आरोप लगया जा रहा है वह कंहा तक उचित उसका खुलासा एनआईसी हैदराबाद के जांच से ही हो सकता है।

उल्लास के साथ मनाई कश्यप महाराज की जयंती, शिक्षकों का सम्मान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

मध्य प्रदेश/ब्योहारी। कश्यप महाराज की जयंती के उपलक्ष्य में केशरवानी समाज द्वारा सुंदर कांड पाठ व शिवकों का सम्मान किया गया साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। केसरवानी समाज द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी केसखानी नगर सभा, केसवानी महिला सत्रा व केसवानी तरुण सभा तीनों इकाई द्वारा कश्यप जयंती के कार्यक्रम में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम का आयोजन केशरवानी धर्मशाला मे किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत कश्यप महाराज की पूजा अर्चना व दीप प्रज्वलित कर किया गया। समाज का ध्वजारोहण प्रदेश सभा के उपाध्यक्ष जय प्रकाश गुप्ता सच्चा जी द्वारा किया गया तपक्षात सुंदर काण्ड पाठ का आयोजन किया गया। 5 सितंबर को कश्यप महाराज की जयंती के साथ साथ भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ राधाकृष्णन जी की भी जयंती थी जिस कारण शिक्षक दिवस के अवसर पर समाज व सुंदी बाई केशरवानी स्कूल के सभी सेवारत व सेवानेवात शिक्षक एवं शिक्षको का सम्मान समारोह केशरवानी कल्याण समिति के द्वारा आयोजित किया गया जिसके मुख्य अतिथि श्री वृजवासी ताल गुप्ता संरक्षक व सेवानेवर्त शिक्षक रहे इसके बाद भोजन प्रसाद तथा महिला सभा एवं वरुण सभा द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति की गयी।

उक्त क्वर्यक्रम में समाज के अध्यक्ष चंद्रसेन गुप्ता सहित सभी इकाई के अध्यक्ष व पदाधिकारियों के साथ साथ समाज के वरिष्ठ लोग, माताए, बहनो एवं समाज सेवियों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

ईपीसीएच ने ग्रीस में 'इंडियन हैंडीक्राफ्ट्स - मैजिक ऑफ गिफ्टेड हैंड्स' प्रदर्शित किया,रचनात्मकता, शिल्पकौशल और नए क्रय-स्रोत के अवसर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। नोएडा दिल्ली 89वां श्री आर. के. वर्मा ने बताया। श्री असित गोपाल ने परिषद के प्रयासों और 2,00,000 से अधिक आगंतुकों के भाग लेने की उम्मीद है। भारत

थेसालोनिकी अंतर्राष्ट्रीय मेला (टीआईएफ) 06 से 14 सितंबर 2025 तक ग्रीस के थेसालोनिकी अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी एवं कांग्रेस केंद्र में ईपीसीएच के थीमैटिक पवेलियन 'इंडियन हैंडीक्राफ्ट्स - मैजिक ऑफ गिफ्टेड हैंड्स' आरम्भ हुआ । ईपीसीएच इंडिया पवेलियन का उद्घाटन भारत सरकार के वस्त्र, खाद्य प्रसंस्करण, पूर्वोत्तर मंत्रालय (डीओएनईआर) में अतिरिक्त सचिव और वित्तीय सलाहकार श्री असित गोपाल ने किया । इस अवसर पर श्री रवि के पासी ईपीसीएच के पूर्व अध्यक्ष एवं सीओए सदस्य; श्री शंकर नंद भारती, महाप्रबंधक एवं विभागाध्यक्ष, प्रशासन आईटीपीओ; सदस्य प्रदर्शक; मास्टर शिल्पकार तथा श्रीमती लीला, श्रीमती नीना, वरिष्ठ मेला अधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति भी रही ईपीसीएच के कार्यकारी निदेशक की सराहना की और बताया कि इस मेले के माध्यम से लोग भारत की छवि को हस्तशिल्प सोर्सिंग के लिए लाभदायक गंतव्य के रूप में पेश करने के लिए खरीदारों से जुड़ रहे हैं क्योंकि भारत में विविध उत्पाद रेंज, टिकाऊ प्रथाएं और कारीगरी उत्कृष्टता है जो इसे दुनिया भर में सबसे आकर्षक सोर्सिंग गंतव्यों में से एक बनाती है। ईपीसीएच के अध्यक्ष डॉ. नीरज खन्ना ने कहा कि 'थेसालोनिकी अंतर्राष्ट्रीय मेला दक्षिण-पूर्वी यूरोप की सबसे महत्वपूर्ण व्यापार प्रदर्शनियों में से एक है, जो दुनिया भर के व्यापार अग्रणियों, नीति निर्माताओं, निवेशकों और नवप्रवर्तकों को एक साथ लाता है। टीआईएफ एक बहु-विषयक मंच के रूप में कार्य करता है, जो वाणिज्य, संस्कृति और नवप्रवर्तन का सम्मिश्रण करता है। इसमें 1,500 से अधिक प्रदर्शकों के लिए, यह हस्तशिल्प और जीवनशैली उत्पादों में सहयोग, साझेदारी और सोर्सिंग के अवसरों के नए क्षितिज खोलता है।' ईपीसीएच के कार्यकारी निदेशक आर. के. वर्मा ने बताया कि इस वर्ष ईपीसीएच दो निर्यातकों के साथ भाग ले रहा है, साथ ही भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय के विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) कार्यालय द्वारा नियुक्त 7 राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त मास्टर शिल्पकारों द्वारा भारतीय पारंपरिक शिल्प का लाइव पारम्परिक शिल्प प्रदर्शनी आयोजित की जा रही है। ये शिल्पकार आंध्र प्रदेश से चमड़े की कठपुतलियाँ, दिल्ली से आर्टमेटलवेयर, जम्मू और कश्मीर से शॉल, गुजरात से कच्छ बंधनी, राजस्थान से फड़ पेंटिंग और सांगानेरी हैंड ब्लॉक प्रिंटिंग और छत्तीसगढ़ से बस्तर ढोकरा का प्रदर्शन कर रहे हैं।

भाजपा नोएडा महानगर में हुई सेवा पखवाड़े की शुरुआत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सेक्टर 116 जिला कार्यालय पर भाजपा नोएडा द्वारा प्रदर्शनी, प्रबुद्ध सम्मेलन, नमो मैराथन, पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के जीवन पर संगोष्ठी, विकसित दायित्व का पूर्ण निष्ठा के साथ निर्वहन करेंगे और सभी सेवा कार्यों को पूर्ण करेंगे। इस मौके पर पूर्व

आगामी सेवा पखवाड़ा की शुरुआत की गई। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र चौधरी रहे। उनके साथ नोएडा विधायक और प्रदेश उपाध्यक्ष पंकज सिंह, महानगर अध्यक्ष महेश चौहान, गौतमबुद्ध नगर जिला अध्यक्ष अभिषेक शर्मा रहे। सबसे पहले प्रदेश अध्यक्ष ने प्रेस वार्ता में पत्रकार बंधुओं से इस सेवा पखवाड़ा पर चर्चा करी साथ ही कई अनेक विषयों पर भी चर्चा करी। कार्यक्रम में प्रदेश अध्यक्ष ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के उपलक्ष्य पर सेवा पखवाड़े की शुरूआत होगी। ये सेवा पखवाड़ा 17 सितंबर से 2 अक्टूबर महात्मा गांधी जी की जयंती तक चलेगा। इस सेवा पखवाड़े के अन्तर्गत स्वच्छता अभियान, रक्त दान शिवर, फल वितरण, प्रधानमंत्री के जीवन पर भारत चित्रकला प्रतियोगिता, सांसद खेल कूद प्रतियोगिता आदि अन्य कार्यक्रम की रूप रेखा बनाई है। विधायक पंकज सिंह ने कहा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस 17 सितंबर से सेवा पखवाड़ा अभियान की शुरुआत होगी। भाजपा एक राजनीतिक दल के रूप में राष्ट्र प्रथम की भावना से कार्य करती है, साथ ही भाजपा का दूसरा पहलू हमेशा से जनसेवा का भी है। पार्टी के कार्यकर्ता जनसेवा और रचनात्मक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। मजबूत भारत के लिए मजबूत भाजपा का होना आवश्यक है। भाजपा की मजबूती ही भारत की मजबूती है।' महानगर अध्यक्ष महेश चौहान ने कहा भाजपा ही एक ऐसी पार्टी है जो सभी वर्गों को सम्मान और राष्ट्र को विकसित बनाने के संकल्प के साथ काम करती है। हमारे सभी कार्यकर्ता अपने अध्यक्ष राकेश शर्मा, मनोज गुप्ता, नबाब सिंह नागर, बिमला बाथम, विजेंद्र नागर, योगेंद्र चौधरी, विनोद त्यागी, चंदगीराम यादव, गणेश जाटव, उमेश त्यागी, डिंपल आनंद, गिरीश कोटनाला, तन्मय शंकर, विनोद शर्मा, युद्धवीर चौहान, पूनम सिंह, ओमवीर अवाना, अमरीश त्यागी, रवि यादव, मनोज चौहान, प्रमोद बहल, मधु मेहरा, अशोक मिश्रा, मनीष शर्मा, हर्ष चतुर्वेदी, गौतम शर्मा, प्रदीप चौहान, नीरज चौधरी, कल्लू सिंह, मनीष तिवारी, राहुल शर्मा, शशिधर उपाध्याय, राम किशन यादव, धर्मेंद्र गुप्ता, चमन अवाना, शिवांश श्रीवास्तव, भूपेश चौधरी, एस पी चमोली, अमित त्यागी, अतुल त्यागी, शारदा चतुर्वेदी, महेश अवाना, भगत भाटी, राजीव, धर्मेंद्र, महेश, सुरेश, आलोक, कमल आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

आईएमएस-डीआईए में शिक्षक दिवस पर रंगारंग कार्यक्रम

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सेक्टर-62 स्थित आईएम बनाने के लिए 'ब्लाइंड पिक्चर गेम' भी आयोजित किया गया, जिसमें वहीं आईएम एस-डिजाइन के डीन प्रोफेसर (डॉ.) एम.के.वी. नायर

एस-डिजाइन एंड इनोवेशन अकादमी (आईएमएस-डीआईए) में शिक्षक दिवस के अवसर पर रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शनिवार को कार्यक्रम की शुरुआत छात्रों द्वारा शिक्षकों के स्वागत से हुई, जिसमें सभी फैकल्टी सदस्यों को विशेष टैग लाइन दी गई। कार्यक्रम के दौरान संस्थान के शिक्षकों ने नृत्य, गीत-संगीत और रैंप वॉक में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। माहौल को और उत्साहपूर्ण सभी शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसके पश्चात केक काटकर एक-दूसरे को बधाई दी। आईएमएस-डीआईए की सीएमडी शिल्पी गुप्ता ने सभी को शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि एक अच्छे समाज के निर्माण में शिक्षक का योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता। एक अच्छा शिक्षक समाज का निर्माता होता। किसी भी देश का विकास में उस देश के शिक्षकों पर ही निर्भर करता है। ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षक कभी बुरे नहीं होते, केवल उनके पढ़ाने का तरीका एक-दूसरे से भिन्न होता है, जो विद्यार्थियों के मन में अलग-अलग छवि बनाता है। हर शिक्षक अपने विद्यार्थियों को सफल और खुश देखना चाहता है। उन्होंने बताया कि आज के कार्यक्रम में जूनियर छात्रों ने नृत्य प्रस्तुत कर सभी का मन मोहा। वहीं अंत में कार्यक्रम का समापन छात्रों द्वारा शिक्षकों को विशेष धन्यवाद के साथ किया गया।

शिव शक्ति अपार्टमेंट में पानी के लिए तरस रही है जनता

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा सेक्टर 71 शिव शक्ति अपार्टमेंट जनता फ्लैट में 1 महीने देव मणि शुक्ल को एक साक्षात्कार में बताया कि पानी की समस्या सिर्फ आज की नहीं है यह समस्या पिछले

में 15 दिन पानी आता है और 15 दिन पानी नहीं आता है। हमारा देश और समाज इककीसवीं सदी में प्रवेश करने की बात करता है। मेट्रो सिटी बनाने की बात करता है लेकिन आज भी आम जनमानस मूलभूत सुविधाओं के लिए दर दर भटक रहा है। इसी कड़ी में शिव शक्ति अपार्टमेंट में पीने के लिए पानी तक सरकार देने से असमर्थ हैं। आर डब्ल्यू ए महासचिव संजय शुक्ला ने हमारे नोएडा ब्यूरो प्रभारी कई महीनों से चल रहा है। लेकिन नोएडा प्राधिकरण के अधिकारी सुनने को तैयार नहीं है। यही हालत नोएडा का इस समय बना हुआ है नोएडा को नंबर वन बनाना चाहते हैं क्या इन्हीं परिस्थितियों को देखते हुए नोएडा नंबर वन बनेगा नोएडा में लोग एक-एक बूंद पानी के लिए तरस रहे हैं कोई रास्ता निकाले 10000 जनता परेशान है पानी के लिए कोई रास्ता निकाले जनता आप लोगों का आभारी रहेगा।

शिव शक्ति अपार्टमेंट सेक्टर 71 में सुरक्षा के लिए अधिकारियों की बैठक हुई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सेक्टर 71 और 70 की एडीसीपी महोदया शव्या गोयल, एसीपी महोदया वर्णिका सिंह,

आर डब्ल्यू ए के 80 लोग मीटिंग में मौजूद रहे। जिसमें शिव शक्ति अपार्टमेंट सेक्टर 71 के आर डब्ल्यू ए महासचिव संजय शुक्ला ने सेक्टर की समस्यायों को जोर दार रखा। इनके अलावा अन्य आर डब्ल्यू ए के पदाधिकारियों ने सेक्टर की समस्याओं से अवगत करवाया। मीटिंग में डीसीपी शक्ति मोहन अवस्थी, थाना अध्यक्ष ध्रुव भूषण दुबे , पूर्व पुलिस अधिकारी के के गौतम , फोनरवा अध्यक्ष योगेंद्र शर्मा ने हिस्सा लिया। इस मीटिंग में सेक्टर निवासियों ने अपनी अपनी समस्याओं को बताया और शक्ति मोहन अवस्थी डीसीपी द्वारा आश्वासन दिया गया कि सभी समस्याओं पर विचार करके समाधान किया जाएगा।

श्रम समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो होम इटटू नोएडा कम्पनी के कर्मचारी करेंगे आंदोलन 'सीटू'

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। होम इटटू बी- 96,106 एवं 109 नोएडा के कर्मचारियों ने कम्पनी प्रबंधकों द्वारा किए जा रहे आर्थिक शोषण, उत्पीड़न के खिलाफ आज सीटू कार्यालय सेक्टर- 8, नोएडा कार्यालय में 10 सितंबर 2025 को वार्ता की तिथि लगाई हुई है। वार्ता में ट्रेड यूनियन रंजिश मानकर श्रमिक अरुण पटेल को गैरकानूनी तरीके से कार्य से रोके जाने, बोनस व ओवर टाइम का कानूनी भुगतान

पर आम सभा कर आंदोलन की रूपरेखा पर चर्चा किया। बैठक को संबोधित करते हुए सीटू जिलाध्यक्ष गंगेश्वर दत्त शर्मा ने कहा कि होम इटटू के मालिकान श्रम कानूनों की धज्जियां उड़ाकर संस्थान को चला रहे हैं और मजदूरों का आर्थिक व मानसिक रूप से उत्पीड़न कर रहे हैं जिसकी शिकायत हमारे संगठन द्वारा उप श्रमायुक्त गौतम बुद्ध नगर से लिखित में की हुई है जिस पर समस्याओं के समाधान हेतु श्रम और सभी श्रमिकों के नाम मास्टर रोल पर दर्ज कर श्रम कानूनों के तहत मिलने वाली सभी विधिक सुविधा का लाभ दिए जाने सहित सभी मुद्दों को उठाया जाएगा। वार्ता के माध्यम से उक्त समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो संस्थान स्तर पर आंदोलन शुरू कर दिया जाएगा। सभा को संबोधित करते हुए सीटू जिला महासचिव रामसागर ने कर्मचारियों को संगठित होकर लड़ने के लिए प्रेरित किया।

सिंगरौली के विकास सिंह बने जिलाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष बने फणीभूषण शर्मा उर्फ पप्पू

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। पत्रकारों की आवाज़ और अधिकारों की रक्षा हेतु सक्रिय भारतीय पत्रकार एसोसिएशन ने अपने संगठनात्मक विस्तार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए शुक्रवार को नवानगर मध्यप्रदेश में एक बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में भारतीय पत्रकार एसोसिएशन के संयोजक अखिलेश मिश्रा राष्ट्रीय सचिव किशन पाण्डेय व सोनभद्र के मीडिया प्रभारी मुन्ना ओझा मुख्य रूप से शामिल हुए। बैठक के दौरान संगठन का विस्तार करते हुए संगठन के संयोजक ने मध्यप्रदेश के सिंगरौली जिलाध्यक्ष की जिम्मेदारी वरिष्ठ पत्रकार विकास सिंह को दी तो वही फणीभूषण शर्मा उर्फ पप्पू शर्मा को कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी सौपी। इस बैठक को संबोधित करते हुए। श्री मिश्रा जी ने कहा कि 'भारतीय पत्रकार एसोसिएशन पत्रकारों के अधिकारों और सुरक्षा के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है।' उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि पत्रकारों पर किसी भी प्रकार का उत्पीड़न या दमन बर्दाश्त नहीं किया जाएगा हम सभी पत्रकार साथी कदम से कदम मिलाकार एक साथ चलने की बातें कही। नव-नियुक्त जिलाध्यक्ष विकाश सिंह को संगठन का जिम्मेदारी सौंपते हुएं कहां कि वे जिले में पत्रकारों के हित में कार्य करें, संगठन को मज़बूत बनाएं और क्षेत्रीय संवाददाताओं की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करें। बैठक के दौरान किशन पाण्डेय ने पत्रकारों को संगठन के नेतृत्व में भरोसा जताया और एकजुट होकर पत्रकार हितों की रक्षा के लिए निरंतर प्रयास हम सब करेंगे और कहां कि भारतीय पत्रकार एसोसिएशन उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में पत्रकारों को संगठित कर एक मज़बूत मंच प्रदान करने की दिशा में तेज़ी से अग्रसर है। भारतीय पत्रकार एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष रामाअश्रय राय सहित संगठन के उच्च पदाधिकारी नईम ग़ाज़ीपुरी अजय जौहरी लल्लन गुप्ता जी.के.मदान, सर्वेश राय अमिताभ मिश्रा किशन पाण्डेय नकुल तालिब अंसारी सहित अन्य लोगों ने कुशीनगर जिलाध्यक्ष चन्द्र भूषण चौबे ने मध्यप्रदेश जिलाध्यक्ष को दी बधाई।

भाजपा सरकार में चारों तरफ भ्रष्टाचार व्याप्त हैः रामनिहोर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। समाजवादी पार्टी जनपद की मासिक बैठक जिला पार्टी कार्यालय पर की गई । जिसकी अध्यक्षता पार्टी जिला अध्यक्ष राम निहोर यादव ने किया और संचालन जिला महासचिव मोहम्मद सईद कुरैशी में किया । बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में सांसद छोटेलाल सिंह खरवार उपस्थित थे। बैठक को संबोधित करते हुए समाजवादी पार्टी के जिला अध्यक्ष राम निहोर यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी ही एक ऐसी पार्टी है जो हर वर्ग के समाज को एक साथ लेकर चलने का काम करती है लेकिन इस भाजपा सरकार में चारों तरफ भ्रष्टाचार व्याप्त है। किसान खाद के लिए दर-दर भटक रहा है लेकिन भाजपा कान में तेल डाली हुई है । उसे किसानों की समस्या सुनाई नहीं दे रही है । इसलिए हम समाजवादियों की जिम्मेदारी है कि आगामी विधानसभा चुनाव के लिए कमर कस लें। बैठक को संबोधित करते हुए सांसद छोटेलाल सिंह खरवार ने कहा कि गरीबों का भला समाजवादी पार्टी में है जिसके अखिलेश यादव हैं। समाजवादी पार्टी किसानों मजदूरों नौजवानों महिलाओं और हर तपके की लड़ाई लड़ने का काम कर रही है। बैठक में मुख्य रूप से प्रदेश सचिव हाजी मुनीर अहमद पूर्व जिला अध्यक्ष रविंद्र बहादुर सिंह पटेल श्याम बिहारी यादव संजय यादव विजय यादव जिला महासचिव मोहम्मद सईद कुरैशी अनिल प्रधान जिला उपाध्यक्ष वेदमाणी शुक्ला राम प्यारे सिंह पटेल लाल बहादुर पाल डॉक्टर लोकपति सिंह पटेल त्रिपुरारी गौड़ सुरेश यादव रमेश सिंह यादव अशोक पटेल रमेश कुमार वर्मा रवि कुमार गौड़ बड़कू विपिन श्रीवास्तव गीता गौर सरदार पारब्रह्म सिंह मन्नू पांडे राधा सिंह हिदायत उल्ला खान विजय शंकर जायसवाल परमेश्वर यादव पवन पटेल फारुख अली जिलानी अजीत मौर्य प्रदीप कनौजिया चंद्र भूषण यादव रमजान अली संजय यादव शिवनारायण चौहान सनी पटेल राजेश विश्वकर्मा जलालुद्दीन प्रमोद यादव बाबू हाशमी लालबरत यादव राम लखन अजय विपिन श्रीवास्तव अशोक बबलू धनगर विवेक आदि लोग उपस्थित थे।

दुद्धी में प्राइवेट अस्पताल की फिर ओटी शील,लिमिटेड पर रिटेल, एक अस्पताल सील, कई अस्पताल के ओ.टी. सील

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) दुद्धी, सोनभद्र। दुद्धी नगर में स्वास्थ्य विभाग की टीम ने शनिवार को नगर के करीब आधा आबादी से अधिक निजी जानकारी की जांच की। जांच अधिकारियों की टीम जब प्राइवेट प्राइवेट लिमिटेड में घुसी तो कई अस्पताल कर्मचारी भाग गए। स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा निजी जांच पड़ताल से पूछताछ की गई। जांच अधिकारी एवं विज्ञप्ति अधिकारी गुलाब शंकर एवं डॉ. कृति आज़ाद बींद की संयुक्त टीम ने इस जांच को अंजाम दिया। इस दौरान कई क्लिनिक में डॉक्टर डॉक्टर मिले। कुछ बुनियादी बातों में बिना किसी संस्था के ऑपरेशन के जाने की भी जानकारी मिली। शिवा हॉस्पिटल में हाल ही में प्रसव के दौरान मां और बच्चे की मौत के मामले में शिवा हॉस्पिटल को सील कर दिया गया है। इसके अलावा, दुद्धी के छह निजी निजी ऑपरेशन थिएटरों को सील कर दिया गया और बंद करने का आदेश जारी किया गया। अधिकारियों ने बताया कि जांच के दौरान निजीकरण के कागजात और रजिस्टर की भी जांच की गई। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य सेवा में किसी भी तरह की लापरवाही नहीं बरती जाएगी और जिन विभागों में कर्मचारी मिले हैं, उन पर कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी। जांच के दौरान शिवा हॉस्पिटल, राधारानी हॉस्पिटल, सहित अन्य जांच की गई। अधिकारियों ने निजीकरण का पूरी तरह से पालन करने के लिए सख्त चेतावनी दी है। इस एक्शन नगर में बेहतर स्वास्थ्य सेवा सुरक्षा करने और गरीबों की सुरक्षा के लिए गंभीर कदम उठाए जाने की बात कही जा रही है। रिज़र्व अधिकारी ने कहा कि दुद्धी और घोरावल में प्राइवेट प्राइवेट लिमिटेड की भरमार है। बिना संस्था डॉक्टर के ऑपरेशन हो रहे हैं और गरीबों की मौत की घटनाएं बढ़ रही हैं। उन्होंने कहा कि बिना डॉक्टर और अस्पताल के खिलाफ किसी भी तरह की स्थिति में न जाएं और अगर कोई ऐसा अस्पताल है तो उसका मुकदमा दर्ज किया जाए।

अधिवक्ताओं को भी मिले कैशलेश इलाज की व्यवस्था-राकेश शरण मिश्र,अधिवक्ताओं के हितों को अनदेखा कर रही है यूपी सरकार

संयुक्त अधिवक्ता महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को लिखा पत्र

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

सोनभद्र। प्रदेश के अधिवक्ताओं के लिए सदैव आवाज बुलंद करने वाले संयुक्त अधिवक्ता महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष राकेश शरण मिश्र ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी को पत्र लिखकर प्रदेश के अधिवक्ताओं के लिए कैशलेश इलाज की मांग की है। श्री मिश्र ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को लिखे पत्र में मांग की है कि जब वेतन भोगी कर्मचारियों को आप कैशलेश इलाज की सुविधा देने की घोषणा कर सकते है तो अधिवक्ताओं के लिए क्यों नहीं। उन्होंने सवाल खड़ा करते हुए कहा है कि अधिवक्ता गैर वेतन भोगी होता है और उसकी दिन की या महीने की कोई निश्चित आमदनी नहीं होती जिससे वो भविष्य की परेशानियों के बारे में कुछ धन बचा कर रख सके। आज शिक्षा और मेडिकल में सबसे अधिक पैसा लग रहा है। ऐसे में कोई अधिवक्ता या उसके घर वाले किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित होते है तो उसका सब कुछ दांव पर लग जाता है। इलाज के अभाव में प्रतिवर्ष हजारों अधिवक्ता दम तोड़ रहे है। अभी हाल ही में जनपद सोनभद्र के वरिष्ठ अधिवक्ता हरिओम सेठ जो ओबरा तहसील में वकालत करते थे महीनों इलाज के अभाव में तड़पते रहे और अंततः पैसे के अभाव में उनकी इलाज ठीक से ना हो पाने के कारण उनका दुखद निधन हो गया और ना तो सरकार से उन्हें कोई मदद मिली और ना ही बार कौंसिल से। इसलिए संयुक्त अधिवक्ता महासंघ आपसे मांग करता है कि आप जल्द से जल्द प्रदेश के अधिवक्ताओं को पच्चीस लाख की कैशलेश इलाज की व्यवस्था करने और उत्तरप्रदेश में अधिवक्ता सुरक्षा अधिनियम लागू करने की घोषणा करें अन्यथा प्रदेश के अधिवक्ताओं को अपनी इन दोनों मांगों के लिए प्रदेश व्यापी आंदोलन करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा जिसकी समस्त जिम्मेवारी उत्तर प्रदेश सरकार की होगी।

पशुओं में लंपी वायरस का बढ़ता प्रकोप, पशु कर्मियों ने नहीं लगाए टीके,मनमानी, टीकाकरण से वंचित पशु हो रहे बीमार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। विकास खंड नगवां के वैनी में स्थित राजकीय पशु अस्पताल के प्रभारी डॉक्टर की तानाशाही आई सामने बरसात से पूर्व पशुओं को लगने वाला टिका नही लगाने से पशुओं में भिन्न भिन्न प्रकार की बीमारी होने लगी है अक्सर पशुओं में लंपी वायरस का प्रकोप तेजी से बढ़ रहा है जिससे पशुओं की असमय मौत हो रही है। प्रभारी पशु अस्पताल के डॉक्टर की मनमानी और लापरवाही पूर्ण रवैया देखने को मिली है सरकार द्वारा पशुओं को बरसात से पहले टिका लगाने के लिए पर्याप्त मात्रा में वैक्सीन दी जाती है की सभी पशुओं का टीकाकरण हो सके और उन्हे गंभीर बीमारियों से बचाया जा सके लेकिन डॉक्टरों की मनमानी से पशुपालकों को अपने पशुओं को मरते हुए देखना पड़ता है। एक सप्ताह पूर्व सिकरवार निवासी पूर्व प्रधान भोला प्रसाद चौरसिया की गाय बीमार थी डॉक्टर को फोन किया गया तो वह बाहर होने का हवाला देकर अस्पताल के चपरासी को इलाज। के लिए भेज दिए चपरासी ने ठीक कर देने का वादा कर इंजेक्शन लगाया और पांच सौ रुपए भी लिया उसके जाने के दो घंटे बाद ही दुधारू गाय की मौत हो गई। पशुपालकों ने प्रभारी डॉक्टर के ऊपर आरोप लगाया है कि जब भी पशु बीमार होते हैं तो जब हम लोग डॉक्टर को फोन लगाते हैं तो हमेशा बाहर होने का हवाला देकर नहीं आते हैं अपनी जगह चपरासी या कंपाउंड को भेज कर इलाज करवाते हैं जिससे अधिकतर पशुओं की मौत हो जाती है। सूत्रों की माने तो प्रभारी डॉक्टर महीने में दो चार दिन ही अस्पताल में आते हैं और पूरे महीने का अटेंडेंस बनाकर चले जाते हैं उनकी यह मनमानी पूर्ण रवैया बहुत दिनों से देखने को मिल रही है अस्पताल चपरासी और कंपाउंडर के सहारे चल रहा है जिससे पशुओं को उचित इलाज नहीं हो पा रहा है। पशुपालकों ने जिलाधिकारी सोनभद्र का ध्यान आकृष्ट कराते हुए पूरे मामले की जांच कर संबंधित के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की मांग की है। सूत्रों का मानना है कि विभाग के उच्च अधिकारी के रहम पर नहीं आते हैं।

मानदेय नहीं बढ़ा तो नहीं बनने देंगे सरकारः प्रतिमा सिंह,रॉबर्ट्सगंज नगर स्थित नवीन मंडी परिषद में हुई बैठक

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। आंगनबाड़ी कर्मचारी संघ बैनर तले कर्मचारियों ने रविवार को रावटसगंज नवीन मंडी परिसर में बैठक कर अपनी विभिन्न समस्याओं को लेकर बनाई रणनीति। जिलाध्यक्ष प्रतिमा सिंह ने बताया कि जो गुजरात स्टेट की सरकार और न्यायालय में आंगनवाड़ी कार्यकर्ति और सहापीकाओ के मानदेय में बढ़ोतरी कर उनके साथ न्याय किया है उसी क्रम में उत्तर प्रदेश के आंगनवाड़ी कार्यकर्तिओ ने निर्णय लिया है कि अब हम सब भी संगठन के साथ धरना प्रदर्शन करते हुए न्यायालय का दरवाजा खटखटा आएंगे, श्री सिंह ने बताया कि जिस प्रकार भाजपा सरकार के उपमुख्यमंत्री केशव मौर्य के प्रतिनिधि द्वारा अपने लेटर पैड पर सरकार आने से पहले 120 दिन में सम्मान जनक मानदेय देने का वादा किए थे लेकिन सरकार के 8 वर्ष बीत जाने के बाद भी यूपी की आंगनवाड़ी कार्यकर्तिओ और सहाइकाओ के मानदेय में रु1 की भी बढ़ोतरी नहीं हुई है वहीं मुख्यमंत्री द्वारा रु1500 की बढ़ोतरी की गई वह भी प्रोत्साहन धनराशि के नाम से दिया गया है। जो कभी-कभी मिलता है कभी नहीं मिलता है, ऐसी स्थिति में हम सभी कर्मचारीयो ने नाखुश होकर या निर्णय लिया है की अगर सरकार द्वारा आंगनबाड़ी कर्मचारी के लिए निर्णय नहीं लिया गया तो आगामी चुनाव में इनकी सरकार नहीं बनने देंगे। इस मौके पर प्रदेश महासचिव साधना विश्वकर्मा, उर्मिला सिंह, विभा सिंह, प्रियंका, हेमलता,गीता , रेनू सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

केक काटकर छात्राओं ने मनाया शिक्षक दिवस,पीएम श्री राजकीय बालिका इंटर कॉलेज में हुआ कार्यक्रम

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। रावटसगंज नगर स्थित पीएम श्री राजकीय बालिका इंटरमीडिएट कॉलेज परिसर में छात्राओं द्वारा शिक्षक दिवस को लेकर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया व गुरुजनों को दिए गए गिफ्ट व उपहार। प्रधानाचार्य रंजन शुक्ला ने बताया कि छात्राओं द्वारा अध्यापिकाओं के सम्मान व कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षक दिवस मनाया गया जिसमें कई छात्राओं ने प्रतिभा कर एक संदेश देने का काम किया वहीं। छात्राओं को संबोधित करते हुए वंदना सिंह ने बताया कि शिक्षक एक समाज के स्थापना करता है जिसमें छात्र उसके बताए हुए

मार्गदर्शन पर चलते हुए एक समाज स्थापित कर गांव जिला प्रदेश देश का नाम रोशन करता है शिक्षक व छात्र का संबंध गुरु शिष्य के रूप में होता है कोई भी गुरु यह नहीं चाहता कि उसका शिष्य अच्छा ना बने हर गुरु के मन में यह होता है कि उसका शिष्य बड़े मुकाम और बड़े कामयाबी को छुए वहीं छात्र गुरु के बताए हुए मार्गदर्शन पर चलते हुए समाज में एक संदेश देकर एक स्थान प्राप्त करते हैं वहीं जूनियर सीनियर छात्राओं द्वारा विद्यालय में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर शिक्षकों का अभिवादन व आभार छात्राओं द्वारा किया गया इस मौके पर वंदना सिंह,चंदा यादव,निशा सिंह,रेखा यादव,अर्चना यादव, नेहा जाटव,प्रतिमा पाल, वंदना सिंह,सीमा,भावना रानी, प्रीती,प्राची गुप्ता आदि लोग मौजूद रहे।

सामाजिक संस्था ने वृद्धा आश्रम में बेट सामग्री

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। सामाजिक संस्था इनर व्हील क्लब आर्या रॉबर्ट्सगंज द्वारा रविवार को वृद्धा आश्रम में दादा-दादी दिवस समारोह कार्यक्रम का आयोजन हुआ. दादा दादी हमारे दिलों में एक खास जगह रखते हैं जो अक्सर हमारे जीवन को ज्ञान प्रेम और आनंद से भर देते हैं.बुजुर्गों की सेवा से ही परिवार फालता फूलता है जीवन के अहम पड़ाव में प्यार और सम्मान से उन्हें खुशियां दी जा सकती हैं इस अवसर पर वृद्धाश्रम के सभी महिला और पुरुषों को लंच पैकेट पानी बोतल एवं केक वितरण किया गया। इसमें इनर व्हील क्लब आर्या रॉबर्ट्सगंज की अध्यक्ष वंदना वर्मा सचिव पूजा अग्रहरि उपाध्याय रितु अग्रवाल कोषाध्यक्ष सीमा अग्रवाल आईएसओ अर्पिता कुशवाहा संपादक नीलू अग्रवाल सहित परनिता सिंह भावना जयसवाल मोनाली अग्रवाल कीर्ति द्विवेदी अंकिता केजरीवाल आदी लोग शामिल रहे।

एबीवीपी ने चलाया हस्ताक्षर अभियान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। रामस्वरूप विश्वविद्यालय में छात्रों पर लाठीचार्ज और शैक्षणिक अनियमितताओं के विरोध में एबीवीपी सोनभद्र ने रॉबर्ट्सगंज नगर के बढ़ौली चौक पर चलाया हस्ताक्षर अभियान। हस्ताक्षर अभियान के माध्यम से विश्वविद्यालय में व्याप्त शैक्षणिक अनियमितताओं, विधि पाठ्यक्रमों की मान्यता की कमी, छात्रों के लिए बने भवनों पर अवैध कब्जे, और कोर्ट के आदेशों की अनदेखी जैसे गंभीर मुद्दों पर तीव्र विरोध दर्ज किया गया। इस हस्ताक्षर अभियान में बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिकों, छात्रों, अभिभावकों और युवाओं ने भाग लिया और विश्वविद्यालय प्रशासन की कार्यप्रणाली तथा पुलिस की हिंसात्मक कार्रवाई के खिलाफ अपनी एकजुटता दिखाई।एबीवीपी की प्रमुख माँगें इस प्रकार हैं- 1. लाठीचार्ज घटना में पुलिसकर्मियों व बाहरी गुंडों सहित सभी दोषियों पर मुकदमा दर्ज कर गिरफ्तार किया जाए। किसके आदेश पर लाठीचार्ज किया गया यह सभी प्रश्न अभी भी अनुत्तरित हैं जिनका उत्तर अतिशीघ्र सार्वजनिक किया जाए।2. विधि छात्रों के वर्तमान को भ्रम में रखकर भविष्य के साथ खिलवाड़ कर नवीनीकरण व अनुमति के बिना विधि पाठ्यक्रम के अवैध संचालन की समग्रता से तथ्यात्मक जांच की जाए व पूरी प्रक्रिया में जिम्मेदार प्रशासनिक अधिकारियों को दंडित किया जाए।

विलम्ब शुल्क के नाम पर अर्थदण्ड के रूप में बड़ी धनराशि की उगाही, सामाजिक कल्याण के नाम पर लिए जाने वाले शुल्क,निर्धारित मानक आदि की भी सघनता से जांच कर रिपोर्ट को सार्वजनिक किया जाए। जांच प्रक्रिया पूर्ण होने तक विश्वविद्यालय को सील किया जाए। 3. उच्च शिक्षा परिषद के सचिव द्वारा दर्ज

हस्ताक्षर अभियान रामस्वरूप विश्वविद्यालय में छात्रों द्वारा किए जा रहे शांतिपूर्ण आंदोलन पर बाहरी असामाजिक तत्वों द्वारा हमले और पुलिस द्वारा किए गए बर्बर लाठीचार्ज के विरोध में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी), सोनभद्र इकाई ने रॉबर्ट्सगंज नगर के बढ़ौली चौक पर चलाया हस्ताक्षर अभियान। हस्ताक्षर अभियान के माध्यम से विश्वविद्यालय में व्याप्त शैक्षणिक अनियमितताओं, विधि पाठ्यक्रमों की मान्यता की कमी, छात्रों के लिए बने भवनों पर अवैध कब्जे, और कोर्ट के आदेशों की अनदेखी जैसे गंभीर मुद्दों पर तीव्र विरोध दर्ज किया गया। इस हस्ताक्षर अभियान में बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिकों, छात्रों, अभिभावकों और युवाओं ने भाग लिया और विश्वविद्यालय प्रशासन की कार्यप्रणाली तथा पुलिस की हिंसात्मक कार्रवाई के खिलाफ अपनी एकजुटता दिखाई।एबीवीपी की प्रमुख माँगें इस प्रकार हैं- 1. लाठीचार्ज घटना में पुलिसकर्मियों व बाहरी गुंडों सहित सभी दोषियों पर मुकदमा दर्ज कर गिरफ्तार किया जाए। किसके आदेश पर लाठीचार्ज किया गया यह सभी प्रश्न अभी भी अनुत्तरित हैं जिनका उत्तर अतिशीघ्र सार्वजनिक किया जाए।2. विधि छात्रों के वर्तमान को भ्रम में रखकर भविष्य के साथ खिलवाड़ कर नवीनीकरण व अनुमति के बिना विधि पाठ्यक्रम के अवैध संचालन की समग्रता से तथ्यात्मक जांच की जाए व पूरी प्रक्रिया में जिम्मेदार प्रशासनिक अधिकारियों को दंडित किया जाए।

विलम्ब शुल्क के नाम पर अर्थदण्ड के रूप में बड़ी धनराशि की उगाही, सामाजिक कल्याण के नाम पर लिए जाने वाले शुल्क,निर्धारित मानक आदि की भी सघनता से जांच कर रिपोर्ट को सार्वजनिक किया जाए। जांच प्रक्रिया पूर्ण होने तक विश्वविद्यालय को सील किया जाए। 3. उच्च शिक्षा परिषद के सचिव द्वारा दर्ज कराई गई प्रथम सूचना रिपोर्ट के आधार पर रामस्वरूप विश्वविद्यालय पर कार्यवाही आरम्भ की जाए। चांसलर, वाइस चांसलर, रजिस्ट्रार सहित अन्य दोषियों की गिरफ्तारी हो। 4. श्री रामस्वरूप विश्वविद्यालय ने लगभग 6 बीघे सरकारी भूमि (नाली, तालाब, बंजर व चकमार्ग) पर अवैध कब्जा कर लिया था। राजस्व जांच के बाद मामला तहसीलदार कोर्ट पहुँचा, जिसने 25 अगस्त 2025 को विश्वविद्यालय प्रबंधन पर रु27.96 लाख जुर्माना लगाते हुए कब्जा हटाने का आदेश दिया। कोर्ट ने 15 दिन में जुर्माना अदा कर स्वयं अवैध निर्माण हटाने का निर्देश दिया गया है।कब्जा हटाने हेतु बुलडोजर कार्यवाही की जाए।

एबीवीपी पदाधिकारियों ने क्या कहाः- शशांक मिश्रा (प्रदेश सह मंत्री, एबीवीपी) ने कहा-'छात्रों की आवाज़ को दबाने की कोशिश बर्दाश्त नहीं की जाएगी। छात्र हितों की रक्षा के लिए एबीवीपी हर स्तर पर संघर्ष करेगा।' राहुल जलान (तहसील संयोजक) ने कहा,'यह मसला केवल एक विश्वविद्यालय का नहीं, बल्कि सम्पूर्ण प्रदेश के छात्रों के भविष्य से जुड़ा है।' ललितेश मिश्रा (जिला संयोजक) ने चेतावनी दी-'यदि आगामी 48 घंटों के भीतर प्रशासन ने कोई ठोस कदम नहीं उठाया, तो एबीवीपी प्रदेश स्तर पर बड़ा आंदोलन शुरू करेगा।

' अनमोल सोनी(प्रान्त कार्यसमिति सदस्य) ने कहा कि 'हस्ताक्षर अभियान केवल शुरुआत है छात्र हितों से कोई समझौता नहीं किया जाएगा।' कार्यक्रम में प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष कुंवर चतुर्वेदी ,पूर्व जिला संयोजक सौरभ चौबे और मृगांक दुबे,प्रान्त कार्यकारणी सदस्य सत्यम शुक्ला,धर्मेश,अमन सिंह,गोलू,आलोक सोनकर,हर्ष चौबे,सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

स्प्राउट्स खाने से हो सकता है नुकसानःये 7 बातें ध्यान रखें, डाइटीशियन से जानें किन लोगों को नहीं खाना चाहिए

नयी दिल्ली। जो लोग अपनी फिटनेस का खास ध्यान रखते हैं, उनके लिए स्प्राउट्स (अंकुरित) एक बेहतरीन सुपरफूड है। यह प्रोटीन, फाइबर, विटामिन और मिनरल्स से भरपूर होता है, जिससे न सिर्फ शरीर को पर्याप्त एनर्जी मिलती है, बल्कि इम्यून सिस्टम भी मजबूत होता है। यही वजह है कि हेल्थ कॉन्शियस लोग इसे डाइट में शामिल करते हैं। हालांकि डाइट में शामिल करते समय कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कई बार थोड़ी सी भी लापरवाही सेहत के लिए नुकसानदायक हो सकती है। स्प्राउट्स हमारी सेहत के लिए कब नुकसानदायक हो सकते हैं? किन लोगों को स्प्राउटस खाने से परहेज करना चाहिए?

एक्सपर्ट- अनु अग्रवाल, डाइटीशियन और 'वनडाइटदुडे' की फाउंडर बताएंगी सवाल जवाब के माध्यम से- पहला सवाल- स्प्राउट्स क्या है? जवाब- स्प्राउट्स वे बीज होते हैं, जो कुछ घंटों या दिनों तक पानी में भिगोने और उचित नमी और तापमान में रखने के बाद अंकुरित होने लगते हैं। ये पोषण से भरपूर होते हैं और इन्हें सलाद, सैंडविच, सब्जियों, या अन्य खाने की चीजों में इस्तेमाल किया जाता है। सवाल- कौन-कौन से बीज और दालें स्प्राउट किए जा सकते हैं? जवाब- मूंग दाल, मसूर दाल, चना (काला और सफेद), मेथी दाना, गेहूं, रागी, सोयाबीन, राजमा, मटर या लोबिया के बीज और सूरजमुखी के बीज स्प्राउट किए जा सकते हैं। ये सभी पोषण से भरपूर होते हैं और पाचन के लिए फायदेमंद माने जाते हैं। सवाल- कच्चे स्प्राउट्स को खाने से क्या जोखिम हो सकता है? जवाब- डाइटीशियन अनु अग्रवाल बताती हैं कि अगर स्प्राउट्स को अच्छी तरह से धोया या सही तरीके से स्टोर नहीं किया जाए तो उनमें बैक्टीरिया संक्रमण का खतरा बढ़ सकता है। स्प्राउट्स के अंकुरण के लिए गर्म और नम वातावरण चाहिए होता है, जो साल्मोनेला, ई. कोलाई और लिस्टीरिया जैसे हानिकारक बैक्टीरिया के पनपने के लिए आदर्श स्थिति बनाता है। सवाल- स्प्राउट्स हमारी सेहत के लिए नुकसानदायक कैसे हो सकते हैं? जवाब- डाइटीशियन अनु अग्रवाल बताती हैं कि स्प्राउट्स पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं और सेहत के लिए फायदेमंद होते हैं, लेकिन इन्हें खाने से पहले सही तरीके से स्टोर और साफ करना जरूरी है। स्प्राउट्स गर्म और नम वातावरण में उगते हैं, जहां साल्मोनेला और ई. कोलाई जैसे हानिकारक बैक्टीरिया आसानी से पनप सकते हैं। अगर इन्हें अच्छी तरह न धोया जाए या गलत तरीके से स्टोर किया जाए तो यह फूड पॉइजनिंग, गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल इन्फेक्शन और अन्य पाचन संबंधी समस्याओं का कारण बन सकते हैं। सवाल- स्प्राउट्स खाते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? जवाब- स्प्राउट्स का सेवन हेल्दी है, लेकिन इन्हें सुरक्षित बनाने के लिए कुछ जरूरी सावधानियां बरतनी चाहिए। सही तरीके से धोना, पकाना और स्टोर करना साल्मोनेला या ई. कोलाई जैसे बैक्टीरिया से बचा सकता है।सवाल- स्प्राउट्स खाने का सबसे सही समय कौन सा है? जवाब- डाइटीशियन अनु अग्रवाल के अनुसार, स्प्राउट्स खाने का सबसे अच्छा समय सुबह नाश्ते में या दोपहर के खाने से पहले है। इस समय शरीर इन्हें आसानी से पचा लेता है और इनके पोषक तत्वों का बेहतर उपयोग कर पाता है। वहीं रात में कच्चे स्प्राउट्स खाने से बचना चाहिए क्योंकि इनमें मौजूद अधिक फाइबर और एंजाइम धीमे पाचन के दौरान गैस, पेट फूलना या अपच जैसी समस्याएं पैदा कर सकते हैं। सवाल- क्या स्प्राउट्स वजन घटाने में मददगार हैं? जवाब- हां, स्प्राउट्स वजन घटाने में मददगार हो सकते हैं। इनमें कैलोरी कम और फाइबर अधिक होता है, जो लंबे समय तक पेट भरा महसूस कराता है और ओवरईटिंग से बचाता है। साथ ही इनमें मौजूद प्रोटीन मसल्स बनाने और फैट बर्न करने में सहायक होता है। हालांकि बेहतर परिणाम के लिए इन्हें संतुलित मात्रा में और संतुलित डाइट के साथ ही शामिल करना चाहिए।सवाल- क्या स्प्राउट्स को पकाकर खाने से उनके पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं? जवाब- हां, स्प्राउट्स को ज्यादा पकाने पर विटामिन सी और बी जैसे कुछ हीट-सेंसिटिव पोषक तत्व कम हो सकते हैं। हालांकि हल्का स्टीम करना या थोड़ा उबालना बेहतर विकल्प है। इससे बैक्टीरिया का खतरा घटता है और अधिकांश पोषक तत्व भी सुरक्षित रहते हैं। सवाल- क्या पैकेज्ड या मार्केट से खरीदे स्प्राउट्स सुरक्षित होते हैं? जवाब- जरूरी नहीं कि पैकेज्ड या बाजार से खरीदे गए स्प्राउट्स हमेशा सुरक्षित हों। अगर उनकी स्टोरेज या हैंडलिंग सही तरीके से न हुई हो तो उनमें बैक्टीरिया संक्रमण का खतरा बना रहता है। इसलिए खरीदते समय एक्सपायरी डेट जांचें, पैकिंग में बदबू, नमी या फफूंदी के लक्षण न हों और घर लाने के बाद इन्हें अच्छी तरह धोकर ही इस्तेमाल करें। सवाल- स्प्राउट्स को खराब होने से कैसे बचाएं? जवाब- स्प्राउट्स को खराब होने से बचाने के लिए उन्हें हमेशा एयरटाइट कंटेनर में रखकर फ्रिज में स्टोर करें और 2-3 दिन के भीतर इस्तेमाल कर लें। नमी और गर्मी में ये जल्दी खराब हो सकते हैं। हल्का उबालने या स्टीम करने से इनकी शेल्फ लाइफ थोड़ी बढ़ सकती है। अगर इनमें बदबू, चिपचिपापन या रंग बदलने के संकेत दिखें तो इन्हें तुरंत फेंक दें। सवाल- बच्चों को स्प्राउट्स कब और कैसे देने चाहिए? जवाब- छोटे बच्चों (1-5 वर्ष) को कच्चे स्प्राउट्स देने से बचना चाहिए, क्योंकि उनका पाचन और इम्यून सिस्टम पूरी तरह विकसित नहीं होता है। 6 वर्ष से ऊपर के बच्चों को स्प्राउट्स धीरे-धीरे और डॉक्टर या डाइटीशियन की सलाह से शुरू कर सकते हैं।

एशिया कप में बिना स्पॉन्सर के उतरेगी टीम इंडिया,एसीसी के वीडियो में दिखी भारतीय जर्सी की झलक, ड्रीम-11 का नाम हटा

नयी दिल्ली। टीम इंडिया क्रिकेट एशिया कप में बिना जर्सी स्पॉन्सर के उतरेगी। एशियन क्रिकेट काउंसिल ने शनिवार को टीम इंडिया का वीडियो पोस्ट किया। वीडियो में देखा जा सकता है कि नई जर्सी में कोई भी स्पॉन्सर का नाम नहीं है। जर्सी की बाएं ओर बीसीसीआई का लोगो है, जबकि दाहिने तरफ डीपी वर्ल्ड एशिया कप 2025 लिखा हुआ है। डीपी वर्ल्ड एशिया कप 2025 का स्पॉन्सर है। इसके अलावा जर्सी पर केवल इंडिया का नाम लिखा हुआ है। 22 अगस्त को सरकार के ऑनलाइन गेमिंग एक्ट-2025 लागू करने के बाद ड्रीम-11 ने बीसीसीआई के साथ करार खत्म किया था। इसके बाद बीसीसीआई ने 2 सितंबर को जर्सी स्पॉन्सरशिप के लिए टेंडर जारी किया था। टेंडर खरीदने की आखिरी तारीख 12 सितंबर है। स्पॉन्सरशिप की बोली लगाने की अंतिम तारीख 16 सितंबर तय की गई है। वहीं, एशिया कप की शुरुआत 9 सितंबर से हो रही है। ड्रीम 11 और बीसीसीआई के बीच डील रद्द हुई ड्रीम 11 और बीसीसीआई में करार खत्म हो गया है। साल 2023 में ड्रीम 11 टीम इंडिया की जर्सी स्पॉन्सर बनी थी। ये डील 3 सालों के लिए थी, लेकिन वक्त से 6 महीने पहले ही ये डील रद्द हो गई। केंद्र सरकार ने अगस्त में ऑनलाइन गेमिंग एक्ट में बड़ा बदलाव किया और पैसों की लेन देन करने वाले ऐप्स को बैन कर दिया। इसके बाद ड्रीम 11 को बड़ा झटका लगा। अब बीसीसीआई नए जर्सी स्पॉन्सरशिप की तलाश में है। एशिया कप 9 सितंबर से शुरू होगा एशिया कप 2025 की शुरुआत 9 सितंबर से होगी। भारतीय टीम को पहला मुकाबला 10 सितंबर को यूएई के खिलाफ खेलना है। इसके बाद भारत और पाकिस्तान के बीच मुकाबला 14 सितंबर को खेला जाएगा। वहीं 19 सितंबर को टीम इंडिया ओमान के खिलाफ खेलेगी।

टीम इंडिया की दुबई में एशिया कप की तैयारी शुरू,आईसीसी अकादमी में अभ्यास के दौरान सैमसन और बुमराह बातचीत करते हुए दिखे

नयी दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम ने शुक्रवार को दुबई के आईसीसी अकादमी में टी-20 एशिया कप 2025 के लिए अपने पहले अभ्यास सत्र के साथ तैयारियां शुरू कर दी हैं। कप्तान सूर्यकुमार यादव की अगुआई में टीम इस आठ देशों के टूर्नामेंट में अपनी दूसरा टी-20 खिताब जीतने के इरादे से उतरेगी। टूर्नामेंट की शुरुआत 9 सितंबर से होगी।अभ्यास सत्र में दिखे दिग्गज खिलाड़ी क्रिकेट की वेबसाइट ईएसपीएन क्रिक इंफो की ओर से सोशल मीडिया पर पोस्ट किए गए एक वीडियो में कप्तान सूर्यकुमार यादव, मुख्य कोच गौतम गंभीर, ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या, संजू सैमसन, तिलक वर्मा, गेंदबाजी कोच मोर्ने मोर्कल, स्पिन जोड़ी वरुण चक्रवर्ती और कुलदीप यादव, रिंकू सिंह सहित कई खिलाड़ी आईसीसी अकादमी में अभ्यास के लिए जाते दिखे। अभ्यास के दौरान विकेटकीपर-बल्लेबाज संजू सैमसन और अनुभवी तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को आपस में बातचीत करते हुए भी देखा गया।लंबे ब्रेक के बाद पहला बड़ा टूर्नामेंट इंग्लैंड के खिलाफ आखिरी टेस्ट सीरीज के बाद भारतीय टीम लगभग एक महीने के ब्रेक के बाद इस बड़े टूर्नामेंट में हिस्सा ले रही है। यह टी-20 फॉर्मेट में भारत का पहला प्रमुख टूर्नामेंट है। टीम प्रबंधन ने बीसीसीआई सेंटर ऑफ एक्सिलेंस में कोई तैयारी कैंप आयोजित नहीं किया और इसके बजाय खिलाड़ियों को दुबई में जल्दी पहुंचकर वहां के मौसम और परिस्थितियों के साथ तालमेल बिठाने का मौका दिया। बुमराह की टी-20 फॉर्मेट में वापसी बुमराह की टी-20 फॉर्मेट में वापसी हो रही है। उन्होंने आखिरी बार 2024 टी-20 वर्ल्ड कप फाइनल में ब्रिजटाउन में खेला था, जहां उनके 2/18 के शानदार प्रदर्शन ने भारत को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ सात रन से जीत दिलाई थी। बुमराह को उस टूर्नामेंट में 15 विकेट के साथ प्लेयर ऑफ द सीरीज चुना गया था।

इस साल की शुरुआत में इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू टेस्ट सीरीज में दो टेस्ट मिस करने के बाद आलोचनाओं का सामना करने वाले बुमराह 40 दिन के ब्रेक के बाद टीम में लौटे हैं। अभ्यास के दौरान उन्हें अभिषेक शर्मा के साथ हल्की-फुल्की बातचीत करते देखा गया। हार्दिक पांड्या और संजू सैमसन ने भी खींचा ध्यान स्टार ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या अपने नए ब्लॉन्ड हेयर स्टाइल के साथ चर्चा में रहे। उन्होंने प्रशंसकों के साथ बातचीत की और ऑटोग्राफ भी दिए।

वहीं, संजू सैमसन को फील्डिंग कोच और मुख्य कोच गौतम गंभीर के साथ बातचीत करते देखा गया।

भारत अपने अभियान की शुरुआत 10 सितंबर से करेगा भारत अपने टी-20 एशिया कप अभियान की शुरुआत 10 सितंबर को यूएई के खिलाफ करेगा। इसके बाद 14 सितंबर को भारत-पाकिस्तान मुकाबला दुबई में होगा। ग्रुप स्टेज का आखिरी मैच भारत 19 सितंबर को अबू धाबी में ओमान के खिलाफ खेलेगा।

अंकुरित आलू में टॉक्सिक कंपाउंड,खाने से हो सकती हैं 6 हेल्थ प्रॉब्लम्स, जानें आलू को स्टोर करने का सही तरीका

नयी दिल्ली। यूनाइटेड नेशन के फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गेनाइजेशन के मुताबिक, आलू दुनियाभर में सबसे ज्यादा खाई जाने वाली सब्जियों में से एक है। ये कई सारे जरूरी पोषक तत्वों से भरपूर होता है। लेकिन अगर आलू अंकुरित हो जाते हैं तो इसे खाने से कई गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। अंकुरित आलू वे होते हैं, जिनमें अंकुर यानी 'आंखें' उगने लगती हैं। ये अक्सर तब होता है, जब उन्हें लंबे समय तक स्टोर किया जाता है। अक्सर वे क्लोरोफिल के कारण हरे रंग के हो जाते हैं, जो प्रकाश के संपर्क में आने पर बनता है। नेशनल कैपिटल पॉइजन सेंटर मुताबिक, अंकुरित आलू सेहत के लिए सही नहीं होते हैं। इसमें सोलेनाइन और चाकोनाइन जैसे कुछ टॉक्सिक तत?व होते हैं। इसकी टॉक्सिसिटी से कई हेल्थ प्रॉब्लम्स हो सकती हैं। जानेंगे कि- सवाल जवाब के माध्यम से एक्सपर्टः डॉ. पूनम तिवारी, सीनियर डाइटीशियन, डॉ. राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ जी से साथ ही साथ क्या अंकुरित आलू खाने से किस तरह की स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं? आलू को स्टोर करने का सही तरीका क्या है? सवाल- किन वजहों से आलू जल्दी अंकुरित होते हैं? जवाब- आलू जमीन के नीचे उगने वाली सब्जी है, जिसमें नमी और स्टार्च की मात्रा ज्यादा होती है। यही कारण है कि यह जल्दी अंकुरित हो जाता है। गर्म और नमी वाली जगह पर रखे आलू तेजी से अंकुरित होने लगते हैं। इसी तरह जब आलू पर रोशनी पड़ती है तो उनमें क्लोरोफिल बनने लगता है और अंकुर निकल आते हैं। अगर आलू को ऐसी जगह रखा जाए, जहां हवा न मिले तो वे जल्दी पसीज जाते हैं और अंकुरण शुरू हो जाता है। लंबे समय तक रखने पर आलू अपनी नेचुरल प्रोसिजर से भी अंकुरित होने लगते हैं। इसके अलावा प्याज-लहसुन जैसी सब्जियां इथिलीन गैस छोड़ती हैं, जो आलू के अंकुरण को तेज करती हैं। कुल मिलाकर यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। ये अंकुर वास्तव में नए आलू के पौधे होते हैं। सवाल- क्या अंकुरित आलू में न्यूट्रिशन की कमी हो जाती है? जवाब- जब आलू अंकुरित होने शुरू होते हैं तो यह नए अंकुरों के ग्रोथ के लिए अपने न्यूट्रिएंट्स का इस्तेमाल करते हैं। इससे आलू की न्यूट्रिशनल वैल्यू में कमी आ सकती है। आलू विटामिन सी का एक अच्छा स्रोत है, लेकिन अंकुरित होने पर इसकी मात्रा कम हो जाती है। अंकुरण की प्रक्रिया में आलू में मौजूद स्टार्च शुगर में परिवर्तित हो जाता है, जिससे उसका ग्लाइसेमिक इंडेक्स बढ़ जाता है। इसके अलावा अंकुरित आलू में अन्य विटामिन और मिनरल्स जैसे पोटेशियम, विटामिन बी, फाइबर और एंटीऑक्सिडेंट्स की मात्रा भी कम हो जाती है। सवाल- अंकुरित आलू खाने से कौन सी स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं? जवाब- अंकुरित आलू में सोलेनाइन और चाकोनाइन नामक टॉक्सिक ग्लाइकोएल्कलॉइड होते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक हो सकते हैं। इसकी ज्यादा मात्रा से मतली, उल्टी, दस्त और पेट में ऐंठन हो सकती है। इसलिए अंकुरित आलू खाने से बचना चाहिए। अंकुरित आलू खाने से फूड पॉइजनिंग का खतरा बढ़ जाता है। इसके अलावा कुछ और भी समस्याएं हो सकती हैं।सवाल- अंकुरित आलू खाना किन लोगों के लिए ज्यादा नुकसानदायक हो सकता है? जवाब- सीनियर डाइटीशियन डॉ. पूनम तिवारी बताती हैं कि ताजे आलू की तुलना में अंकुरित आलू ब्लड शुगर लेवल को तेजी से बढ़ा देता है। यही कारण है कि डायबिटिक मरीजों को इसे बिल्कुल भी नहीं खाना चाहिए। इसके अलावा कुछ और लोगों के लिए भी अंकुरित आलू स्वास्थ्य के लिहाज से खतरनाक साबित हो सकते हैं। जैसेकि- गर्भवती महिलाएं, छोटे बच्चे और बुजुर्ग। पाचन संबंधी समस्याओं से जूझ रहे लोग। न्यूरोलॉजिकल प्रॉब्लम वाले मरीज। कमजोर इम्यूनिटी वाले व्यक्ति। एलर्जी से पीड़ित लोग। इन सभी लोगों में अंकुरित आलू से होने वाले सोलनाइन टॉक्सिसिटी का खतरा ज्यादा होता है, जो पेट दर्द, उल्टी, सिरदर्द और चक्कर जैसी गंभीर समस्याएं पैदा कर सकता है। सवाल- आलू को कैसे स्टोर करें कि वह जल्दी अंकुरित न हो? जवाब- आलू को अंकुरित होने से बचाने के लिए उसे ठंडी, अंधेरी और हवादार जगह पर 45-50° (7-10°f) के बीच स्टोर करें। इन्हें कभी भी फ्रिज में स्टोर न करें क्योंकि ठंडक स्टार्च को शुगर में बदल देती है और आलू का स्वाद मीठा हो जाता है। आलू को प्याज या नमी वाली सब्जियों के पास न रखें। इन्हें जालीदार थैले या पेपर बैग में रखें ताकि हवा आती-जाती रहे। आलू को ज्यादा समय तक न रखें, समय-समय पर खराब या अंकुरित आलू को अलग करते रहें। इसके अलावा कुछ और बातों का ख्याल रखें।सवाल- अंकुरित आलू को फेंकने की बजाय और किस काम में लाया जा सकता है? जवाब- खाने या फेंकने की बजाय अंकुरित आलू का उपयोग कई अन्य कामों में किया जा सकता है। जैसेकि- अंकुरित आलू को छोटे टुकड़ों में काटकर कंपोस्ट बिन में डाल दें। सड़ने के बाद यह मिट्टी में पोषक तत्व बढ़ाकर पौधों की ग्रोथ के लिए फायदेमंद साबित होंगे। अंकुरित आलू को पीसकर उसका रस पौधों पर छिड़कें। यह एक नेचुरल पेस्टिसाइड की तरह काम करता है और छोटे कीड़ों को दूर रखने में मदद करता है। आलू का रस स्किन पर लगाने से टैनिंग और डार्क स्पॉट्स कम करने में मदद मिलती है। हालांकि इसे लगाने से पहले पैच टेस्ट करना जरूरी है। अंकुरित आलू को गमले या खेत की मिट्टी में लगा सकते हैं। इससे नए आलू के पौधे उग जाते हैं।

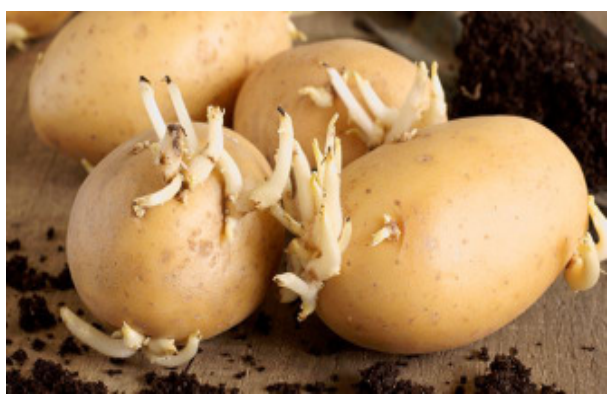

मरीज के गॉल ब्लैडर से निकलीं 8125 पथरी,इन 10 लोगों को स्टोन का रिस्क ज्यादा,कारण व बचाव के तरीके

नयी दिल्ली। हाल ही में गुरुग्राम के फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट से एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। यहां डॉक्टरों ने एक 70 वर्षीय बुजुर्ग मरीज के पित्ताशय से 8,125 स्टोन निकाले। बुजुर्ग व्यक्ति लंबे समय से पेट दर्द, बीच-बीच में बुखार, भूख न लगने, कमजोरी और सीने व पीठ में भारीपन जैसी कई समस्याओं से जूझ रहा था। सर्जरी के बाद अब मरीज को इन समस्याओं से राहत मिली है। मेडिसिन की भाषा में इस बीमारी को गॉलस्टोन कहा जाता है और इसे ठीक करने के लिए जो सर्जरी की जाती है, उसे कोलिसिस्टेक्टॉमी कहते हैं। पिछले कुछ सालों में गॉलस्टोन के मामलों में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। इसका मुख्य कारण हमारी खराब लाइफस्टाइल और असंतुलित खानपान है। ग्लोबल डेटा डॉट कॉम की एक रिपोर्ट के मुताबिक, साल 2022 में भारत में गॉल ब्लैडर से जुड़ी लगभग 32.9 लाख सर्जरी की गई थी। वहीं क्लिनिकल गैस्ट्रोएंटेरोलॉजी एंड हेपेटोलॉजी जर्नल में पब्लिश एक स्टडी के मुताबिक, दुनिया की लगभग 6प्रतिशत आबादी गॉलस्टोन की समस्या से जूझ रही है। अमेरिका में यह आंकड़ा लगभग 15प्रतिशत है। अनुमान है कि आने वाले समय में यह समस्या और भी तेजी से बढ़ सकती है। हालांकि कुछ सावधानियों और लाइफस्टाइल में बदलाव के साथ गॉलस्टोन के खतरे से बचा जा सकता है। गॉल ब्लैडर (पित्त की थैली) पेट के दाहिनी ओर, लिवर के ठीक नीचे स्थित एक छोटा नाशपाती के आकार का अंग है। यह पित्त को स्टोर करता है और जरूरत पड़ने पर उसे छोटी आंत में छोड़ता है। पित्त का काम भोजन में मौजूद फैट को छोटे-छोटे हिस्सों में तोड़कर उन्हें पचाने में मदद करना है। वहीं जब गॉल ब्लैडर में पथरी (स्टोन) बन जाती है तो इसका सीधा असर पाचन तंत्र पर पड़ता है। इससे खाना पचाना मुश्किल हो जाता है और पेट दर्द, अपच जैसी समस्याएं होने लगती हैं।जब हमारे पित्ताशय के भीतर मौजूद पित्त में कोलेस्ट्रॉल, बिलीरुबिन जैसे तत्वों की मात्रा बढ़ जाती है तो ये अतिरिक्त तत्व पित्ताशय की दीवारों पर जमा होने लगते हैं। समय के साथ ये कठोर होकर पथरी यानी स्टोन का रूप ले लेते हैं। आइए जानते हैं कि ऐसे कौन-से कारण हैं, जो पित्ताशय में स्टोन का कारण बन सकते हैं।अगर आप ज्यादा फैट खा रहे हैं और आपके खून में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बहुत ज्यादा बढ़ गई है तो पित्त में भी इसकी मात्रा बढ़ जाएगी। वह एक्स्ट्रा कोलेस्ट्रॉल पित्ताशय की दीवारों पर जमा हो जाता है और धीरे-धीरे स्टोन का रूप ले लेता है।बिलीरुबिन एक बाय-प्रोडक्ट है, जो रेड ब्लड सेल्स के टूटने से बनता है। अगर शरीर में बहुत अधिक बिलीरुबिन है तो इसका कारण यह हो सकता है कि व्यक्ति को कोई ब्लड डिसऑर्डर है, जो बहुत अधिक रेड ब्लड सेल्स को खराब कर रहा है या फिर लिवर में कोई समस्या है। जरूरत से ज्यादा बिलीरुबिन भी पित्ताशय में स्टोन का कारण बन सकता है।कुछ बीमारियां 'बाइल एसिड मालएब्सॉर्प्शन' का कारण बन सकती हैं, जिसका मतलब है कि शरीर से शौच के रास्ते बहुत ज्यादा बाइल एसिड निकल रहा है। बाइल एसिड की कमी के कारण पित्त में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे पथरी बनने का खतरा होता है।अगर गॉल ब्लैडर ठीक ढंग से काम नहीं कर पाता है तो वह पित्त को खाली नहीं कर पाता है। ऐसे में पित्त गाढ़ा होकर जमने लगता है और स्टोन बनने लगते हैं।कुछ लोगों में गॉलस्टोन का खतरा ज्यादा होता है। इसकी वजहें शरीर की स्थिति, लाइफस्टाइल या जेनेटिक्स से जुड़ी हो सकती हैं।गॉलस्टोन के कई मामलों में कोई लक्षण नहीं दिखाई देते, इसलिए इसे 'साइलेंट स्टोन' भी कहा जाता है। लेकिन जब यह स्टोन पित्त नली में फंस जाते हैं तो तेज दर्द के साथ मतली, उल्टी और पीलिया जैसे लक्षण हो सकते हैं। इसका सबसे बेहतर इलाज गॉल ब्लैडर हटाने की सर्जरी है। ये आमतौर पर लेप्रोस्कोपिक तकनीक से होती है और बहुत सुरक्षित मानी जाती है। इसे निकालने के बाद भी व्यक्ति सामान्य जीवन जी सकता है क्योंकि सर्जरी के बाद पित्त सीधा लिवर से छोटी आंत में पहुंचता है। अगर गॉल ब्लैडर में ज्यादा सूजन, इन्फेक्शन या जख्म हो तो डॉक्टर ओपन सर्जरी की भी सलाह दे सकते हैं।

'पॉटरी कला' को 'नया योग' क्यों कहा जा रहा है?

इस रविवार, वाट्सएप मैसेज का बैकलॉग चेक करते समय मैंने अपने एक दोस्त के स्टेटस पर तस्वीर देखी। वह क्ले से बनी कुछ सजावटी व प्राचीन चीजों के बीच खड़ा था। जब मैंने ये जानने के लिए तस्वीर पर क्लिक किया कि वो कहां है, तो मैं हैरान रह गया। सफेद पैंट-शर्ट पहने हुए उसके हाथ क्ले में भिड़े थे और वह लालटेन पकड़े था। जब मैंने उसे फोन किया, तो उसने मुझे एक और तस्वीर भेजी। इसमें हमारे कुछ अन्य परिचित भी उसके साथ रविवार की एक पॉटरी क्लास में पोज दे रहे थे। हर कोई पिछले तीन रविवार की क्लास में खुद की बनाई कलाकृति पकड़े था। पहले हफ्ते में उन्होंने कला सीखी, दूसरे हफ्ते में कप, गिलास या फूलदान बनाया और एक हफ्ते तक सूखने दिया। इस रविवार को उन्होंने उसे रंगा। उनके चेहरों पर सुंदर-

झलक रही थी। तभी मुझे एहसास हुआ कि सिरेमिक व पॉटरी (क्ले या मिट्टी से कलात्मक चीजें बनाना) की दुनिया युवाओं के बीच लोकप्रिय हो रही है। यह स्थिरता व आत्म-अभिव्यक्ति का संगम है, जो उनकी व्यस्त जिंदगी में ताजगी भरी राहत प्रदान करती है। आज के समय में जब वेलनेस ट्रेंड्स तेजी से बदल रहे हैं, प्राचीनतम कलाओं में से एक पॉटरी एक बार फिर से लोकप्रिय हो रही है। कई युवा मानते हैं कि यह कला, मानसिक शांति और आराम का सही मिश्रण है, जो योग या ध्यान के समान एक चिकित्सीय अनुभव प्रदान करती है। चाहे आप रचनात्मक पुनरुत्थान की तलाश में हों, तनाव से राहत चाहते हों, या आत्म-अभिव्यक्ति का माध्यम खोज रहे हों, पॉटरी एक नया क्लासरूम बन गया है। पिछले आठ-दस वर्षों में यह अपमार्केट सर्कल में एक ट्रेंड बन गया है। 1 से 12 हफ्तों के ये कार्यक्रम शहरी युवाओं को आकर्षित कर रहे हैं? पहला कारण इसकी पहुंच है और दूसरा ध्यान केंद्रित करने वाला गुण। पहले क्ले पकाने के लिए भट्टी एक बड़ी बाधा थी, पर आज ये छोटे एयर कंडीशंड स्टूडियो में उपलब्ध हैं। दबाव में काम करने वाले अधिकांश युवा समझ चुके हैं कि पॉटरी के चिकित्सीय लाभ हैं। मेरे एक मित्र ने कहा, 'ये ध्यान की तरह है, जो आपको दिनचर्या से अलग करने में मदद करता है। 'अधिकांश शिक्षित लोग इस प्राचीन कला की ओर लौट रहे हैं क्योंकि यह न केवल विज्ञान है, जिसमें सामग्री, ऑक्साइड, फायरिंग, ग्लेजिंग का ज्ञान जरूरी है, बल्कि कला भी है, जिसमें पेंटिंग है। आप ताज्जुब कर रहे होंगे कि आखिर क्यों पॉटरी लोकप्रिय वेलनेस ट्रेंड बनता जा रहा है? इसके पीछे कई कारण हैं। 1. माइंडफुलनेस व मेडिटेशनः मिट्टी के साथ काम करने के लिए फोकस की जरूरत है, इससे मानसिक उथल-पुथल कम होती है। बार-बार चाक घुमाकर बर्तन बनाना या हाथ से आकार देना, दोनों ही क्रियाएं ध्यान की तरह शांतिप्रद और थेरेप्यूटिक होती हैं। 2. तनाव में कमीः मिट्टी को आकार देने का स्पर्श अनुभव व रचनात्मक प्रक्रिया दैनिक चिंताओं से ध्यान हटाने में मदद करती है। इसका सीधा असर होता है कि यह कोर्टिसोल को कम करता है। कोर्टिसोल एक ऐसा हार्मोन है जो तनाव और चिंता से जुड़ा होता है। 3. थेरेप्यूटिक लाभः कुछ लोगों के लिए शब्दों में अपनी बात कहना मुश्किल होता है। उनके लिए कुछ बनाना एक प्रकार का संवाद है। इसका एक स्पष्ट लाभ यह है कि यह स्क्रीन से डिस्कनेक्ट कर प्राकृतिक स्व के साथ जुड़ने का मौका देता है। पॉटरी मूर्त कला के माध्यम से आत्म-अभिव्यक्ति की अनुमति देता है। यह प्रक्रिया आत्म-सम्मान और उपलब्धि की भावना को बढ़ा सकती है। 4. शारीरिक लाभः फायदों की सूची में ये सबसे निचले क्रम पर हो सकते हैं। लेकिन मिट्टी को गूंथने, आकार देने और मोल्ड करने की शारीरिक क्रिया उन लोगों के लिए फायदेमंद हो सकती है जो शारीरिक चोटों से उबर रहे हैं। मिट्टी के साथ काम करना फाइन मोटर स्किल्स और हाथ की दक्षता में सुधार कर सकता है। फंडा यह है कि पॉटरी कला युवाओं को उनकी व्यस्त जिंदगी से बचने का मौका देता है। यह कला, माइंडफुलनेस और रिलैक्सेशन का मिश्रण है और इस तरह यह 'नया योग' बनती जा रही है।

बुरी जीत से अच्छा है, शान से हार जाएं

1960 में दक्षिण अफ्रीका में जन्मे केविन कार्टर रंगभेद युग में पले-बढ़े थे। गोरे होने के नाते उन्हें कई विशेषाधिकारों का आनंद लिया, पढ़ाई की और वायुसेना में शामिल हुए। 1980 में भेदभाव का सामना कर रहे एक अश्वेत का बचाव करने पर उन्हें पीटा गया। यह घटना उनकी जागृति का महत्वपूर्ण मोड़ बनी। 1983 में उन्होंने कुछ भयानक बम विस्फोट देखे और हिंसा से खिन्न होकर उन्होंने रंगभेद की भयावहता को उजागर करने के लिए खुद को समर्पित कर दिया। 1984 में वे जोहान्सबर्ग स्टार अखबार के फोटोग्राफर बन गए। अगले 10 वर्षों में केविन को विरोध प्रदर्शनों, अंतिम संस्कारों और पुलिस व रंगभेद विरोधी कार्यकर्ताओं के बीच झड़पों की तस्वीरें लेने के लिए कई बार गिरफ्तार किया गया। 1993 में कार्टर को सूडान में एक असाइनमेंट मिला। सूखे और गृहयुद्ध से बर्बाद इस देश पर दुनिया के मीडिया ने तब तक बहुत कम ध्यान दिया था। केविन संयुक्त राष्ट्र के एक फूड-कैम्प में पहुंचे। वहां उन्होंने एक बच्ची को देखा, जो अकाल से ग्रस्त होकर मिट्टी में पड़ी थी। उसके बगल में एक गिद्ध लालचपूर्ण-धैर्य के साथ

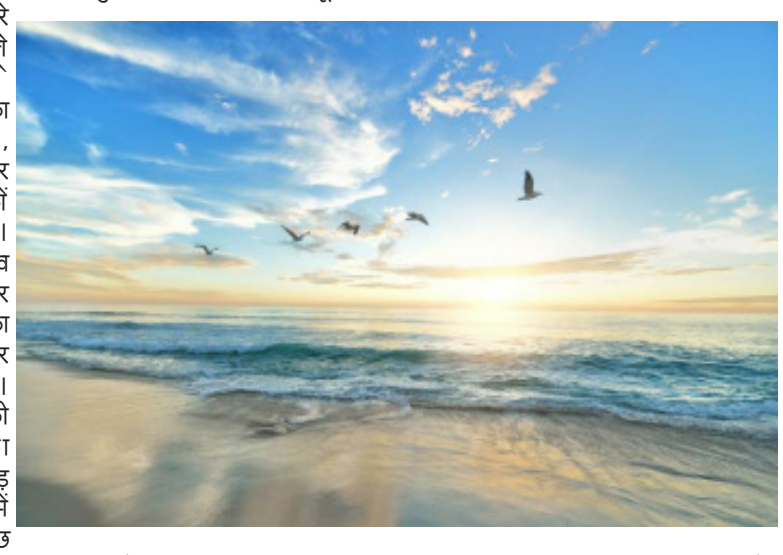

उसके मरने का इंतजार कर रहा था। केविन के शरीर की हर रग उस भयावह दृश्य को देखकर चीख उठी। उन्होंने यंत्रवत ही कैमरा उठाया और अनेक छायाचित्रों में हर कोण से उस बच्ची की पीड़ा को कैमरे में कैद कर लिया। उन्हें इस त्रासदी को दुनिया के सामने लाने वाला भयावह दृश्य मिल गया था। कुछ खबरों के मुताबिक केविन ने गिद्ध को भगा दिया था और उस कृशकाय बच्ची को उठाकर उसके कानों में फुसफुसाते हुए उसे सांत्वना दी थी कि जल्द ही सब ठीक हो जाएगा। फिर उन्होंने बच्ची को बचाव दल को सौंप दिया था। लेकिन उन्हें नहीं पता था कि यह तस्वीर उन्हें आजीवन परेशान करेगी। वापस लौटने पर उन्हें इस तस्वीर के लिए प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाजा गया। लेकिन प्रशंसा के साथ-साथ आलोचना और पड़ताल भी हुई। कई लोगों ने उनके इरादों पर सवाल उठाए और उन पर अपने निजी मकसद के लिए एक बच्ची की पीड़ा का फायदा उठाने का आरोप लगाया। अप्रैल 1994 में जब केविन को पुलित्जर पुरस्कार मिला तो यह उनके लिए सबसे बड़ी उपलब्धि होनी चाहिए थी। लेकिन वह पुरस्कार उन्हें अपने उस असहनीय अपराध-बोध की याद दिलाने लगा। मुझे 1994 में जोहान्सबर्ग में केविन से मिलने का मौका मिला था, जब मैं नेल्सन मंडेला के दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति बनने की घटना को कवर कर रहा था। इसके चार महीने बाद ही केविन ने 33 साल की उम्र में आत्महत्या कर ली। उसी साल (1994) और उसी देश (सूडान) से आठ साल के गुओर मारिअल गृह युद्ध के दौरान दक्षिण सूडान के एक शरणार्थी शिविर से भाग निकले थे। एक रात सैनिकों ने उनके घर पर छापा मारा था और एक राइफल के प्रहार से उनका जबड़ा तोड़ दिया था। वे बेहोश हो गए। बाद में उन्होंने खुद को एक शरणार्थी शिविर में पाया। उनके परिवार के 28 सदस्य मारे गए, लेकिन वे मिस्र भागने में सफल रहे, और फिर 16 साल की उम्र में स्थायी रूप से अमेरिका चले गए। चूंकि वे बचपन से ही सशस्त्र विद्रोहियों से भागते आ रहे थे, इसलिए 28 की उम्र में उन्हें 2012 के लंदन ओलिम्पिक में मैराथन के लिए प्रतिस्पर्धा करने का अवसर मिला। तब सवाल उठा कि वे किस देश का झंडा लेकर चलेंगे? वे अमेरिकी नागरिक नहीं थे और उनकी मातृभूमि दक्षिण सूडान को 2011 में ही एक स्वतंत्र देश का दर्जा मिला था। वह देश ओलिम्पिक में सम्मिलित होने की पात्रता को पूरा नहीं कर पाया था। यही कारण था कि जब गुओर के समक्ष सूडान का झंडा लेकर चलने की पेशकश की गई, तो उन्होंने विनम्रता से मना कर दिया। क्योंकि सूडान से हुआ गृहयुद्ध ही उनके परिवार की हत्या के लिए जिम्मेदार था। उन्होंने ओलिम्पिक ध्वज उठाया और वे पहले या तीसरे नहीं, बल्कि 47वें स्थान पर रहे। लेकिन पूरी दुनिया और मीडिया ने उनकी 'विजयी' हार का जश्न मनाया, क्योंकि उन्होंने मात्र एक साल पुराने एक देश को पहचान दी थी। फंडा यह है कि तय करें हमारे बच्चों को क्या चुनना चाहिए- एक विजयी हार को अपनाना या एक बुरी जीत का आनंद लेना।

अच्छी सड़कें सिर्फ जोड़ती नहीं हैं, जीवन को भी समृद्ध बनाती हैं

चेन्नई से 300 किलोमीटर दूर-दराज के एक गांव में एक महिला प्रसव पीड़ा में थीं। उन्हें मदद की जरूरत थी। बच्चा जन्म लेने वाला था। लेकिन उन्हें अस्पताल ले जाने के लिए सिर्फ सात किमी की दूरी तय करने में कई घंटे लग जाते। लेकिन यह जोखिम भरा था क्योंकि रास्ते उबड़-खाबड़ थे, कावेरी नदी उफान पर थी और गर्भवती महिला के साथ तैरकर पार करना संभव नहीं था। ऐसे में सबसे आसान और तेज विकल्प था कि दाई को बुलाया जाए। वह दाई उन सैकड़ों पारंपरिक दाइयों में से एक थी जो आसपास के कई गांवों में प्रसव कराती थीं। दाई पहुंची और उन्होंने सबसे पहले महिला से कहा, 'धैर्य रखो, हम मिलकर बच्चे को जन्म देंगे, बस हम पर भरोसा रखो।' इन शब्दों ने महिला को आत्मविश्वास दिया और उन्हें थोड़ा सुकून मिला। गांव की सभी महिलाएं उस घर के सामने इकट्ठा हो गईं। पुरुषों को थोड़ी दूरी पर खड़ा रहने को कहा गया ताकि दाई को कुछ जरूरत हो तो वे बाजार से ला सकें। और अचानक सभी महिलाएं खुशी से झूम उठीं, जैसे क्रिकेट स्टेडियम में छक्का लगने पर होता है। यह खुशी नवजात के रोने की आवाज सुनकर थी। गली के कोने पर खड़े पुरुषों ने भी राहत की सांस ली। कुछ ने आसमान की ओर देखकर भगवान का धन्यवाद किया, तो कुछ ने अपनी गर्दन में लटके लॉकेट को उतारकर सम्मानपूर्वक अपनी आंखों पर लगाया। यह घटना 1940 की है और इसी तरह

मेरी मां का जन्म हुआ था। एक दशक बाद जब उनके सबसे छोटे भाई का जन्म हुआ, तो यह दृश्य दोबारा नहीं देखा गया, क्योंकि तब तक वहां पक्की सड़क बन चुकी थी और लोग बैलगाड़ी में एक घंटे से भी कम समय में गर्भवती महिलाओं को पास के अस्पताल ले जाने लगे थे। हाल ही में जब मैं उस गांव में गया, तो देखा कि अब वही दूरी, आपस में जोड़ती दो लेन की सड़कों के कारण मात्र 15 मिनट में तय हो जाती है। यह पुरानी यादें इस गुरुवार को तब ताजा हो गईं, जब महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और अजीत पवार के साथ नाशिक के इगतपुरी में हिंदू हृदयसम्राट बालासाहेब ठाकरे महाराष्ट्र समृद्धि महामार्ग के अंतिम चरण का उद्घाटन किया। 701 किमी लंबे नागपुर-मुंबई एक्सप्रेसवे के अंतिम 76 किमी खंड के उद्घाटन के साथ ही महायुति द्वारा राज्य के विकास के लिए किया गया वादा पूरा हुआ। यह एक्सप्रेसवे अब राज्य के बंदरगाह आधारित विकास योजना के तहत 24 जिलों को सीधे और अप्रत्यक्ष रूप से बंदरगाहों से जोड़ता है। अपने भाषण में फडणवीस ने कहा कि उनकी सरकार एक और वादा पूरा करेगी, जो है एक्सेस-कंट्रोल्ड शक्तिपीठ हाईवे का निर्माण। महाराष्ट्र के विभिन्न कोनों में चार शक्तिपीठ हैं। इनके जुड़ने से न केवल तीर्थयात्रियों को लाभ होगा, बल्कि इससे मराठवाड़ा के आर्थिक विकास को बल मिलेगा, जिसकी अमेरिका जैसे विकसित देशों के अंतरराज्यीय हाईवे सिस्टम से तुलना की जा सकती है। इसमें कोई शक नहीं कि अमेरिका की सड़कें दुनिया की सबसे बेहतरीन सड़कों में गिनी जाती हैं। खासकर इंटरस्टेट हाईवे सिस्टम देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करता है। ये सड़कें न केवल परिवहन को सुगम बनाती हैं, बल्कि लॉजिस्टिक लागत को भी कम करती हैं। इससे व्यापारियों को व्यापक बाजार तक पहुंच मिलती है। यह नेटवर्क, उत्पादकों को उपभोक्ताओं से जोड़ता है, सुरक्षा में सुधार करता है और आर्थिक उत्पादकता को बढ़ाता है। इससे जीवन स्तर में भी सुधार होता है। सड़कों के निर्माण से स्वास्थ्य सेवाएं भी अंतिम व्यक्ति तक पहुंचती हैं, जो मानव जाति के लिए एक बड़ा लाभ है। इसके अलावा, सड़क नेटवर्क पर्यटन को बढ़ावा देता है, जिससे होटल, रेस्टोरेंट और मनोरंजन जैसे संबंधित उद्योगों को बढ़ावा मिलता है। फंडा यह है कि अच्छी सड़कों का निर्माण केवल कनेक्टिविटी नहीं बढ़ाता, बल्कि जीवन को भी समृद्ध बनाता है। इससे न केवल व्यक्ति, बल्कि पूरा देश भी समृद्ध होता है, क्योंकि इनसे व्यापार और वाणिज्य में उछाल आता है।

भारत अब केवल कूटनीति पर ही निर्भर नहीं रहने वाला है

अब जब ऑपरेशन सिंदूर को एक महीना पूरा होने आया है, उससे जुड़े कुछ निष्कर्षों को ठीक से समझ लेना जरूरी है।

भारत की सेना ने पाकिस्तानी क्षेत्र में आतंकवादी ठिकानों और अन्य फेसिलिटीज पर जोरदार लेकिन ऐहतियाती और टारगेटेड हमला किया था।यहां तक ??कि आक्रमण का समय भी रात को इसलिए चुना गया ताकि नागरिकों को होने वाली क्षति से बचा जा सके। पाकिस्तान हाई-अलर्ट पर था, इसके बावजूद भारत ने सफलतापूर्वक उसकी डिफेंसिव-लाइंस को भेद दिया और अपने लक्ष्यों पर प्रहार करके कुछ आतंकवादियों का खात्मा करने में सफलता पाई। याद रहे कि इन आतंकवादियों के अंतिम संस्कार में उच्च-स्तरीय पाकिस्तानी अधिकारी शामिल हुए थे।इस ऑपरेशन के बाद पाकिस्तान से भारत के इंगेजमेंट्स की शर्तें हमेशा के लिए बदल गई हैं, क्योंकि अब भारत ने सैन्य-कार्रवाई को लेकर झिझक छोड़ दी है। एक अरसे तक कश्मीर मुद्दे के 'अंतरराष्ट्रीयकरण' के अंदेशे ने भारत को निरर्थक कूटनीतिक प्रक्रियाएं अपनाने के लिए प्रेरित किया था, लेकिन उनसे हमें बहुत कम हासिल हो सका। यहां तक ??कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की आतंकवाद प्रतिबंध समिति ने भी लंबे समय तक पाकिस्तान को अपने एक स्थायी सदस्य की छत्रछाया में रहने की अनुमति दी है।भारत अंतरराष्ट्रीय कूटनीति को छोड़ नहीं रहा है, लेकिन अब वह केवल उसी पर निर्भर भी नहीं रहेगा। इसके बजाय, भारत अब आतंकवाद का सैन्य-बल से जवाब देगा और किसी भी जवाबी कार्रवाई का स्पष्ट और दृढ़ संकल्प के साथ सामना भी करेगा। लेकिन भारत पाकिस्तान को उसके परमाणु हथियारों की धौंस दिखाने की अनुमति नहीं देने वाला।2016 में सीमा पार सर्जिकल स्ट्राइक से लेकर 2019 में खैबर पख्तूनख्वा में हवाई हमले तक, भारत ने अपने अभियानों के दायरे का उत्तरोत्तर विस्तार किया है और ऐसा करते हुए नियंत्रण रेखा और अंतरराष्ट्रीय सीमा दोनों को लांघा है। ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान के गढ़ में प्रहार किए गए। भारत ने दिखाया है कि आतंकवाद का मुकाबला परमाणु-युद्ध को आमंत्रित किए बिना भी एक संतुलित सैन्य-प्रतिक्रिया से किया जा सकता है।पाकिस्तान का सैन्य नेतृत्व अब जब भविष्य में कश्मीर या अन्य जगहों पर तबाही मचाने के लिए आतंकवादियों को भेजने पर विचार करेगा, तो पहले उसे खुद से पूछना होगा कि क्या वह भारत के जवाबी हमले के लिए भी तैयार है? उलटे इससे पाकिस्तान के लोगों को पानी की किल्लत हो सकती है। भारत ने सिंधु जल संधि को स्थगित करके यही संदेश दिया था।जहां उसके बाद से भारत ने जलप्रवाह को मोड़ने के लिए कोई इच्छा नहीं दिखाई है, लेकिन इस संदेश ने उपमहाद्वीप की भू-राजनीति को मौलिक रूप से बदल दिया है। भारत अब शांति के लिए बातचीत भर नहीं कर रहा है; वह पानी की निरंतर आपूर्ति के बदले में आतंकवाद की समाप्ति की मांग भी कर रहा है।ऑपरेशन सिंदूर के जरिए भारत ने दुनिया को यह भी याद दिलाया है कि पाकिस्तान के आतंकवाद से कितने गहरे ताल्लुक हैं। युद्ध विराम को अंजाम देने वाली परदे के पीछे की बातचीतों के बारे में नए विवरण निस्संदेह सामने आएंगे, लेकिन यह निर्विवाद है कि यह भारतीय सैन्य दबाव के बिना संभव नहीं था।इसके बाद अब निकट-भविष्य में भारत और पाकिस्तान के द्विपक्षीय संबंधों में कोई खास बदलाव होने की संभावना नहीं है, क्योंकि ऐसी कोई भी बातचीत- खासकर कश्मीर मुद्दे पर- फिलहाल दूर की संभावना है।वैसे भी कश्मीर भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव का मूल कारण नहीं है, यह तो पाकिस्तान द्वारा भारतीय क्षेत्र पर अपने दावों को सही ठहराने के लिए फैलाया गया एक मिथक है। यह नैरेटिव एक ऐसे कट्टरपंथी तर्क पर आधारित है- जिसे हाल ही में पाकिस्तान के सेना प्रमुख आसिम मुनीर ने दोहराया था- कि मुसलमान गैर-मुस्लिम बहुसंख्यक देश में नहीं रह सकते।भारत व पाकिस्तान में कोई तुलना नहीं है। भारत की जीडीपी पाकिस्तान से 11 गुना अधिक है और उसकी सैन्य-श्रेष्ठता के आगे भी पाकिस्तान नहीं टिकता। पाकिस्तान में उसकी फौज को हासिल अत्यधिक अधिकार, राष्ट्रीय बजट पर नियंत्रण, चीन और तुर्किए के साथ रणनीतिक गठबंधन उसे सशस्त्र संघर्ष को बनाए रखने के लिए शक्तिशाली उपकरण प्रदान करते हैं, जबकि किसी भी पारंपरिक युद्ध में भारत हमेशा पाकिस्तान पर न केवल जीत हासिल करेगा, बल्कि उसे काफी नुकसान भी पहुंचा सकता है। भारत ने सीमापार आतंकवाद का सामना करने में जैसी दृढ़ता दिखाई, उस पर वह गर्व कर सकता है।अब भारत ने सैन्य-कार्रवाई को लेकर झिझक छोड़ दी है। एक अरसे तक कश्मीर मुद्दे के 'अंतरराष्ट्रीयकरण' के अंदेशे ने भारत को निरर्थक कूटनीतिक प्रक्रियाएं अपनाने के लिए प्रेरित किया था, लेकिन उनसे हमें क्या हासिल हुआ? (शशि थरूर)

आपका टैरेस भविष्य में आपको 'पॉवर-फुल' बना सकता है!

हमने परिवहन में इलेक्ट्रिक कारों के विचार को स्वीकार कर लिया है। हमने पेसमेकर के विचार को भी अपना लिया है, जिसे दिल की धड़कनों को स्थिर रखने के लिए डिजाइन किया गया है। लेकिन अब अगले स्तर पर जाने के लिए तैयार हो जाइए।आने वाले समय में इलेक्ट्रिक विमान भी होंगे और वही बिजली रुमाटॉइड आर्थराइटिस जैसी बीमारियों से लेकर ग्लियोब्लास्टोमा जैसे मुश्किल से इलाज होने वाले मस्तिष्क कैंसर और पैंक्रियाटिक कैंसर को ठीक करने के लिए भी तैयार हो रही है!जी हां, न केवल बीमारियों के संभावित उपचार के रूप में, बल्कि नई ग्रीन-टेक्नोलॉजी को अपनाकर 2050 तक ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के अपने जलवायु-लक्ष्य तक पहुंचने में एविएशन क्षेत्र की मदद करने के लिए भी बिजली तैयार हो रही है।टोरंटो से 135 किमी दूर ओंटारियो के लिंडसे में एक छोटे-से हवाई अड्डे पर आपका स्वागत है। यहां होराइजन एयरक्राफ्ट लिमिटेड नामक कंपनी चुपचाप

दुनिया का पहला हाइब्रिड इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेकऑफ और लैंडिंग विमान बना रही है।इसे 'ईवीटीओएल विमान' के नाम से जाना जाता है! खोज और बचाव कार्यों, टाइट लैंडिंग्स, छोटे समूहों और क्षेत्रीय उड़ानों के लिए डिजाइन किए गए होराइजन का सात सीटर विमान पायलट सहित किसी हेलीकॉप्टर की तरह टेकऑफ और लैंड करता है, लेकिन वह 450 किलोमीटर प्रति घंटे से अधिक की गति से यात्रा करने में सक्षम है। कंपनी के सीईओ ब्रैंडन रॉबिन्सन को भरोसा है कि अगले 24 महीनों में उड़ान परीक्षण शुरू करने के लिए एक फुल-स्केल प्रोटोटाइप तैयार हो जाएगा।यदि आप 'ईवीटीओएल विमान' की मदद से दो घंटे की यात्रा करके अमेरिका के सिनसिनाटी विश्वविद्यालय जाते हैं, जो कि वहां से 800 किमी दूर है और पोर्ट्समाउथ, जो कि 900 किमी दूर है, तो आप नोवोक्योर नामक ऑन्कोलॉजी कंपनी के मुख्यालय में पहुंच जाएंगे।वे संयुक्त रूप से पता लगा रहे हैं कि डिवाइस के आकार को कैसे छोटा किया जाए और इलेक्ट्रिक फील्ड्स और पल्सेस को ऐसे कैसे ?उपयोग किया जाए कि इससे कैंसर के इलाज में मदद ली जा सके। उन्होंने पहले से ही ऐसी तकनीक विकसित कर ली है, जो ट्यूमर के विकास को धीमा करने के लिए शरीर के सेल-डि?वीजन में इलेक्ट्र?किल फोर्सेस को बाधित करती है।शरीर में विद्युत-घटकों के होने का यह नया विचार हमारे भविष्य के इलाज के तरीकों के बारे में हमारी सोच को बदल रहा है। नोवोक्योर के सीईओ एशले कॉर्डोवा का तो यही मानना ??है। 62 वर्षीय मैकेनिकल इंजीनियर टिम नुगेंट जैसे ग्लियोब्लास्टोमा के रोगी पहले ही अपने सिर पर इलेक्ट्रोड्स युक्त पैचेस पहन रहे हैं, जो एक बैटरी पैक से इलेक्ट्रोड्स डिलीवर करते हैं।इसके पीछे यह सोच है कि सेल-डिवीजन को बाधित करने के लिए कम तीव्रता वाले इलेक्ट्रिकल फील्ड्स का उपयोग किया जाए। इनमें से कुछ निष्कर्ष अभी मानव परीक्षण के चरण में हैं। यह बताता है कि भविष्य में नई तकनीकें इस बात का दायरा बढ़ाने जा रहे हैं कि कैसे बिजली हमारे दैनिक जीवन में और महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। हो सकता है बिजली कैंसर का इलाज करने में कामयाब हो जाए।आने वाले वर्षों में हमारे जीवन का हिस्सा बन सकने वाली ये वैश्विक गतिविधियां एक प्रमुख बदलाव की ओर इशारा करती हैं।

एक लोकतंत्र में जनता को विश्वास में लेना जरूरी है

अक्टूबर 1962 में चीन ने भारत के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया था। सरकार ने राष्ट्रीय आपातकाल घोषित किया। उस समय संसद में सबसे छोटी पार्टियों में से एक जनसंघ से पहली बार राज्यसभा सांसद बने 36 वर्षीय एक युवा नेता ने प्रधानमंत्री नेहरू से संसद का विशेष सत्र बुलाने का अनुरोध किया। उनका नाम अटल बिहारी वाजपेयी था। पं. जवाहरलाल नेहरू की कांग्रेस सरकार को उस समय लोकसभा में दो-तिहाई बहुमत प्राप्त था। 72 वर्ष के नेहरू वाजपेयी से ठीक दोगुनी आयु के भी थे। लेकिन नेहरू ने उनके अनुरोध पर सहमति जताई और अपनी ही पार्टी के सदस्यों के इस सुझाव को खारिज कर दिया कि यह एक 'गुप्त सत्र' होना चाहिए। जब ??संसद की बैठक हुई, तो वाजपेयी ने सरकार पर तीखा हमला किया। लेकिन नेहरू ने इसे देशभक्ति के खिलाफ नहीं माना। इतिहास को हमारे लिए मार्गदर्शक की भूमिका निभानी चाहिए। जब ऑपरेशन सिंदूर चल रहा था, तो भारत के लोग सरकार के साथ एकजुट थे और हमारे बहादुर सशस्त्र बलों का पूरा समर्थन किया गया, जिन्होंने सफलतापूर्वक लड़ने के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी। हालांकि, अब जब युद्ध विराम हो गया है, तो ऑपरेशन से संबंधित किसी वैध सवाल को यह कहकर नहीं टाला जा सकता कि यह राष्ट्र-विरोधी है। लोकतंत्र में सरकार को राष्ट्रीय हित की सीमाओं के भीतर लोगों को विश्वास में लेना चाहिए और किसी सवाल को टालना नहीं चाहिए। खास तौर पर, इसको लेकर बहुत प्रासंगिक सवाल उठ रहे हैं कि युद्ध को अचानक क्यों समाप्त कर दिया गया। युद्ध में हमने कितने विमान खोए या नहीं खोए, इसका सटीक विवरण महत्वपूर्ण नहीं है। क्योंकि किसी भी युद्ध में दोनों पक्षों को कुछ ना कुछ नुकसान तो होगा ही, और हमारी सरकार ने पाकिस्तान में महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों को हुए नुकसान के पर्याप्त विजुअल प्रमाण भी उपलब्ध कराए हैं। लेकिन अब सार्वजनिक वृत्त में इस बात पर कुछ गंभीर विरोधाभास सामने आए हैं कि युद्ध विराम कैसे और क्यों हुआ। अमेरिकी वाणिज्य मंत्री हॉवर्ड लुटनिक ने 23 मई को अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय व्यापार न्यायालय में शपथ लेकर कहा कि भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम 'केवल तभी संभव हो सका' जब ट्रम्प ने उसमें हस्तक्षेप किया और 'एक फुल-स्केल परमाणु युद्ध को टालने' के लिए दोनों देशों को व्यापार-पहुंच की पेशकश की। हालांकि इससे पहले 13 मई को भारतीय विदेश मंत्रालय के आधिकारिक प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने सार्वजनिक तौर पर इसके ठीक उलट बात कही थी। अपनी प्रेस ब्रीफिंग में उन्होंने कहा कि 7 से 10 मई के बीच भारतीय और अमेरिकी नेताओं के बीच केवल 'बातचीत' हुई थी और 'व्यापार के मुद्दों पर कोई चर्चा नहीं हुई थी।' जायसवाल ने आगे कहा कि युद्ध विराम भारत और पाकिस्तान के बीच 'सीधे संपर्क' के जरिए हुआ था, 'अमेरिकी मध्यस्थता के जरिए नहीं'। पाठक इस बात से सहमत होंगे कि अमेरिका के सबसे वरिष्ठ मंत्रियों में से एक के द्वारा न्यायालय में शपथ लेकर कही गई बात और हमारे आधिकारिक प्रवक्ता द्वारा प्रेस वार्ता में दिया गया बयान- दोनों एक-दूसरे के बिल्कुल विपरीत हैं। भारतीय जनता इन विपरीत रुखों को कैसे समझे? यह भी रहस्य बना हुआ है कि राष्ट्रपति ट्रम्प युद्ध विराम की घोषणा कैसे कर सकते हैं, जबकि हमारे आधिकारिक प्रवक्ता ने सार्वजनिक रूप से कहा है कि भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम 'प्रत्यक्ष संपर्क' के माध्यम से हुआ है। फिर इस मामले में अमेरिका की क्या भूमिका थी? युद्ध कब छेड़ा जाए और युद्ध को समाप्त करने का सबसे अच्छा समय कौन-सा है- इसको लेकर हमें निर्वाचित सरकार पर भरोसा करना चाहिए। लेकिन सरकार को भी और अधिक पारदर्शी होना चाहिए। ऐसा कहना 'पाकिस्तानी एजेंट' होना नहीं है। अगर सार्वजनिक क्षेत्र में सूचना पर तथ्यात्मक स्पष्टीकरण का प्रावधान है, तो जनता को इसे पूछने का अधिकार है। चुनावी लाभ के लिए तिरंगा यात्रा निकालना इसका उत्तर नहीं है। युद्ध का पक्षपातपूर्ण राजनीतिकरण भले राजनीति के लिए आकर्षक हो, लेकिन इसमें कुछ सतहीपन और अवसरवादिता की झलक मिलती है। लोकतंत्र में परिपक्व-संवाद उसकी मजबूती का प्रतीक है, कमजोरी का नहीं। युद्ध विराम का अमेरिकी संस्करण हमारे संस्करण से अलग क्यों है- सरकार को इसे स्पष्ट करना चाहिए, या तो संसद के विशेष सत्र के माध्यम से या सर्वदलीय ब्रीफिंग के जरिए। अतीत में नेहरू और वाजपेयी द्वारा स्थापित ऐतिहासिक उदाहरण को हमें नहीं भूलना चाहिए। अब जब युद्ध विराम हो गया है, तो ऑपरेशन ??सिंदूर से संबंधित किसी वैध सवाल को यह कहकर नहीं टाला जा सकता कि यह राष्ट्र-विरोधी है। सरकार को राष्ट्रीय हित की सीमाओं के भीतर लोगों को विश्वास में लेना चाहिए। (ये लेखक के अपने विचार हैं।)

दुष्ट के साथ दुष्टता जरूरी-भारत को चीन जैसा देना चाहिए अमेरिका को सबक, रूसी तेल पर एक्सपर्ट ने क्या बताया 'खेल'

नयी दिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रविवार को एक बार फिर ये संकेत दिया कि वह रूस के खिलाफ प्रतिबंधों के दूसरे चरण में जाने के लिए तैयार हैं। इस कदम से भारत जैसे देश भी प्रभावित हो सकते हैं जो रूसी तेल खरीदना जारी रखते हैं। यह बयान रूस द्वारा यूक्रेन पर हाल के दिनों में किए गए अपने सबसे बड़े हवाई हमले के बाद आया है, जिसमें उसने कीव में एक प्रमुख सरकारी परिसर पर हमला किया था।अमेरिकी राष्ट्रपति ऑफिस व्हाइट हाउस में जब ट्रंप से पूछा गया कि क्या वह रूस या उसके तेल खरीदारों पर नए प्रतिबंधों के लिए तैयार हैं, तो उन्होंने संक्षेप में उत्तर दिया-हां, मैं तैयार हूं। उन्होंने कोई और ब्यौरा नहीं दिया।इंडिया टुडे की एक रिपोर्ट के अनुसार, ट्रंप की ये टिप्पणियां अमेरिकी प्रशासन के भीतर बढ़ती हताशा को दर्शाती हैं क्योंकि संघर्ष लंबा खिंच रहा है, खासकर उनके पहले के शांति प्रयासों के युद्धविराम हासिल करने में विफल रहने के बाद ये टैरिफ के रूप में दिखती हैं। इस बदलाव को रेखांकित करते हुए वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने एनबीसी को बताया कि वाशिंगटन और यूरोपीय संघ रूसी तेल आयात करने वाले देशों पर सेकेंडरी टैरिफ लगा सकते हैं। उन्होंने तर्क दिया कि केवल रूसी अर्थव्यवस्था के पतन के बाद ही राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन बातचीत की मेज पर आ पाएंगे। ऐसे में जाहिर है भारत पर यह टैरिफ लगाया जा सकता है। पिछले महीने ही अमेरिका ने भारतीय निर्यात पर 25 प्रतिशत का दंडात्मक शुल्क लगाया था, जिससे कुल आयात शुल्क बढ़कर 50 प्रतिशत हो गया। ट्रंप ने बार-बार नई दिल्ली पर रूसी युद्ध मशीन को बढ़ावा देने का आरोप लगाया है और शुल्कों को जरूरी बताया है। हालांकि, नई दिल्ली ने राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा के आधार पर रूसी कच्चे तेल की अपनी खरीद को लगातार उचित ठहराया है और अमेरिकी उपायों को अनुचित बताया है। भारत रूस के ऊर्जा निर्यात का एक प्रमुख खरीदार है, जबकि पश्चिमी खरीदारों ने युद्ध के जवाब में इसमें कटौती की है।दिल्ली यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर डॉ. राजीव रंजन गिरि कहते हैं कि रूस के साथ व्यापार करने वाले देशों को दंडित करने पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित किया जा रहा है, जबकि हाल ही में ट्रंप और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बीच एक ऑनलाइन बातचीत हुई थी, जिससे उनके द्विपक्षीय संबंधों में सुधार के संकेत मिले थे। भारत को भी चीन की तरह ही जवाब देना चाहिए। उसे भी अमेरिकी वस्तुओं पर टैरिफ लगाना चाहिए, ताकि इसका मैसेज ट्रंप को मिले। वैसे भारत का बाजार सिर्फ अमेरिका तक ही सीमित नहीं है। उसने रूस, चीन, खाड़ी देशों तक अपना कारोबार फैला रखा है। अमेरिका पर निर्भरता घटानी चाहिए। जो जैसा है उसे वैसा ही सबक देना चाहिए। यानी दुष्ट के साथ दुष्टता का ही बर्ताव करना चाहिए।रूस-यूक्रेन युद्ध रविवार को एक बड़ा रूप ले चुका था, जब रूस ने यूक्रेन की राजधानी पर ड्रोन और मिसाइलों से हमला किया, जो युद्ध शुरू होने के बाद से अब तक का सबसे बड़ा हवाई हमला था। रूस ने 810 ड्रोन और नकली हथियारों से हमला किया, और 747 ड्रोन और चार मिसाइलों को मार गिराया। यूक्रेन के राष्ट्रपति ज़ेलेंस्की ने कहा है कि वह शांति समझौते पर बातचीत करने के लिए अपने रूसी समकक्ष व्लादिमीर पुतिन से मिलने के लिए तैयार हैं, और उन्होंने ट्रंप से आग्रह किया है कि वह रूस पर कठोर प्रतिबंध लगाएं ताकि वह युद्ध समाप्त करने के लिए दबाव डाल सके।एक अमेरिकी-इजरायली समर्थक यूजर ने कहा-भारत अभी भी क्वाड का हिस्सा है और पश्चिमी देशों के साथ उसकी रणनीतिक रक्षा साझेदारी है। आप शिकारी कुत्तों के साथ शिकार नहीं कर सकते और खरगोश के साथ दौड़ नहीं सकते। भारत का दोहरा खेल उजागर हो गया है। सोशल मीडिया पर क्वींस कॉलेज, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी के प्रेसीडेंट मोहम्मद ए-अल एरियन ने लिखा-भारत को इस पर विचार करना चाहिए। इस पर एक और यूजर्स बिल हेरिंग ने कहा कि भारत को रूस से तेल नहीं खरीदना चाहिए।एक और यूजर ने कहा-अमेरिका चीन पर ऐसे प्रतिबंध नहीं लगाना चाहिए। क्योंकि उसे पता है कि अगर ऐसा कुछ किया तो चीन रेयर अर्थ को अमेरिका भेजने पर पाबंदी लगा सकता है। भारत के पास ऐसा कुछ नहीं है।एक और यूजर ने कहा कि अमेरिका खुद रूस से यूरेनियम मंगाता है। वहीं, यूरोपीय यूनियन भी रूस से तेल आयात करता है, तब भी अमेरिका उसका कुछ बिगाड़ नहीं पाया। ऐसे में भारत के साथ ही दोहरा मापदंड क्यों।

पितृपक्ष किन राशियों के लिए रहेगा उत्तम और किन्हें होगा नुकसान

नयी दिल्ली। इस वर्ष पितृपक्ष 7 सितंबर 2025 से 31 सितंबर 2025 तक रहेगा। पितृ पक्ष में सभी लोग अपने पूर्वजों के प्रति समान प्रकट करते हैं और उनकी मुक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। इस समय में सभी 12 राशियों में अलग-अलग प्रभाव देखने को मिलता है आज हम बताएंगे कि 12 राशियों में किस तरह का प्रभाव होगा और उसका क्या समाधान है। 1. मेष राशि- मेष राशि वाले लोगों के लिए जिम्मेदारी हम बढ़ सकती है तो उन्हें सोच समझकर निर्णय लेना चाहिए। मेष राशि वालों को मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ कर पितरों को लाल फूल अर्पित करनी चाहिए। 2. वृषभ राशि- वृषभ राशि वाले लोगों के लिए आर्थिक मामलों में उतार चढ़ाव संभव है। परिवार में किसी पुराने मध्य पर भी चर्चा हो सकती है। वृषभ राशि वालों को सफेद तिल जन्म प्रभावित करना चाहिए और अपने से बड़ी बुजुर्गों का आशीर्वाद लेना चाहिए। 3. मिथुन राशि- मिथुन राशि वाले लोगों के कामकाज में रुकावटें और मानसिक तनाव बढ़ सकता है उन्हें ध्यान रखना चाहिए। हरे चने और हरी सब्जियां दान करें पितरों के लिए तुलसी पत्र अर्पित करें। 4. कर्क राशि- कर्क राशि वाले लोगों के परिवार संबंध मधुर होंगे लेकिन खर्च कर सकता है। सोमवार को शिवलिंग पर दूध अर्पित करें और कौओं को भोजन दे।

5. सिंह राशि- खतरों की कृपा से सिंह राशि वालों को करियर में लाभ होगा और परिवार में किसी बड़ी की सेहत पर ध्यान। रविवार को सूर्य को जल चढ़ाएं और गेहूं दान करें। 6. कन्या राशि- कन्या राशि वाले लोगों को धन लाभ की संभावना है लेकिन मानसिक वैशाली रह सकती है। पहले वस्तुओं का ध्यान करें और पितरों के नाम से गरीब बच्चों को भोजन कराएं। 7. तुला राशि- जीवनसाथी के साथ संबंधों में उतार-चढ़ाव आ सकता है। शुक्रवार को खीर का भोग लगे और कन्याओं को भोजन कराएं। 8. वृश्चिक राशि- वृश्चिक राशि वाले लोग स्वास्थ्य को लेकर सतर्क रहें और कार्यक्षेत्र में नए अवसर नहीं मिल सकते हैं। मंगलवार को गुड और मसूर दाल दान करें और पितरों के लिए दीपक जलाएं। 9. धनु राशि- धनु राशि वाले छात्रों और नौकरी पैसा लोगों के लिए समय लाभदायक रहेगा। गुरुवार को प्रिया फूल और चने की दाल दान करें। 10. मकर राशि-घर परिवार में छोटे-मोटे विवाद हो सकते हैं नौकरी में दबाव भी बढ़ सकता है। शनिवार को तेल का दीपक जलाएं और गरीबों में काले तिल दान करें। 11. कुंभ राशि- कुंभ राशि वाले लोगों के लिए नए काम की शुरुआत के लिए क्या समय बहुत ही अनुकूल रहेगा। यात्रा में भी लाभ मिलेगा। शनिवार को शनि देव की पूजा करें और जल में काला तिल डालकर अर्पित करें। 12. मीन राशि- मीन राशि वालों पर पितरों की कृपा से रुके हुए काम पूरे होंगे। आर्थिक लाभ संभव है। गुरुवार को केले के पेड़ की पूजा करें और गौ माता को भोजन कराएं। सभी राशियों के लिए कुछ सामान्य उपाय जिनसे पितरों को खुश किया जा सकता है- रोजाना सूर्य को जल अर्पित करें। पिंडदान विधि अनुसार करें। गाय कुत्ता और कौए को भोजन कराएं। साथ ही, बड़ों का आदर करें और माता-पिता का सम्मान करें। मनुष्य जीवन में सुख शांति और उन्नति आती है। पितृपक्ष में श्रद्धा और विश्वास के साथ अपने पूर्वजों को याद करें और दान का कार्य करे।

धनखड़ के पास थे 2 विकल्प- इस्तीफा या नो-कॉन्फिडेंस मोशनःकरीबियों का दावा- 40 किलो जलेबी मंगाई, अगले दिन रिजाइन,सही समय का इंतज़ार

नयी दिल्ली। 21 जुलाई की बात है, उसी दिन संसद का मानसून सेशन शुरू हुआ था। जगदीप धनखड़ ने राज्यसभा के सभापति के तौर पर दिनभर सदन की कार्यवाही चलाई। फिर उसी रात अचानक उनके उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफा देने की खबर आ गई। पद छोड़ने के पीछे उन्होंने खराब सेहत का हवाला दिया।इस इस्तीफे को लेकर मीडिया में कई थ्योरीज चलने लगीं। हालांकि, 48 दिन बीतने के बाद भी धनखड़ ने इस मामले को लेकर चुप्पी साध रखी है। इस चुप्पी को लेकर उनके करीबियों से बात की गयी तो धनखड़ के करीबी सूत्र ने बताया - '9 सितंबर से पहले ये चुप्पी नहीं टूटेगी। सही वक्त आने पर वे सामने आएंगे और स्थिति स्पष्ट करने के बारे में खुद फैसला लेंगे।' दरअसल, 9 सितंबर को नए उपराष्ट्रपति का चुनाव होना है। इसमें एनडीए के महाराष्ट्र के राज्यपाल सी.पी. राधाकृष्णन का मुकाबला विपक्ष के उम्मीदवार और सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश बी. सुदर्शन रेड्डी से है। धनखड़ के करीबियों ने ये दावा भी किया कि धनखड़ ने खुद इस्तीफा नहीं दिया था। उन्हें इस्तीफा देने के लिए कहा गया था। सूत्रों के मुताबिक उनके पास दो विकल्प थे, पहला- अपनी मर्जी से इस्तीफा दे दें। दूसरा- नो कॉन्फिडेंस मोशन का सामना करें। उप राष्ट्रपति भवन के विश्वसनीय सूत्रों ने भी कन्फर्म किया है कि धनखड़ को भी एक दिन पहले तक नहीं पता था कि उन्हें रिजाइन करना पड़ सकता है।धनखड़ को इस्तीफा देने का संदेश कब मिला? आखिर इस्तीफे की असल वजह क्या है? धनखड़ की पद के मुताबिक प्रोटोकॉल की मांग करने की बात में कितनी सच्चाई है? जगदीप धनखड़ के करीबी सोर्स का दावा है कि 'धनखड़ को दो लोगों के जरिए इस्तीफा देने का संदेश भेजा गया था। इसके पीछे असल वजह क्या थी, वो तो धनखड़ ही बता पाएंगे। ये बात कन्फर्म है कि धनखड़ को इस्तीफा देने के लिए 21 जुलाई को ही संदेश भेजा गया। पूर्व-उपराष्ट्रपति के पास दो विकल्प थे। पहला कि वो खुद इस्तीफा दे दें। दूसरा, वो नो-कॉन्फिडेंस मोशन का सामना करें। उन्होंने पहला विकल्प चुना, क्योंकि वे दूसरा चुनकर अपना अपमान नहीं कराना चाहते थे।' इस्तीफे की असली वजह पर ये सोर्स दावा करते हैं, 'धनखड़ ने अब तक पूरी कहानी नहीं बताई है। वे फोन पर इस बारे में ज्यादा बात नहीं करना चाहते हैं। उनसे मुलाकात का संयोग अब तक बन नहीं सका। हालांकि, जल्द ही उनसे मुलाकात होगी। तब पता चलेगा कि आखिर पूरा सच क्या है?'उपराष्ट्रपति का पद संवैधानिक रूप से राष्ट्रपति से नीचे और प्रधानमंत्री से ऊपर होता है। खबरें ऐसी भी आईं कि पूर्व उपराष्ट्रपति लगातार अपने पद के मुताबिक, प्रोटोकॉल चाहते थे। जो उन्हें सरकार से नहीं मिल रहा था। इस थ्योरी पर सोर्स ने कहा, 'इसमें गलत भी क्या था। मुझे ऐसा पता चला था कि पूर्व उपराष्ट्रपति ने एक बार एक मीटिंग के दौरान गृहमंत्री के हंसने पर सख्त लहजे में आपत्ति जताई थी। ऐसे और भी किस्से हैं। हालांकि, वो खुद धनखड़ जी बताएंगे तो ठीक रहेगा।' क्या धनखड़ जी का मीडिया के सामने आने का कोई प्लान है? इस पर सोर्स ने कहा- 'मेरी जानकारी के मुताबिक अब तक कोई वक्त तय नहीं किया है, मुझे लगता है कभी तो जरूर आएंगे।'सोर्स के मुताबिक, 'धनखड़ संघ से करीबी चाहते थे। वो संघ के कई बड़े नेताओं से मिले भी। उन्होंने संघ के खिलाफ हो रही अवहेलना और उनकी सलाह को अनदेखा किए जाने की भी शिकायत की थी। पिछले एक साल के अंदर संघ के पक्ष में उनके कई बड़े बयान भी आए। ये वही समय था जब संघ और बीजेपी के बीच मीडिया में दरार की खबरें आ रहीं थीं।'

धनखड़ को लगा था कि संघ उनके पक्ष में खड़ा होगा। हालांकि, संघ ने साफ कर दिया कि वो इस मामले में 'तटस्थ' रहेगा। सोर्स ने बताया कि संघ ने उल्टा धनखड़ से ये कहा, 'पब्लिक मंच से वे संघ की तारीफ न करें क्योंकि इससे दो संदेश जाएंगे। पहला, ये लगेगा कि संघ के इशारे पर ये सब हो रहा है। दूसरा, पार्टी और संगठन के बीच गलतफहमी पनप सकती है।' धनखड़ ने कब-कब संघ के सपोर्ट में दिए बयान- 1. संघ की आलोचना संविधान के खिलाफ31 जुलाई 2024 को समाजवादी पार्टी के सांसद रामजीलाल सुमन ने राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी के अध्यक्ष की नियुक्ति पर सवाल उठाया था। दरअसल इसमें संघ का नाम आया था। इस पर धनखड़ ने कहा था- 'आरएसएस की आलोचना संविधान के खिलाफ है। देश को आरएसएस पर गर्व होना चाहिए।' आरएसएस में ऐसे लोग हैं, जो निस्वार्थ भाव से राष्ट्र की सेवा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। संघ हमारी संस्कृति, समाज के विकास और राष्ट्रहित में काम कर रहा है। संघ एक विश्वस्तरीय थिंक टैंक की तरह है, इसके स्वयंसेवक कई कलाओं में धनी होते हैं। 2. पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने 2 जुलाई 2024 को राज्यसभा में बयान दिया था कि वे पिछले 25 साल से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रशंसक रहे हैं। उन्होंने एकलव्य से अपनी तुलना करते हुए कहा था कि उन्हें आरएसएस से औपचारिक रूप से न जुड़ पाने का अफसोस है। धनखड़ ने कहा था, 'मैं आरएसएस का एकलव्य बनकर रह गया। मन में एक टीस सदा रही कि मैंने प्रथम वर्ष क्यों नहीं किया, द्वितीय वर्ष क्यों नहीं किया, तृतीय वर्ष क्यों नहीं किया?' 3. संघ महासचिव दत्तात्रेय होसबाले ने संविधान की प्रस्तावना का मुद्दा उठाया था। इसमें सेक्युलर और समाजवादी शब्दों को हटाने की बात कही थी। धनखड़ ने 28 जून 2025 को इस पर भी अपनी राय रखी थी। उन्होंने कहा था, 'प्रस्तावना माता-पिता की तरह है, जिसे बदला नहीं जा सकता।' ये बयान आरएसएस की मांग से अलग था। हालांकि, दूसरी ही लाइन में उन्होंने आपातकाल में संविधान की प्रस्तावना में ये दो शब्द सेक्युलर और समाजवादी जोड़े जाने की आलोचना की थी। दरअसल भागवत ने अपने बयान से ये साफ कर दिया था कि ये दोनों शब्द संविधान में मूल रूप से नहीं थे। ये कांग्रेस काल में जोड़े गए थे।उपराष्ट्रपति भवन के एक सोर्स के मुताबिक, 'जब कोई अपने पद से इस्तीफा देता है तो कुछ दिन पहले इस पर विचार जरूर करता है। हालांकि, धनखड़ को एक दिन पहले तक ये नहीं पता था कि वो इस्तीफा देने वाले हैं। उन्होंने इस्तीफे से एक दिन पहले 40 किलो जलेबी मंगवाई थी। वो ऐसा अक्सर किया करते थे। उन्होंने इसे पूरे स्टाफ में बंटवाया था। अगर कुछ ऐसा होने का अंदेशा होता तो शायद वे ऐसा न करते।' सोर्स ने दावा किया, 'मैं कंफर्म्ड हूं कि धनखड़ को एक दिन पहले तक अपने इस्तीफे की खबर नहीं थी। उनकी भावभंगिमा से भी कहीं से ऐसा नहीं लगा कि वो किसी बात से परेशान हैं।' सोर्स ने ये भी बताया कि कुछ खबरें जो हम तक पहुंचती थीं, उससे ये पता लगता था कि पूर्व उपराष्ट्रपति और सरकार के बीच कुछ तो चल रहा है। अभय चौटाला के फार्म हाउस में क्यों शिफ्ट हुए धनखड़? -पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने 2 सितंबर की रात सरकारी भवन छोड़ दिया। वो दिल्ली के छतरपुर में एक फार्म हाउस में शिफ्ट हो गए हैं। ये फार्म हाउस हरियाणा के दिग्गज लीडर अभय सिंह चौटाला का है। वो यहां तब तक रह सकते हैं, जब तक उन्हें टाइप-8 सरकारी बंगला अलॉट नहीं कर दिया जाता, जिसके वो पूर्व उपराष्ट्रपति होने के नाते हकदार हैं। दरअसल, धनखड़ और इनेलो प्रमुख अभय चौटाला का रिश्ता काफी पुराना है। जुलाई 2019 में भी धनखड़ ने जब बंगाल में गवर्नर का पद संभाला था, तब भी उन्होंने अभय सिंह चौटाला के दादा देवीलाल से अपना जुड़ाव बताया था। उन्होंने कहा था कि देवीलाल ने ही उन्हें चुनाव लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया। वो उनके मेंटर हैं।1989 में जब देवीलाल उपप्रधानमंत्री बने थे, तब धनखड़ को कैबिनेट मिनिस्टर बनाया था। हालांकि, 1990 में ही प्रधानमंत्री वीपी सिंह ने देवीलाल की सरकार को बर्खास्त कर दिया। धनखड़ देवीलाल के पक्ष में खड़े थे। उन्होंने फौरन कैबिनेट मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। जब धनखड़ छतरपुर के फॉर्म हाउस में शिफ्ट हुए, तब अभय सिंह चौटाला ने मीडिया से बात करते हुए कहा था- 'धनखड़ और उनके परिवार का रिश्ता बहुत पुराना और गहरा है। इस फार्महाउस में धनखड़ जब तक चाहें रहें। ये उनका ही घर है। वैसे 4-5 महीने तक तो कम से कम इसी फार्महाउस में रहेंगे।' दरअसल, पूर्व उपराष्ट्रपति के करीबी सोर्स के मुताबिक, धनखड़ ने सरकारी बंगले के लिए अप्लाई किया है, लेकिन वो मिलने में कम से कम अभी 4 से 5 महीने लगेंगे। धनखड़ के पद के मुताबिक, उन्हें टाइप-8 बंगला मिलेगा। फार्म हाउस में अब तक धनखड़ से देवीलाल के पौत्र अजय चौटाला मिल चुके हैं। इनेलो सोर्सेज ने बताया, 'अजय चौटाला और धनखड़ की आपस में खूब बनती है। वो 6 सितंबर की शाम को धनखड़ से मिलने गए थे।'चौटाला परिवार भले ही हरियाणा की सत्ता से सालों से दूर हो, लेकिन जाट राजनीति में आज भी सबसे आगे हैं। धनखड़ भी जाट हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या अब धनखड़ चौटाला परिवार के साथ मिलकर जाट राजनीति करेंगे? सोर्स ने बताया, ' धनखड़ और चौटाला परिवार हमेशा से करीब थे, लेकिन धनखड़ की धारा अलग हो गई थी। अब जब धनखड़ ने फार्महाउस को रहना चुना है, तो धाराएं भी मिल सकती हैं। हालांकि, अभी धनखड़ या चौटाला परिवार ने इस बारे में कुछ भी नहीं कहा है।' अब देखने वाली बात ये है कि 25 सितंबर को देवीलाल का जन्मदिन है। चौटाला परिवार इस मौके पर हर साल एक बड़ा कार्यक्रम करता है। क्या धनखड़ इस कार्यक्रम में शामिल होंगे? इससे पहले रोहतक में अभय सिंह चौटाला एक बड़ी सभा करने वाले हैं, क्या वो इस सभा में धनखड़ का नाम लेकर बीजेपी पर निशाना साधेंगे?

नॉर्थ कोरिया में अमेरिका के सीक्रेट मिशन का खुलासा,जासूसी के लिए इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस लगाना चाहते थे ट्रम्प,शुरू होते ही फेल हुआ

वॉशिंगटन डीसी। डोनाल्ड ट्रम्प के पिछले कार्यकाल में एक अमेरिका की नेवी सील टीम ने 2019 में नॉर्थ कोरिया के तट पर एक खुफिया मिशन चलाया था।इस मिशन का मकसद नॉर्थ कोरिया के शासक किम जोंग-उन की कम्युनिकेशन व्यवस्था की जासूसी करने के लिए एक इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस लगाना था। यह मिशन असफल रहा और इसमें निहत्थे नॉर्थ कोरियाई लोग मारे गए। जनवरी 2019 की एक सर्द रात को अमेरिकी नेवी सील की एक टीम चुपचाप एक पनडुब्बी से निकली और नॉर्थ कोरिया के एक चट्टानी तट की ओर बढ़ी। इस टीम में वही सैनिक थे जिन्होंने ओसामा बिन लादेन को मारा था। उनका लक्ष्य किम जोंग-उन की जासूसी करना था ताकि अमेरिका को परमाणु बातचीत में मदद मिल सके। यह मिशन इतना खतरनाक था कि इसकी मंजूरी खुद तत्कालीन राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने दी थी। हालांकि, यह मिशन शुरू होते ही विफल हो गया। सील टीम को लगा कि तट पर कोई नहीं है। वे गहरे पानी में, नाइट-विजन चश्मे पहनकर और गीले कपड़ों में पहुंचे। लेकिन तभी एक छोटी नॉर्थ कोरियाई नाव अंधेरे से निकली। नाव से टॉर्च की रोशनी पानी पर पड़ रही थी। मिशन कमांडर से संपर्क संभव नहीं था और पकड़े जाने का खतरा था। सील टीम को लगा कि वे पकड़े गए हैं, इसलिए उन्होंने तुरंत गोली चला दी। कुछ ही सेकंड में नाव पर सवार सभी तीन लोग मारे गए। सील टीम को बाद में पता चला कि ये लोग निहत्थे नागरिक थे जो सीपियां इकट्ठा करने निकले थे।इस घटना के बाद टीम ने डिवाइस लगाए बिना ही वापस समुद्र में जाकर अपनी पनडुब्बी से संपर्क किया और भाग निकले। अमेरिकी सेना का कोई भी जवान इस घटना में घायल नहीं हुआ।यह मिशन आज तक गुप्त रखा गया था और न तो अमेरिका ने और न ही नॉर्थ कोरिया ने कभी इस पर कोई टिप्पणी की। इस मिशन के बारे में पहली बार खुलासा हुआ है। यह जानकारी दो दर्जन से अधिक सरकारी अधिकारियों, पूर्व सैन्य कर्मियों और ट्रम्प प्रशासन के सदस्यों के साक्षात्कार पर आधारित है। अमेरिकी अधिकारियों के मुताबिक मारे गए नागरिकों के शवों को पानी में डुबो दिया गया था ताकि उनका पता न चल सके।इस घटना के तुरंत बाद अमेरिका के जासूसी सैटेलाइट ने उस क्षेत्र में नॉर्थ कोरिया की सैन्य गतिविधियों में बढ़ोतरी देखी। लेकिन नॉर्थ कोरिया ने इन मौतों पर कोई सार्वजनिक बयान नहीं दिया। यह भी साफ नहीं हुआ कि नॉर्थ कोरिया को घटना का पता चला या नहीं। ट्रम्प प्रशासन ने इस मिशन के बारे में कांग्रेस के प्रमुख सदस्यों को भी सूचित नहीं किया था। मिशन की विफलता के बाद भी, 2019 के अंत में ट्रम्प और किम जोंग-उन के बीच परमाणु शिखर सम्मेलन हुआ लेकिन कोई समझौता नहीं हो सका। इसके बाद नॉर्थ कोरिया ने मिसाइल परीक्षण तेज कर दिए।

थरूर बोले- पीएम के नए लहजे का स्वागत,ट्रम्प के रिश्ते रीसेट करने की बात पर मोदी बोले थे- आपकी भावनाओं का सम्मान

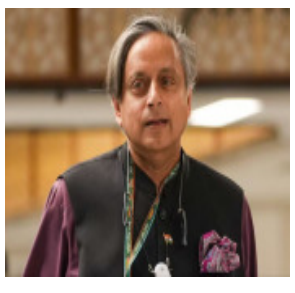

तिरुवनंतपुरम। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने भारत-अमेरिका में टैरिफ को लेकर बढ़ते विवाद के बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जवाब की सराहना की। थरूर ने रविवार को केरल के तिरुवनंतपुरम में न्यूज एजेंसी एएनआई से कहा- मैं इस नए लहजे का एहतियात के साथ स्वागत करता हूं। थरूर ने कहा- प्रधानमंत्री मोदी ने तुरंत प्रतिक्रिया दी और विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भी बुनियादी संबंधों के महत्व पर जोर दिया, जो एक व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी है। दोनों ने जो मैसेज दिया, हमारे लिए वह बहुत जरूरी है। मैं इस नए लहजे का स्वागत करता हूं। कांग्रेस सांसद ने आगे कहा- मुझे नहीं लगता कि हम 50फीसदी टैरिफ या राष्ट्रपति और उनके स्टाफ ने जो अपमान किया है, उसे पूरी तरह से भूल सकते हैं। ट्रम्प का स्वभाव काफी चंचल है, और उन्होंने जो कुछ कहा है, उससे हमारे देश को चोट पहुंचा है। देश का अपमान हुआ है। दरअसल, ट्रम्प ने 5 सितंबर को कहा था कि हमने भारत और रूस को चीन के हाथों खो दिया है। कुछ घंटे बाद उन्होंने पीएम मोदी को एक महान प्रधानमंत्री और अपना दोस्त बताया था। इस पर इश मोदी ने कहा कि वह ट्रम्प की भावनाओं की सराहना करते हैं।शशि थरूर ने रूस के साथ भारत के व्यापारिक संबंधों पर अमेरिका के कॉमर्स सेक्रेटरी हॉवर्ड लुटनिक के बयान पर भी प्रतिक्रिया दी। थरूर ने कहा- भारत ने बहुत ही परिपक्वता से काम लिया है। मुझे नहीं लगता कि हमें माफी मांगने की कोई जरूरत है। कांग्रेस सांसद ने कहा-अमेरिका को यह नहीं भूलना चाहिए कि वहां कि पिछली सरकारों ने ही वैश्विक तेल की कीमतों को स्थिर करने के लिए हमसे रूसी तेल खरीदने का आग्रह किया था। दूसरी बात, चीन हमसे ज्यादा रूसी तेल और गैस खरीदता है। थरूर ने कहा- तुर्की हमसे ज्यादा रूसी तेल और गैस खरीदता है। यूरोप तेल और गैस नहीं खरीदता, लेकिन वे अन्य रूसी सामान खरीदते हैं, इसलिए वे रूस के खजाने में हमसे ज्यादा अरबों डॉलर डाल रहे हैं। दरअसल, अमेरिकी कॉमर्स सेक्रेटरी हॉवर्ड लुटनिक ने 5 सितंबर को कहा था कि एक या दो महीने में, भारत बातचीत की मेज पर होगा और अमेरिका से माफी मांगेगा। भारत ट्रम्प के साथ समझौता करने की कोशिश करेगा।अमेरिकी राष्ट्रपति ने 5 सितंबर को सुबह करीब 6 बजे अपने सोशल मीडिया ट्रुथ पर लिखा था, 'ऐसा लगता है कि हमने भारत और रूस को चीन के हाथों खो दिया है। उम्मीद है उनका भविष्य अच्छा होगा।' इसके बाद, वे करीब 12 घंटों के अंदर ही बैकफुट पर चले गए। उन्होंने शाम 6-7 बजे के बीच व्हाइट हाउस में प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान एक सवाल पर कहा- 'मैं हमेशा मोदी का दोस्त रहूंगा। भारत के साथ संबंधों को रीसेट करने के लिए हमेशा तैयार हूं।' अगले दिन, 6 सितंबर को सुबह 9:45 बजे पीएम मोदी ने ट्रम्प को एक्स पर जवाब दिया। उन्होंने ट्रम्प के बयान को शेयर करते हुए लिखा- राष्ट्रपति ट्रम्प की भावनाओं और हमारे संबंधों को लेकर उनके विचारों की तहे दिल से सराहना करता हूं और उनका पूर्ण समर्थन करता हूं। भारत-अमेरिका के बीच एक पॉजिटिव और दूरदर्शी रणनीतिक साझेदारी है। पहले भी कई बार मोदी की तारीफ कर चुके थरूर - 23 जूनः थरूर ने लिखा- मोदी की ऊर्जा भारत के लिए संपत्ति थरूर ने द हिंदू में पब्लिश एक आर्टिकल में लिखा था कि मोदी की ऊर्जा, गतिशीलता और जुड़ने की इच्छा वैश्विक मंच पर भारत के लिए प्रमुख संपत्ति बनी हुई है, लेकिन उन्हें और ज्यादा सपोर्ट मिलना चाहिए। 8 मईः ऑपरेशन सिंदूर को लेकर केंद्र की तारीफ की थी सांसद शशि थरूर ने एक्स पर लिखा था कि ऑपरेशन सिंदूर पाकिस्तान और दुनिया के लिए मजबूत संदेश है। भारत ने 26 बेकसूर नागरिकों की मौत का बदला लेने के लिए सटीक कार्रवाई की।

पति चाहते हैं कि डिलीवरी के तुरंत बाद ही मैं कैटरीना कैफ जैसी स्लिम हो जाऊं, क्योंकि उन्हें मुझे छूने का मन नहीं करता

नयी दिल्ली। कभी-कभी मुझे लगता है कि ये सब सिर्फ किताबों की बातें हैं कि प्यार शरीर से

नहीं, बल्कि मन से होता है। असलियत तो यही है कि कोई भी सिर्फ मन देखकर प्यार नहीं करता, पहली नजर तो सबकी बस शरीर पर ही जाती है। तभी तो मेरे पति (आशीष), जो कभी मुझसे बेइंतहा प्यार करते थे, आज मेरा प्यार नहीं देख पाते। उनकी नजर अब सिर्फ मेरे बढ़े हुए वजन पर जाती है। जब से बेटी का जन्म हुआ है, हर रोज मुझे यही सुनने को मिलता है की 'कितनी मोटी हो गई हो, कुछ करती क्यों नहीं हो? कमर तो देखो कमरा ही हो गई है। तुम्हें देखकर तो छूने का मन भी नहीं करता।' लेकिन उन्हें कोई कैसे समझाए कि अचानक से वजन कम नहीं हो जाता। इसके लिए समय लगता है। फिर अगर आप तो यह उम्मीद करें कि डिलीवरी के सिर्फ दो महीने बाद ही मैं कैटरीना कैफ जैसी स्लिम दिखने लगूं, तो ये कैसे मुमकिन है? अब कौन सी महिला नहीं चाहती कि वो खूबसूरत और फिट दिखे? लेकिन सच्चाई ये है कि हर चीज हमारे कंट्रोल में नहीं होती, खासकर प्रेग्नेंसी के दौरान। इस फेज में ज्यादातर महिलाओं का वजन बढ़ जाता है। मेरा भी बढ़ गया था। क्योंकि गर्भावस्था में शरीर को बच्चे की ग्रोथ और सेहत के लिए अतिरिक्त पोषण की जरूरत होती है। इसके अलावा, अन्य फैक्टर, जैसे हार्मोनल चेंजेस, नींद की कमी और तनाव सहित अन्य फैक्टर भी मेरी समझ में शामिल होते हैं। मैं यह तो बिल्कुल नहीं कहती कि बच्चे की देखभाल में पिता का कोई रोल नहीं होता, लेकिन सच्चाई यही है कि ज्यादातर काम मां के हिस्से में ही आते हैं। मेरा भी यही हाल है। दिन - रात ब्रेस्टफीडिंग, रात-रात जागकर बच्चे को सुलाना। खाने-पीने का ध्यान नहीं। इन सभी वजहों से मैं खुद पर ध्यान ही नहीं दे पाती। वहीं, अब तो हर तीसरे-चौथे दिन आशीष मुझसे यही कहते हैं की 'कितनी मोटी हो गई हो, जल्दी से वजन कम करो। एक रात की बात है मुझसे कहने लगे की अगर जल्दी से तुम पुरानी वाली अनामिका नहीं बनी तो फिर मेरा अफेयर अगर कहीं और हो जाए, तो मुझसे मत कहना।' फिर तुरंत हंसते हुए जोड़ देते की 'अरे, मैं तो मजाक कर रहा था।' ये सुनते ही मेरे आंसू निकल गए की आखिर आशीष ऐसा कैसे बोल सकते हैं। बाद में उन्होंने मुझसे सॉरी भी कहा। लेक?न कहते हैं न कि? मजाक में ही वह बात कही जाती है, जो इंसान असलियत में कह नहीं पाता, आशीष के साथ भी कुछ ऐसा ही था। खैर जैसे- तैसे वो रात बीती और डेली रूटीन में बीजी हो गई।अब आशीष का हर दिन बस यही कमेंट सुनने को मिलता है कि मैं अच्छी नहीं दिखती, मेरे इतने भारी शरीर में तो उनके अंदर कोई फीलिंग ही नहीं जगती है। दूसरी औरतों को देखो वो मां बनने के बाद भी फिट हैं।आशीष की इस तरह की बातें अब अंदर ही अंदर मुझे तोड़ने लगी हैं। कई बार रातों को नींद तक नहीं आती। बेटी के पास चुपचाप लेटी रहती हूं और उनकी कही हुई बातें सोचकर चुपचाप रो पड़ती हूं। मन में बस यही ख्याल आता है कि जिस आदमी से मैंने सच्चे दिल से प्यार किया था, वही आज मेरे प्रेग्नेंसी के बाद बढ़े हुए वजन को बर्दाश्त नहीं कर पा रहा, तो ये जिन्दगी भर मेरा क्या साथ निभाएगा।मैं किस दर्द से गुजर रही हूं यह किसी से साझा नहीं की, लेकिन न जाने कैसे मेरी एक खास सहेली कुछ दिन पहले मुझसे मिलने घर आई और बातों-बातों में ही उसने भांप लिया कि मैं भीतर से परेशान हूं। उसने बार-बार पूछने की कोशिश की, मगर मैंने कुछ नहीं बताया। फिर भी उसने समझाते हुए कहा- 'देखो अनामिका, परेशानी कितनी भी बड़ी क्यों न हो, उसे अपनी सेहत पर हावी मत होने दो।दोस्त ने आगे कहा- अगर अनाम?का तुम्हारी हेल्थ बिगड़ गई तो उससे बुरा कुछ नहीं होगा। और अपनी बेटी को देखो, उसके लिए तुम्हें मजबूत रहना है।' उसकी यह बात मेरे दिल को छू गई। तभी से मैंने ठान लिया कि अब आशीष की बातों पर सोचकर अपना मन नहीं दुखाऊंगी। उल्टा मैं अपनी बेटी और अपनी सेहत पर ध्यान दूंगी।

फर्श में दफ्न बक्से में मिली ब्राजीलियन एक्टर की सड़ी लाश,नग्न थे, हाथ बंधे थे, मौत से पहले बनाए शारीरिक संबंध; 5 महीने से थे लापता

मुंबई। आज अनसुनी दास्तान में हम आप तक पहुंचा रहे हैं ब्राजीलियन एक्टर जेफरसन मेकाडो

की कहानी, जिनकी लाश जमीन से 6 फीट अंदर गड़े हुए एक बक्से में सड़ी-गली हालत में मिली थी। एक्टर 6 महीनों से लापता थे। उन्हें लापता मानकर शायद लोग इस मामले को नजरअंदाज कर देते, लेकिन एक्टर के पालतू कुत्तों के आवारा घूमने से जांच शुरू हुई और इस वीभत्स हत्याकांड का खुलासा हो सका। ब्राजील में जन्मे जेफरसन मेकाडो ने बतौर जर्नलिस्ट करियर की शुरुआत की थी। हालांकि हैंडसम लुक के चलते उन्हें ब्राजील के बड़े-बड़े टीवी शोज में काम मिलने लगा। एक्टिंग करियर के चलते वो ब्राजील के रियो डी जेनेरो शिफ्ट हो गए। यहां उनकी मुलाकात सूजा रोडरिग से हुई जो टीवी चैनल ग्लाबो के लिए काम करते थे। एक समय जब रोडरिग को पैसों की जरुरत पड़ी तो जेफरसन ने उन्हें एक बड़ा अमाउंट उधार दिया। इसे लौटाने के बदले रोडरिग ने उनसे वादा किया था कि वो अपने चैनल ग्लाबो के साथ उनका कॉन्ट्रैक्ट साइन करवा देंगे। दिसंबर 2022 में रोडरिग ने जेफरसन के घर से 20 किलोमीटर दूर एक घर किराए पर ले लिया। दोनों की दोस्ती गहरी थी और वो अक्सर एक-दूसरे के घर में समय बिताया करते थे। जेफरसन एक डॉग लवर थे। उन्हें सेटर ब्रीड के कुत्ते बेहद पसंद थे, यही वजह थी कि उन्होंने अपने घर में 8 सेटर डॉग पाल रखे थे। जेफरसन ने सुबह अपनी मां से आखिरी बार कॉल पर बात की। अगले दिन जब मां ने उन्हें कॉल किया तो कोई जवाब नहीं मिला। कुछ समय बाद उनका नंबर बंद आने लगा। कुछ दिनों बाद जेफरसन की तरफ से मां को एक टेक्स्ट मैसेज आया, जिसमें उन्होंने लिखा था- मेरा फोन टॉयलेट में गिर गया है। इसके बाद से ही जेफरसन अपनी मां और भाई से सिर्फ चैट पर बात करते थे। उन्होंने एक बातचीत में कहा कि वो काम के सिलसिले में जल्द ही साओ पाओलो शिफ्ट होने वाले हैं। ये सुनकर मां को हैरानी हुई। उन्होंने तुरंत पूछा कि अगर वो घर बदल रहे हैं तो उनके 8 पालतु कुत्तों का क्या होगा। इसके जवाब में जेफरसन ने रिप्लाई में लिखा- मैं अपने कुत्तों को दोस्त के पास छोड़ रहा हूं। मां को ये बात बिल्कुल हजम नहीं हुई। वो जानती थीं कि जेफरसन अपने कुत्तों से बेहद प्यार करते हैं और उन्हें यू हीं किसी दोस्त के पास नहीं छोड़ सकते। इसके बाद जेफरसन ने उन्हें मैसेज करना भी बंद कर दिया।27 जनवरी 2023 को जेफरसन के 8 कुत्ते रोड पर इधर-उधर घूमते नजर आए। पड़ोसियों ने तुरंत इसकी जानकारी एक एनजीओ को दी। कुत्तों पर लगी चिप के आधार पर पुष्टि हो सकी कि ये कुत्ते जेफरसन के हैं।डॉक्यूमेंट्स में दिया गया जेफरसन का नंबर बंद था तो एनजीओ ने डिटेल्स निकालकर उनके परिवार से संपर्क किया। परिवार ने जेफरसन को कई मैसेज भेजे, लेकिन अब कोई जवाब नहीं मिल रहा था। हालात संदिग्ध लगने पर परिवार ने तुरंत उनकी गुमशुदगी की शिकायत दर्ज करवाई। जांच के दौरान जब जेफरसन के पड़ोसियों और उनके दोस्तों से पूछताछ हुई तो हर किसी का मानना था कि जेफरसन अपने कुत्तों को खुद नहीं छोड़ सकते और वो बिना किसी को इन्फॉर्म किए, कभी इस तरह कहीं नहीं जाते। जब एक्टर का सोशल मीडिया अकाउंट खंगाला गया तो सामने आया कि मां से आखिरी बार कॉल पर बात करने के अगले दिन यानी 24 जनवरी को उन्होंने एक तस्वीर पोस्ट की थी, जिसके साथ कैप्शन में उन्होंने लिखा था, 'ऊ्रगुॆ।-ह्रीुॆॖ्ॆूल (फिर से ऊर्जा से भर गया। आभार)'इसके बाद 2 फरवरी को उन्होंने एक और पोस्ट शेयर की जिसमें लिखा था, 'I will start again. Gratitude!, (मैं दोबारा शुरू करूंगा, आभार)'इस पोस्ट पर कई कमेंट्स किए गए थे, जिनका जेफरसन ने जवाब भी दिया था, लेकिन कई लोगों को उनके रिप्लाई संदिग्ध लगे, क्योंकि उनमें मात्राओं, भाषा की काफी गलतियां थीं। आमतौर पर जेफरसन भाषा के पक्के थे और ऐसी गलतियां नहीं करते थे। मां ने भी यही कहा कि जेफरसन की तरफ से भेजे गए मैसेज अटपटे थे। जिस तरह वो मैसेज करते थे, उसमें बहुत गलतियां थीं और वो उस तरह के शब्द भी इस्तेमाल नहीं करते थे। जांच में सामने आया कि जेफरसन के दोस्त रोडरिग के पास उनकी कार की चाबियां, वॉलेट और दूसरा सामान भी था। जब परिवार ने उनसे घर की चाबियां होने पर सवाल किया तो रोडरिग ने कहा कि वो अक्सर यहां आते-जाते थे। यही वजह थी कि जेफरसन ने उन्हें खुद चाबियां दी हुई थीं। पुलिस ने जेफरसन मेकाडो के मोबाइल रिकॉर्ड खंगालने शुरू किए। जांच में सामने आया कि गुमशुदा होने वाले दिन 23 जनवरी को उन्होंने आखिरी कॉल रोडरिग और जींडर नाम के एक शख्स को किया था। जींडर एक कॉल बॉय था। दोनों के बीच अक्सर बातचीत होती रहती थी। लोकेशन की जांच की गई तो सामने आया कि 23 जनवरी को रोडरिग और जींडर दोनों ही जेफरसन के घर में मौजूद थे। पुलिस ने दोनों की तलाश शुरू कर दी। दोनों पर शक तब गहराया जब जांच में पाया गया कि दोनों ही फरार हैं। जब पुलिस ने जेफरसन की तस्वीर के साथ रोडरिग के घर के आसपास जांच की तो पड़ोसियों ने बेहद चौंकाने वाले खुलासे किए। उनके अनुसार, जेफरसन अक्सर यहां आया करते थे। पड़ोसियों ने बताया कि रोडरिग ने जेफरसन के गुमशुदा होने के ठीक बाद अपने घर में एक अटपटा कंस्ट्रक्शन का काम करवाया था। उन्होंने घर के बैकयार्ड में ऊंची सीमेंटेड दीवारें बनवाईं, जिसके बाद उन्होंने फ्लोर में भी कॉन्क्रीट बिछा दिया। जनवरी से लेकर मई तक जेफरसन को गुमशुदा हुए 3 महीने बीत चुके थे। पुलिस ने रोडरिग के घर का सर्च वारंट निकलवाया और 23 मई 2023 को उसके घर की तलाशी ली गई। पुलिस ने रोडरिग

के घर के बैकयार्ड की उस जगह खुदाई करना शुरू किया, जहां उसने कॉन्क्रीट बिछवाई थी। जांच टीम ने खुदाई शुरू की तो करीब 5 फीट तक कुछ नहीं मिला। एक समय तो पुलिस ने हार भी मान ली, लेकिन जैसे ही कुछ देर और खुदाई की गई, तो उन्हें लकड़ी का एक बक्सा मिला। करीब 6 लोगों की जद्दोजहद से उस भारी-भरकम बक्से को बाहर निकाला गया। जब उसे खोला गया तो मंजर भयावह था। बक्से में जेफरसन की नग्न लाश थी, जो बुरी तरह सड़ चुकी थी। उनके हाथ एक रस्सी की मदद से उनके सिर के पीछे की तरफ बंधे हुए थे और गले में टेलीफोन वायर लिपटा हुआ था। मानों इसी तार से उनका गला घोंटा गया हो। जेफरसन की लाश मिलने और बर्बरता से हुए हत्या की खबर फैलते ही पूरे ब्राजील में सनसनी मच गई। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के अनुसार, जेफरसन की हत्या गला घोंटकर की गई थी। उनके शरीर में नशीली दवा भी मिली थी। और साथ ही उनकी हत्या से पहले उन्होंने शारीरिक संबंध बनाए थे। जिस बक्से में जेफरसन की लाश मिली थी, वो उन्हीं का था। ठीक ऐसा ही एक बक्सा जेफरसन के घर में भी मिला था। जांच में वो बक्सा मिसिंग पाया गया था। अब पुलिस ने रोडरिग को मास्टरमाइंड मानते हुए तलाश और तेज कर दी। 1 जून 2023 को पब्लिक मिनिस्ट्री ऑफ रियो डी जेनेरो ने रोडरिग और जींडर के खिलाफ अरेस्ट वारंट निकाला। 2 जून को पुलिस को टिप मिली कि जींडर रियो डी जेनेरो के वेस्ट जोन के घर में है। पड़ोसियों की टिप की मदद से जींडर की गिरफ्तारी हुई। कॉल बॉय जींडर ने पुलिस पूछताछ में बताया कि 23 जून को वो, रोडरिग और मार्सेलो नाम का एक शख्स, जेफरसन के घर पहुंचे थे। वो एक वेबसाइट के लिए पोर्न वीडियो बना रहे थे। इस दौरान जेफरसन के हाथ बांधे गए थे, लेकिन शारीरिक संबंध बनाते हुए मार्सेलो के हाथ से जेफरसन की हत्या हो गई। इसके बाद सभी ने मिलकर उनकी लाश ठिकाने लगा दी। जब सख्ती की गई तो जींडर ने हत्या की पूरी गुत्थी खोलकर रख दी। उसके इकबाल-ए-जुर्म के अनुसार, रोडरिग ने ही जेफरसन को ड्रग दिया, उनके हाथ बांधे और फिर टेलीफोन वायर से गला घोंटकर उसकी हत्या कर दी। इसके बाद उसने जेफरसन के घर में रखे बक्से में उनकी लाश डाली और फिर अपने घर के बैकयार्ड में दफना दिया। जींडर के बयान के बाद रोडरिग को इंटरपोल वांटेड लिस्ट में शामिल कर दिया गया। आखिरकार 15 जून 2023 को सिटी सर्च में उसे गिरफ्तार कर लिया गया। वो साउथ जोन के एक हॉस्टल छिपा था, वाई-फाई नेटवर्क के जरिए उसकी लोकेशन ट्रेस की गई थी।अब पुलिस को इस हत्या का मोटिव जानना था। रोडरिग ने बताया कि कुछ समय पहले उन्होंने जेफरसन से 20000 ब्राजीलियन रियाल यानी करीब साढ़े 3 लाख रुपए लिए थे। इसके बदले उन्होंने जेफरसन से वादा किया था कि वो उन्हें काम दिलवाएंगे। समय के साथ जेफरसन को पता चल गया कि रोडरिग ने इसी तरह कई और लोगों को झांसा देकर पैसे लिए थे और काम दिलाने का वादा पूरी तरह झूठा था। लिहाजा वो उनसे रकम वापस मांग रहे थे और ऐसा न करने पर वो उसे एक्सपोज करने की धमकी देने लगे थे। यही वजह रही कि रोडरिग ने कॉल बॉय जींडर को पैसों का लालच देकर अपने प्लान में शामिल कर लिया। रोडरिग जानते थे कि जेफरसन समलैंगिंक हैं। ऐसे में उसके कहने पर जींडर ने उनसे नजदीकियां बढ़ाईं और अक्सर उनके घर आने-जाने लगा। उसने ही जेफरसन की हत्या से पहले उनके साथ संबंध बनाए थे।

आशा भोसले हुईं 92 कीं, भागकर शादी की,घरेलू हिंसा का शिकार हुईं, खुद को खत्म करना चाहा, सिंगिंग के साथ सफल रेस्तरां व्यवसायी भी बनीं

मुंबई। लीजेंड्री सिंगर आशा भोसले ने हर शैली के गीतों में अपनी मधुर आवाज का जादू बिखेरा। उनकी आवाज की मिठास ऐसी है कि आज भी लोगों के दिलों पर

राज करती है। अपने करियर में 12,000 से ज्यादा गीत गा चुकीं आशा भोसले के लिए संगीत का सफर इतना भी आसान नहीं था। 9 साल की उम्र में ही पिता का साया उठ गया। 16 साल की उम्र में जब आशा भोसले ने भाग कर परिवार वालों के खिलाफ बड़ी बहन लता मंगेशकर के सेक्रेटरी गणपतराव भोसले से शादी की, तब लता ने बहन से रिश्ता तोड़ लिया। शादी के बाद आशा भोसले को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा और वह घरेलू हिंसा का शिकार भी हुईं। इतना ही नहीं, जिंदगी से इतना निराश हो गई थीं कि खुद को खत्म करना चाहती थीं। बहरहाल, 14 से अधिक भाषाओं में गीत गा चुकीं आशा भोसले की आवाज में 92 साल की उम्र में भी वही खनक और जादू बरकरार है। जबकि एक समय ऐसा भी था जब इसी आवाज को खराब बताकर रिकॉर्डिंग स्टूडियो से उन्हें निकाल दिया गया था।आशा भोसले मशहूर थिएटर एक्टर और क्लासिकल सिंगर 'दीनानाथ मंगेशकर' की बेटी और स्वर सम्राज्ञी लता मंगेशकर

की छोटी बहन हैं। जब वो सिर्फ 9 साल की थीं तब उनके पिता का निधन हो गया था, जिसकी वजह से उन्होंने अपनी बहन लता मंगेशकर के साथ मिलकर परिवार को सपोर्ट करने के लिए सिंगिंग शुरू कर दी थी। आशा की खासियत यह है कि उन्होंने हर

तरह के गीतों में खुद को ढाला। चाहे वह रोमांटिक गाने हों, कैबरे सॉन्ग हो, गजल हो या फिर क्लासिकल संगीत। हर शैली में उन्होंने अपनी आवाज की अमिट छाप छोड़ी।आशा भोसले ने 16 साल की उम्र में 31 साल के गणपतराव भोसले से 1949 में भागकर शादी की थी। गणपतराव, लता मंगेशकर के सेक्रेटरी थे। लता मंगेशकर इस बात से बहुत दुखी हो गई थीं और उन्होंने अपनी छोटी बहन से नाता तोड़ लिया था। जब आशा भोसले पहले बच्चे की मां बनीं, इसके बाद मंगेशकर परिवार ने उन्हें अपनाया, मगर ये बात गणपतराव को पसंद नहीं आई। गणपतराव नहीं चाहते थे कि आशा अपने परिवार से रिश्ता रखें, खासकर लता मंगेशकर से। गणपतराव ने आशा को पैसों के लिए परेशान करना शुरू कर दिया था और लता मंगेशकर से मिलने से भी रोका करते थे। दोनों के बीच झगड़े होने लगे। गणपतराव, आशा के साथ मारपीट भी करने लगे थे।कविता छिब्बर को दिए इंटरव्यू में आशा ने कहा था- मैंने बहुत कम उम्र में अपने से 20 साल बड़े आदमी से शादी कर ली थी। ये एक लव मैरिज थी और लता दीदी ने मुझसे लंबे समय तक बात नहीं की थी। उन्हें ये रिश्ता मंजूर नहीं था। गणपतराव का परिवार बहुत रूढ़िवादी था और वे एक सिंगिंग स्टार को एक बहू के रूप में स्वीकार नहीं कर सकते थे। मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव किया गया और जब मैं अपने सबसे छोटे बेटे आनंद को जन्म देने वाली थी तो मुझे घर से निकलने के लिए कह दिया गया और मैं अपनी मां-बहनों के पास वापस लौट गई। फिर भी मैं किसी को दोष नहीं देती और मेरे मन में किसी के लिए कोई बुरा नहीं सोचती।दोनों के तीन बच्चे हुए। 2 बेटे और एक बेटी। हालांकि, शादी के 11 साल बाद यानी 1960 में दोनों अलग हो गए। आशा भोसले की बायोग्राफी 'Asha Bhosle: A Life In Music' में उनकी जिंदगी से जुड़े तमाम पहलुओं के बारे में लिखा है। इसमें इस बात का भी जिक्र है कि गणपतराव ने कई बार आशा के ऊपर हाथ उठाया था। किताब के मुताबिक, गणपतराव ने आशा पर तब भी हाथ उठाया था जब वो प्रेग्नेंट थीं। कई बार उन्हें अस्पताल में भर्ती तक होना पड़ा था। किताब में बताया गया है कि आशा के ससुराल वाले काफी संकुचित सोच के थे। उनके पति काफी शॉर्ट-टेम्पर्ड आदमी थे। शायद आशा भोसले को दर्द देने में उन्हें मजा आता था। वो एक सैडिस्ट इंसान थे, लेकिन बाहर किसी को इस बारे में पता नहीं था। किताब में आशा भोसले ने कहा है- मैंने अपना पूरा कर्तव्य निभाया, जैसे हिंदू धर्म में पत्नी निभाती है।किताब के मुताबिक जब आशा भोसले अपने तीसरे बच्चे के लिए प्रेग्नेंट थीं, तो उनके ससुराल वालों ने उन्हें घर से निकाल दिया था। वो अस्पताल में भर्ती थीं और यही वो वक्त था, जब आशा ने खद की जान लेने की कोशिश की।किताब में आशा ने बताया है- एक वक्त पर मुझे लगने लगा था कि मैं अपनी जान ले लूं। मैं बीमार थी, चार महीने की प्रेग्नेंट थी, अस्पताल में हालत ऐसी थी कि

लग रहा था कि यही नर्क है। मैं दिमागी तौर पर इतना टूट गई थी कि मैंने एक पूरी बॉटल स्लीपिंग पिल की खा ली, लेकिन मेरे बच्चे के लिए मेरा प्यार इतना बड़ा था कि उसने मुझे मरने नहीं दिया। मैं मरी नहीं और वापस आ गई। आशा ने इस रिश्ते से निकलने के कई सालों बाद मशहूर संगीतकार और सिंगर आर.डी बर्मन से शादी की थी।आशा भोसले ने दूसरी शादी संगीतकार आर डी बर्मन से 1980 में की। दोनों की पहली मुलाकात 1966 में फिल्म तीसरी मंजिल के गाने के दौरान हुई थी। इसके बाद आशा भोसले ने आर.डी. बर्मन की कई फिल्मों में गीत गाए। लगातार काम करते हुए दोनों की अच्छी दोस्ती हो गई और ये दोस्ती कब प्यार में बदल गई, पता ही नहीं चला। आर.डी. बर्मन ने एक दिन मौका पाते ही आशा के सामने शादी का प्रस्ताव रख दिया। आशा ने इसके लिए तुरंत हां भी कर दिया था, लेकिन बर्मन की मां ने शादी से साफ इनकार कर दिया। उन्होंने बर्मन से कहा कि अगर ये शादी होगी तो मेरी लाश पर ही होगी।

बर्मन की मां शादी से इसलिए इनकार कर रही थीं, क्योंकि आशा बर्मन से 6 साल बड़ी थीं और वो 3 बच्चों की मां थीं। तब बर्मन ने चुपचाप मां की बात मान ली। हालांकि, जब बर्मन के पिता एस.डी. बर्मन का निधन हुआ, तो मां की मानसिक स्थिति बिगड़ गई। ऐसे में मां की हालत में सुधार के लिए बर्मन ने आशा भोसले से 1980

में शादी कर ली थी। आशा भोसले ने 50 से 90 के दशक के बीच ओपी नैयर, आरडी बर्मन, खय्याम और बप्पी लहरी जैसे कई संगीतकारों के साथ काम किया। कई सदाबहार गाने गाए, लेकिन एक समय ऐसा था जब उनकी आवाज को रिजेक्ट करके रिकॉर्डिंग स्टूडियो से वापस भेज दिया गया था।आरजे अनमोल के साथ बातचीत के दौरान आशा भोसले ने करियर के शुरुआती दौर के बारे में बात करते हुए कहा था कि एक बार खराब आवाज बताकर किशोर कुमार के साथ रिकॉर्डिंग स्टूडियों से निकाल दिया गया था। आशा भोसले ने बताया था- 1947 की बात है। किशोर कुमार के साथ फेमस स्टूडियों में राज कपूर और नरगिस स्टारर फिल्म 'जान पहचान' के लिए एक गाना रिकॉर्ड करने गई थी। इस फिल्म के म्यूजिक डायरेक्टर खेमचंद प्रकाश थे। आजकल स्टूडियो एयर-कंडीशन्ड होते हैं और उनमें ढेर सारी मशीनें होती हैं। उन दिनों दो ट्रैक वाली मशीनें हुआ करती थीं। एक ट्रैक संगीतकार और दूसरा ट्रैक गायक के लिए होता था। माइक भी सिर्फ एक ही रहता था और गायकों को उसके सामने खड़े होकर गाना पड़ता था। मैंने और किशोर दा ने गाना शुरू किया।इसके बाद हम चले गए और और महालक्ष्मी रेलवे स्टेशन पहुंचे। हमारी शिफ्ट रात 8:00 बजे थी, लेकिन वहां से निकलने तक रात के 2:00 बज चुके थे। हम सीट पर बैठे रहे। किशोर दा नाराज थे। उन्हें दुख भी हुआ। अच्छा नहीं महसूस कर रहे थे। मैंने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा कि दादा आपकी जो आवाज है, उसको कोई रोक नहीं सकता। किशोर दा को भूख लगी थी, फिर हमने बटाटा वड़ा और एक छोटा कप चाय का ऑर्डर दिया। कुछ चाय हमारे ऊपर भी गिर गई। फिर हम दोनों चले गए।आशा भोसले की आवाज जितनी मदहोश करने वाली है, उतना ही उनके हाथ का बना खाना है। आशा भोसले खाना पकाने की बहुत शौकीन हैं, उनके हाथों के बने कढ़ाई गोश्त और बिरयानी के मुरीद कई सेलेब्स हैं। दिवंगत अभिनेता ऋषि कपूर को आशा भोसले के हाथों का बना खाना बेहद पसंद था। एक इंटरव्यू के दौरान आशा भोसले ने कहा था कि ऋषि कपूर को उनके हाथ का शामी कबाब, कड़ाई गोश्त और काली दाल बहुत पसंद थी।इंटरव्यू के दौरान आशा भोसले ने यह भी बताया था कि अगर सिंगर नहीं होती तो पक्का कुक होतीं। गायिकी के साथ-साथ आशा भोसले ने अपने कुकिंग के शौक को भी जिंदा रखा। खाना पकाने के प्यार ने आशा भोसले को एक सफल रेस्तरां व्यवसायी के रूप में भी पहचान दिलाई है। सबसे पहले उन्होंने दुबई में आशाज नाम से रेस्टोरेंट खोला। इसे खुले दो दशक बीत चुके हैं। आशा भोसले के रेस्टोरेंट में उत्तर पश्चिमी भारतीय व्यंजन परोसा जाता है। आशा भोसले का रेस्टोरेंट दुबई के अलावा कुवैत, अबुधाबी, दोहा और बहरीन जैसे कई देशों में है। इन रेस्टोरेंट का संचालन वाफी ग्रुप द्वारा किया जाता है जिसमें आशा भोसले की 20 प्रतिशत भागीदारी है। आशा भोसले ने इन रेस्तरां में खाना बनाने वाले शेफ्स को खुद छह महीने तक अच्छा खाना बनाने की ट्रेनिंग दी है। आशा भोसले ने अपने 90वें जन्मदिन पर दुबई में म्यूजिक कॉन्सर्ट में परफॉर्म किया था। इस कार्यक्रम को लेकर मुंबई में हुए प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान आशा भोसले ने कहा था- उम्र तो महज एक आंकड़ा होता है। उम्र तो बढ़ती है, लेकिन दिल हमेशा जवान रहता है। इस उम्र में अभी भी खड़ी हूं, गाना गा रही हूं और अपने बच्चों के लिए अभी भी खाना पकाती हूं।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डॉ. दीपक अरोरा

द्वारा रामा प्रिंटर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र) 211002 से मुद्रित एवं सी-41यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज से प्रकाशित।

संपादक/प्रकाशक डा.पुनीत अरोरा

मो.न.09415608710

RNINO.UPHIN/2015/63398

www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।